RNI-RAJBIL/2009/32418

Vol: 13, Issue: 2, July-Dec., 2021

Samvahini

Half Yearly Newsletter | Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

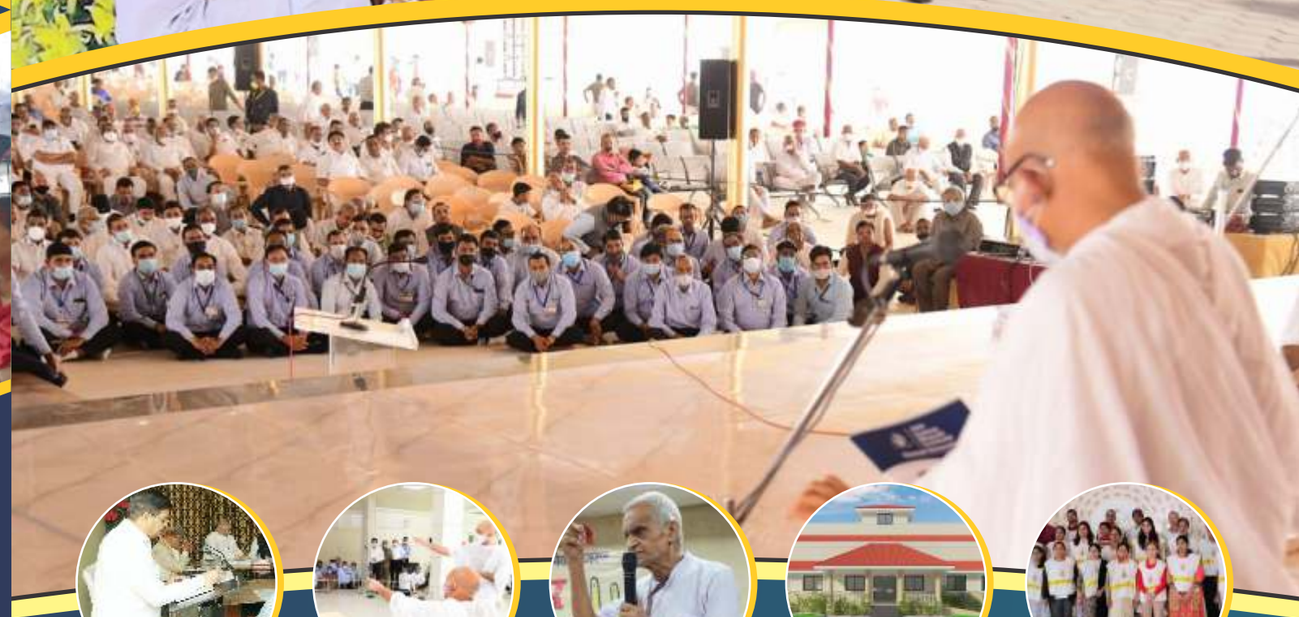

संस्थान को नैक से मिला 'ए' ग्रेड 06

भीलवाड़ा में संस्थान सदस्यों ने किये आचार्यश्री के दर्शन 10

पूर्व कुलपति रामजी सिंह को मिला पद्मश्री 12

आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल ऑफ नेचुरोपैथी एंड योग 24

7 Days Workshop on Preksha Meditation 28

www.jvbi.ac.in

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं की ओर से रमेश कुमार मेहता (कुलसचिव, जैन विश्वभारती संस्थान) द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। मुद्रणालय - तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर में मुद्रित। सम्पादक - प्रो. दामोदर शास्त्री

Jain Vishva Bharati Institute

(Deemed University)

Ladnun-341306, District Nagaur (Rajasthan) INDIA

A University Dedicated to Oriental Studies & Human Values

D.Lit. Ph.D. M.Phil. M.A./ M.Sc.

Jainology and Comparative Religion & Philosophy
Prakrit & Sanskrit
Nonviolence and Peace
Yoga and Science of Living

Regular and Distance Education

- M.S.W., English, M.Ed., B.Ed.
- B.A., B.Com, B.Sc.
- Integrated Courses (B.A.-B.Ed. & B.Sc.-B.Ed.)
- Various Diploma & Certificate Courses

- Value-based Education with Spiritual Ambience
- Lush Green Campus with Gurukul Environment
- Education for Women Empowerment and Entrepreneurship
- Student Exchange Programme with various National and International Institutions

Highlights :

- "Jaina Presidential Award" by Federation of Jaina Association in North America
- Asia Education Summit & Awards 2018 for achieving "Best Deemed University in Rajasthan"
- Ranked 10th in Top-25 Private/Deemed Universities in India-2019 by Higher Education Review
- Recognized in "The 20 Most Admired Universities in India 2017" by The Knowledge Review
- Smart Classrooms
- Rich Placements
- Air Conditioned Auditorium
- Wi-Fi Campus
- Hostel/Mess Facility
- More than 15 Labs

For more detail please visit - www.jvbi.ac.in or Contact Tel. 01581-226110, 224332, 226230

आचार्य महाश्रमण

अनुशास्ता
जैन विश्वभारती संस्थान

अनुशास्ता उवाच

आत्मविजेता

जैन वाङ्मय में दो शब्द हुए हैं- **जिणाणं जावयाणं।** ये शब्द अर्हतों के लिए बहुत उपयुक्त हैं, क्योंकि वे स्वयं जीतने वाले हैं और दूसरों को जिताने वाले हैं। जो व्यक्ति स्वयं कमजोर है, पराजित है, शक्तिहीन है, वह दूसरों को कैसे जिता पाएगा? समर्थ व्यक्ति ही जयी या जिताने वाला हो सकता है। हाँ, कुछ व्यक्ति कुछ कार्यों में स्वयं असमर्थ होते हैं, किन्तु दूसरों को अभिप्रेरणा देकर उनसे काम करवा सकते हैं। सामान्यतया समर्थ व्यक्ति ही दूसरों की सहायता कर सकता है। तीर्थंकर स्वयं जेता होते हैं, ज्ञानी होते हैं, इसलिए दूसरों को भी विजय का मार्ग दिखाने वाले और धर्मोपदेश प्रदान करने वाले होते हैं। किसी आदमी को जीतना आसान हो सकता है, किन्तु अपनी आत्मा को जीतना बहुत मुश्किल होता है। जैन शास्त्रों में तो यहां तक कहा गया है-

जो सहस्सं सहस्साण, संगामे दुज्जए जिणे।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ।।

दुर्जेय संग्राम में दस लाख योद्धाओं को जीतने की अपेक्षा जो व्यक्ति अपनी एक आत्मा को जीत लेता है, वह परम विजयी होता है।

तीर्थंकर अपनी आत्मा को जीतने वाले होते हैं। अपनी आत्मा को जीतने के लिए सुन्दर निर्देश दिया गया- **समया धम्ममुदाहरे मुणी।** मुनि ने समता में धर्म कहा है। जो व्यक्ति समता का अभ्यास करता है, वह स्वयं को जीतने की दिशा में, वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ सकता है। जिसके मन में राग-द्वेष की भावना है, विषमता है, चंचलता है, वह वीतरागता से विपरीत दिशा की ओर बढ़ने लगता है।

अनुक्रमणिका

संपादकीय

01. विश्व-स्तरीय श्रेष्ठता की ओर अग्रसर है जैन विश्वभारती संस्थान 05

विशेष (नैक मूल्यांकन)

01. डुअल मोड में मूल्यांकित होने वाला देश का प्रथम विश्वविद्यालय 06
02. संस्थान को 'ए' ग्रेड मिलने पर कार्यक्रम का आयोजन 09

विविध

01. शिक्षा के साथ संस्कारों का स्तर भी उच्चतर बने- आचार्यश्री महाश्रमण 10
02. तेरापंथ समाज का मानो भाग्य है जैन विश्वभारती संस्थान- आचार्य श्री महाश्रमण 11
03. पूर्व कुलपति को राष्ट्रपति ने दिया पद्म पुरस्कार 12
04. श्रीक्षेत्र श्रवणबेलगोला से भट्टारक चारूकीर्ति की शुभाशंसाएं 12
05. कुलपति प्रो. बी.आर. दूगड़ का चैन्नई में अभिनंदन 13
06. विश्व नागरिक की अवधारणा पर होगा नए शैक्षिक पाठ्यक्रमों का निर्माण 13
07. अब पढ़ाई के लिए भी बनेगा क्रेडिट बैंक 14
08. विश्वविद्यालय में प्रशासनिक व शैक्षणिक क्षमताओं में वृद्धि के सम्बन्ध में निर्देश 15
09. नागरिक कर्तव्यों को पूरा करना ही आजादी की सलामती 16
10. विश्वमैत्री दिवस मनाया 16
11. संविधान दिवस पर सामूहिक उद्देशिका का गठन 17
12. पांच दिवसीय एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ डवलपमेंट प्रोग्राम कार्यशाला आयोजित 18
13. डायबिटीज रिवर्सल प्रोग्राम पर व्याख्यान आयोजित 19

साईबर सुरक्षा कार्यक्रम

01. झूठे दिखावे से बेहतर है अपराधी की पहचान कर तिरस्कार करें- सीआई राजेन्द्र सिंह 20
02. बैंकिंग फ्रॉड से बचाव पर कार्यशाला आयोजित 21
03. विद्यार्थियों को साइबर क्राइम के प्रति जागरूक किया 21
04. साईबर सिक्योरिटी जागरुकता अभियान के तहत एक दिवसीय सेमिनार आयोजित 22
05. साईबर सुरक्षा क्विज आयोजित 22

सतर्कता एवं जागरुकता कार्यक्रम

01. ऑनलाइन भाषण प्रतियोगिता आयोजित 23
02. सतर्कता जागरुकता सप्ताह में शपथ ग्रहण कार्यक्रम 23
03. सतर्कता एवं जागरूकता रैली का आयोजन 23
04. राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 23

काल के कपाल पर होने जा रहा है एक नया हस्ताक्षर : आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल ऑफ नेचुरोपैथी एंड यांग 24

जैन गौरव के स्तम्भ 26

संस्थान में सौंदर्यवृद्धि व साज-सज्जा 27

जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग

01. 7 Days Workshop on Preksha Meditation 28
02. Lecture on Scientific Background of Jainism 28

प्राकृत एवं संस्कृत विभाग

01. सात दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय प्राकृत कार्यशाला 29
02. संस्कृत दिवस पर विशिष्ट व्याख्यान 29
03. मासिक व्याख्यानमाला में विद्वानों की प्रस्तुतियां 30
04. 'आचार्य महाप्रज्ञ का प्राकृत साहित्य: समाज को एक अनूठी देन' पर व्याख्यान 31

समाज कार्य विभाग

01. राष्ट्रीय समाज कार्य सप्ताह का आयोजन 32
02. विश्व एड्स दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम 32

अहिंसा एवं शांति विभाग

01. 'शांति शिक्षा की गुणवत्ता व राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' पर एक दिवसीय वेबिनार आयोजित 33
02. गांधी दर्शन की वैश्विक प्रासंगिकता पर व्याख्यान 33
03. अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस पर गांधी की प्रासंगिकता 34

योग एवं जीवन विज्ञान विभाग

01. राज्यस्तरीय योगासन में कांस्य पदक जीता 34
02. उड़ीसा में योगासन चैम्पियनशिप में हिस्सा 34

शिक्षा विभाग

01. सात दिवसीय नेशनल एफडीपी कार्यक्रम 35
02. 'वर्चुअल दुनिया के आधार हैं ईमेल और पीडीएफ' पर व्याख्यान 35
03. पांच दिवसीय एक्सचेंज प्रोग्राम का आयोजन 36
04. संकाय संवर्धन कार्यक्रम में व्याख्यान आयोजित 36
05. आचार्य महाश्रमण रचित पुस्तक 'आओ हम जीना सीखें' की समीक्षा 37
06. जन्माष्टमी पर कार्यक्रम आयोजित 37
07. शिक्षा और भक्ति के समन्वय पर व्याख्यान 38
08. शिक्षक दिवस/गुरु पूर्णिमा/गांधी जयंती/ हिन्दी दिवस पर कार्यक्रम 38

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय

01. आत्मरक्षार्थ मार्शल आर्ट के गुर सिखाने के लिए सात दिवसीय कार्यक्रम 39
02. हिन्दी दिवस पर राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित 39
03. रोजगार परामर्श केन्द्र में व्याख्यान 39
04. छात्राओं ने विभिन्न प्रोजेक्ट तैयार कर किया प्रस्तुतीकरण 40
05. आचार्य महाप्रज्ञ की 102वीं जयंती मनाई 40
06. मासिक व्याख्यानमाला 40
07. एक-दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर आयोजित 41
08. गूगल क्लासरूम की उपयोगिता और तकनीक पर व्याख्यान 41

आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम

01. सामूहिक राष्ट्रगान के साथ दौड़ व योग का आयोजन 42
02. एकल प्लास्टिक निषेध जागरूकता कार्यक्रम 42
03. ऑनलाईन निबंध प्रतियोगिता 42
04. बाल दिवस कार्यक्रम आयोजित 43
05. विश्व युवा कौशल दिवस/एनएसएस डे/राष्ट्रगान महोत्सव 43
06. बाल गंगाधर तिलक जयंती पर राष्ट्रीय कार्यक्रम 44

फिट इंडिया कार्यक्रम

01. जागरूकता रैली निकाली 44
02. खेल समिति की बैठक 44
03. फिट इंडिया फ्रीडम-रन कार्यक्रम में दौड़ आयोजित 44

नेशनल कैडेट कौर (NCC)

01. एनसीसी छात्राओं को राईफल, फायरिंग पोजिशन, रेडियो सेट का प्रशिक्षण 45
02. आयुषी बनी एनसीसी की लेफ्टिनेंट 45

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS)

01. स्वयंसेविकाओं ने श्रमदान करके की साफ-सफाई 46
02. साम्प्रदायिक सद्भाव दिवस पर भाषण प्रतियोगिता 46
03. एनएसएस की छात्राओं ने किया पौधारोपण 46

Samvahini

(अर्द्धवार्षिक समाचार पत्र)
जैन विश्वभारती संस्थान

वर्ष-13, अंक- 2
जुलाई-दिसम्बर, 2021

संरक्षक
प्रो. बच्छराज दूगड़
कुलपति

सम्पादक
प्रो. दामोदर शास्त्री
डॉ. आलोक कुमार जैन
अच्युतकान्त जैन

कम्प्यूटर एण्ड डिजाईन
पवन सैन

प्रकाशक
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ – 341306
नागौर, राजस्थान
दूरभाष : (01581) 226110 226230
E-mail : jvbiladnun@gmail.com
Website : www.jvbi.ac.in

सम्पादकीय

विश्व-स्तरीय श्रेष्ठता की ओर अग्रसर है जैन विश्वभारती संस्थान

यह जैन विश्वभारती संस्थान परिवार के विश्वास की जीत है कि जिस उद्देश्य से यह संस्थान संचालित किया जा रहा है और पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति का परचम फहराने का जो विश्वास बरसों से लेकर सतत कार्य किया जा रहा है, उस पर आखिर राष्ट्रीय प्रत्यायन एवं मूल्यांकन परिषद (नैक) की विशेषज्ञ टीम ने अपनी मोहर लगा दी। नैक की टीम ने अपने निरीक्षण के दौरान बहुत ही सूक्ष्मता से संस्थान की प्रत्येक गतिविधि का अवलोकन किया और उसे समझा और इसी से प्रभावित होकर वे यहां की गतिविधियों का कुछ रिकॉर्ड अपने साथ लेकर गए हैं, ताकि वैसी ही व्यवस्थाएं वे अपने वहां के संस्थान में भी लागू कर पाएं।

संस्थान को नैक ने 'ए' ग्रेड प्रदान किया है और यह सभी के लिए हर्ष की बात है। यह डुअल मोड पर मूल्यांकित होने वाला देश का पहला विश्वविद्यालय है और 'ए' ग्रेड प्राप्त करके यह देश के चुनिन्दा श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में सम्मिलित हो गया है। 'ए' ग्रेड के साथ यह भी महत्त्वपूर्ण है कि टीम ने अपनी रिपोर्ट में इस विश्वविद्यालय को जैनविद्या एवं योग के क्षेत्र में 'सेंटर फॉर एक्सीलेंस' के रूप में राष्ट्रीय केन्द्र की मान्यता देने की सिफारिश की है। इसी तरह पांडुलिपियों और जैन आगमों के ज्ञान भंडार के आधार पर विश्व-स्तर पर ज्ञान-समृद्धि भी करने में इस संस्थान को सक्षम बताया गया है। टीम यहां की स्वच्छता से विशेष प्रभावित हुई और यहां के इन्फ्रास्ट्रक्चर की सराहना की। सुविधाओं व व्यवस्थाओं के मामले में यह संस्थान श्रेष्ठ संस्थानों में शामिल है।

यह इस संस्थान की विशेषता है कि ठेठ ग्रामीण क्षेत्र में अवस्थित होने के बावजूद इसने अपना अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप बराबर बनाए रखा है और इसी कारण यहां विदेशी विद्यार्थी भी अध्ययन के लिए आते रहते हैं। अनेक अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों से एमओयू भी है। इसे भी टीम ने ध्यान में रखा है। माननीय कुलपति महोदय बच्छराज जी दूगड़ का मानना है कि संस्थान को 'ए' ग्रेड मिलना सुखद है और हर्षित करने वाला अवश्य है, लेकिन केवल इसी पर संतोष नहीं करके निरन्तर उन्नति की राह पर आगे बढते हुए संस्थान के प्रत्येक विभाग को यूजीसी मानकों पर खरा उतरते हुए प्रगति बरकरार रखनी है और गुणवत्तायुक्त शोध पर जोर देकर पांच वर्ष उपरान्त 'ए-प्लस' ग्रेड प्राप्त करने का लक्ष्य पूरा करना है। कुलपति इस संस्थान पर गुरुओं-अनुशास्ताओं की अनुकम्पा सदैव बनी रहने को ही इसकी सफलता का श्रेय देते हैं। उनका कहना है कि इसके स्वरूप व विकास में सदैव गुरुओं के इंगित को ध्यान में रखा जाता रहा है।

इस उपलब्धि के बाद संस्थान परिवार द्वारा अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शनार्थ व आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उनके भीलवाड़ा प्रवास स्थल पर जाने पर आचार्यश्री ने जैन विश्व भारती संस्थान को तेरापंथ समाज के भाग्य के रूप में रेखांकित किया। उन्होंने संस्थान में जैनत्व का प्रभाव सदैव बनाए रखने, शिक्षा की सुन्दर व्यवस्था के साथ संस्कार का उच्च स्तर रखने, अणुव्रतों का प्रभाव बनाए रखने तथा आध्यात्मिक व धार्मिक दृष्टि से विकसित बनाने की शुभाशंसा प्रदान की।

कुलपति महोदय का मानना है कि विश्वविद्यालय के समस्त पाठ्यक्रमों का पुनर्निर्माण करके उन्हें 'विश्व नागरिक' की अवधारणा के अनुरूप बनाया जाएगा तथा शिक्षा का अन्तर्राष्ट्रीयकरण किया जाएगा। आधुनिक तकनीक के प्रयोग के साथ यह कार्य किया जा रहा है। भारतीय संस्कृति और चिन्तन को सर्वोपरि रखते हुए समन्वय की नीति से यह कार्य किया जा रहा है। यहां स्थापित 'ऑफिस आफ इंटरनेशनल अफेयर्स' के माध्यम से लगातार भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का प्रचार-प्रसार किए जाने का कार्य भी सतत जारी है।

संस्थान के लिए यह वर्ष विशेष रहा। एक तरफ 'ए' ग्रेड मिलना और दूसरी तरफ यहां पूर्व में कुलपति रहे डॉ. रामजी सिंह को राष्ट्रपति द्वारा 'पद्मश्री' पुरस्कार प्रदान करना संस्थान के लिए गौरव की बात है। चैन्नई में साहूकारपेट में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा ट्रस्ट बोर्ड द्वारा कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ का समारोहपूर्वक अभिनन्दन किया गया। कर्नाटक के श्रीक्षेत्र श्रवणबेलगोला के पीठाधीश स्वस्तिश्री भट्टारक चारूकीर्ति की विशेष शुभाशंसाएं लेकर उनका प्रतिनिधि मंडल यहां आया और यहां की व्यवस्थाओं, पाठ्यक्रमों, विशेषताओं आदि की पूरी जानकारी प्राप्त की तथा बहुत प्रभावित हुए।

संस्थान अपने ध्येय वाक्य **'णाणस्स सारमायारो'** को सार्थक बनाने की ओर निरन्तर अग्रसर होते हुए वैश्विक स्तर पर मान-मर्यादाओं और मूल्यों के प्रसारण में अग्रसर है।

– प्रो. दामोदर शास्त्री

संस्थान को NAAC से मिला 'A' ग्रेड

नैक टीम ने की अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ केन्द्र बनाने की सिफारिश

डुअल मोड में मूल्यांकित होने वाला देश का प्रथम विश्वविद्यालय

भारत सरकार द्वारा देश के उच्च शिक्षण संस्थानों के मूल्यांकन के लिए गठित 'राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायान परिषद (नैक)' की पांच सदस्यीय टीम ने यहां 23-25 अक्टूबर को जैन विश्व भारती संस्थान विश्वविद्यालय का दौरा करके निरीक्षण किया। निरीक्षण व मूल्यांकन के बाद नैक ने जैन विश्वभारती संस्थान को 'ए' ग्रेड प्रदान किया है। 'ए-ग्रेड' प्राप्त होने के बाद यह संस्थान देश के श्रेष्ठ 'ए' ग्रेड स्तर के चुनिन्दा विश्वविद्यालयों में सम्मिलित हो गया है। जैन विश्वभारती संस्थान डुअल मोड में मूल्यांकित होने वाला देश का प्रथम विश्वविद्यालय है। संस्थान के नैक एक्रीडिशन में ए-ग्रेड प्राप्त होने पर यहां संस्थान में खुशियां मनाई गईं।

राष्ट्रीय केन्द्र 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' बनें

कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने बताया कि नैक टीम ने अपनी मूल्यांकन रिपोर्ट में संस्थान के बारे में अपनी राय देते हुए लिखा है- जैन विद्या एवं योग के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तरीय 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' केन्द्र के रूप में जैन विश्वभारती संस्थान को मान्यता दिए जाने की आवश्यकता है। संस्थान प्राचीन भारतीय पाण्डुलिपियों का अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ केन्द्र बनने की पूर्ण अर्हता रखता है। संस्थान जैन आगमों पर आधारित पांडुलिपियों में निहित प्रमुख ज्ञान-भंडार का पता लगाकर वैश्विक जगत् को समृद्ध कर सकता है। नैक रिपोर्ट के अनुसार इस संस्थान का विजन, मिशन, नीतियां और व्यावहारिक प्रक्रियाएं भारतीय मूल्यों, संस्कृति तथा अनुशास्ताओं की परम्पराओं पर आधारित है। संस्थान के पाठ्यक्रमों को शिक्षा के माध्यम से समग्र मानवता के विकास के लिए समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप विकसित किया गया है। अहिंसा और शांति के क्षेत्र में विशिष्ट शिक्षण, अनुसंधान और प्रचार-प्रसार इस संस्थान के विशिष्ट पदचिह्नों को निर्मित करता है। संस्थान सूचना प्रौद्योगिकी के उच्च स्तर के अनुप्रयोगों के साथ आधुनिक और पारम्परिक शिक्षा प्रणाली का एक आदर्श मिश्रण है।

दूरदृष्टि व नवाचारों से आया बदलाव

कुलसचिव मेहता के अनुसार यह सब उपलब्धि कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ द्वारा दूरदृष्टिपूर्ण निर्णयों एवं विकास के लिए नवीन आयाम स्थापित करने से हासिल हो पाई है। उनके प्रयासों के कारण ही आज यह विश्वविद्यालय पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर बन पाया है। उन्होंने बताया कि कुलपति प्रो. दूगड़ ने एक अभिभावक के रूप में पूरे स्टाफ और विद्यार्थी वर्ग के साथ अपना सुसंगत रवैया व सम्बन्ध बनाए रखे और उनकी अपनी प्रगति के लिए उनमें रुचि का जागरण किया। इसके लिए उनके द्वारा शुरु किए गए नवाचार कहीं अन्यत्र नहीं मिल सकते। यहां विदेशों के विश्वविद्यालयों से अध्ययन के लिए काफी विद्यार्थी आते रहे हैं। वहां के विश्वविद्यालयों से इसका एमओयू है। विश्वविद्यालय अपने अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप को बनाए रखकर यहां मरूभूमि क्षेत्र में शिक्षा की अलख जगाए हुए है, जो विशेष बात है।

योग के विद्यार्थियों की कुशलता, क्षमता व प्रतिभा सराहनीय- प्रो. दुबे

सांस्कृतिक संध्या में शानदार रहा योग का प्रदर्शन, नैक टीम ने की प्रशंसा

संस्थान के महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में 23 अक्टूबर को आयोजित सांस्कृतिक संध्या में मुख्य अतिथि नैक पीयर टीम के अध्यक्ष प्रो. योगेश चन्द्र दुबे ने कहा कि उनका यहां का कार्यक्रम रोचक और समीचीन रहा। उन्होंने इस विश्वविद्यालय की प्रत्येक गतिविधि का निरीक्षण-परीक्षण किया। योग विभाग के विद्यार्थियों का प्रदर्शन उनके लिए विशेष रहा, जिसमें क्षमता, कुशलता व प्रतिभा का परिचय मिल रहा है। निस्संदेह यहां के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम की संरचना सराहनीय है। श्रेष्ठ प्रस्तुतियों के साथ यह कार्यक्रम अंदर तक आह्लादित करने वाला है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में सपना एवं समूह ने मराठी नृत्य की शानदार प्रस्तुति दी, तो प्रिया एवं समूह ने कालबेलिया नृत्य प्रस्तुत किया। नेहा मिश्रा का सत्यं शिवम् सुन्दरम् पर शास्त्रीय नृत्य सराहनीय रहा। नेहा पारीक की णमोकार मंत्र पर आधारित प्रस्तुति को भी सभी ने सराहा। योग एवं जीवन विज्ञान विभाग की छात्राओं ने योग के विभिन्न आसनों का सामूहिक प्रदर्शन करके सबको अचम्भित कर दिया। वहीं विद्यार्थी सुरेश ने एकल योगाभ्यास के करतबों से सबको मोहित किया। मुमुक्षु बहिनों की नाट्य-प्रस्तुति ने भी सभी दर्शकों को दाद देने पर मजबूर किया। कार्यक्रम में मिष्टी जैन की नृत्य प्रस्तुति ने सबको मोहा। राजस्थानी घूमर नृत्य, गुजराती नृत्य, संस्कृत गायन, रिया जैन के राजस्थानी गीत 'केशरिया बालम आओ नीं पधारो म्हारे देश' काफी प्रभावी रहे। कार्यक्रम का प्रारम्भ बांसुरी वादन आराधना और सरस्वती वंदना के प्रस्तुतीकरण से किया गया।

कार्यक्रम में डॉ. अभिजीत जोशी, प्रो. आनन्द कन्नास्वामी, प्रो. संतोष नांगल, प्रो. मुरलीकृष्ण पानातुला विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। सभी अतिथियों का स्वागत-सम्मान कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, मैनेजिंग कमेटी के सदस्य अमरचंद खटेड़, पूर्व अध्यक्ष डॉ. धर्मचंद लूंकड़, सहमंत्री जीवनमल मालू व प्रमोद बैद ने किया। कार्यक्रम में रजिस्ट्रार रमेश कुमार मेहता, प्रो. बी.एल. जैन, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. अनिल धर, डॉ. जुगलकिशोर दाधीच, प्रो. जगतराम भट्टाचार्य, प्रो. आशुतोष प्रधान, डॉ. अमिता जैन आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. वंदना कुंडलिया व डॉ. युवराज सिंह खंगारोत ने किया।

संस्थान को 'ए' ग्रेड मिलने पर कार्यक्रम का आयोजन

मूल्य-आधारित शिक्षा की नीतिगत विशेषता रखता है जैविभा विश्वविद्यालय- कुलपति

संस्थान को 'राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) द्वारा 'ए' ग्रेड प्रदान किए जाने पर यहां सेमिनार हॉल में एक कार्यक्रम का आयोजन 9 नवम्बर को किया गया, जिसमें कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने सभी शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक कार्मिकों को बधाई देते हुए बताया कि यह सबकी मेहनत और सामूहिक प्रयासों से हुआ है। उन्होंने इस संस्थान को 'ए-प्लस' ग्रेड मिलने की उम्मीद जताते हुए बताया कि हमें 'ए' ग्रेड मिलने पर ही संतोष नहीं करना है और लगातार प्रयासों और सुधारों पर ध्यान देकर अगली बार 'ए-प्लस' ग्रेड प्राप्त करनी है। सभी संस्थान सदस्यों में परस्पर जुड़ाव बना रहने पर ही परिणाम की उत्कृष्टता बनती है। उन्होंने कहा कि 'ए' ग्रेड मिलने पर भी सबको हर्ष हुआ है और जश्न का माहौल बना है, लेकिन इससे भी आगे निकलने की उम्मीद हमें निरन्तर रखनी होगी। संस्थान के इन्फ्रास्ट्रक्चर और स्वच्छता ने यहां आई नैक की टीम को सबसे अधिक आकर्षित किया। हमारे सभी प्रस्तुतीकरण भी श्रेष्ठ थे और लाईब्रेरी और पांडुलिपि संरक्षण कार्य की टीम द्वारा अत्यधिक प्रशंसा की गई। टीम के सदस्यों ने उनके रिकॉर्डिंग तक लिए व उन्हें अपने विश्वविद्यालयों के लिए साथ ले गए और उन्होंने अपने व्यक्तियों को प्रशिक्षण के लिए भी यहां भिजवाने की बात कही है।

ए-ग्रेड प्राप्त डुअल मोड वाला देश का पहला विश्वविद्यालय

दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने नैक टीम के सदस्यों की भावनाओं के बारे में बताया तथा कहा कि जैन विश्वभारती संस्थान डुअल मोड में मूल्यांकित होने वाला देश का प्रथम विश्वविद्यालय है, जिसे 'ए' ग्रेड प्राप्त हुआ है। यह संस्थान देश के श्रेष्ठ 'ए' ग्रेड स्तर के चुनिन्दा विश्वविद्यालयों में सम्मिलित हो चुका है। उन्होंने बताया कि नैक टीम भी यह मानती है कि इस संस्थान को जैन विद्या एवं योग के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तरीय 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' केन्द्र के रूप में मान्यता दिए जाने की आवश्यकता है। इस संस्थान को उन्होंने प्राचीन भारतीय पाण्डुलिपियों का अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ केन्द्र बनने की पूर्ण अर्हता सम्पन्न माना है और कहा है कि संस्थान जैन आगमों पर आधारित पांडुलिपियों में निहित प्रमुख ज्ञान-भंडार का पता लगाकर वैश्विक जगत् को समृद्ध कर सकता है।

गुणवत्तापरक शोध पर ध्यान दें

प्रो. नलिन के. शास्त्री ने कहा कि विश्वविद्यालय की इस उपलब्धि के बाद हमें अगले पांच साल के लिए निश्चिंत होकर बैठ नहीं जाना है, बल्कि यूजीसी के मानक पर अपने-अपने विभागों को सतत गति देते रहना है। हमें पांचवर्षीय परियोजना पर अपना ध्यान केन्द्रित करके अनवरत क्रियाशील व गतिशील रहना है। हमें गुणवत्तापरक शोध पर विशेष ध्यान देना होगा तथा पांच साल बाद 'ए-प्लस' ग्रेड हासिल करनी है। कार्यक्रम को प्रो. दामोदर शास्त्री, प्रो. अनिल धर, प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डॉ. पुष्पा मिश्रा, श्वेता खटेड़, प्रमोद ओला, दीपाराम खोजा आदि ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम में संस्थान के शैक्षणिक च गैर शैक्षणिक सभी कर्मचारीगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. युवराजसिंह खंगारोत ने किया।

शिक्षा के साथ संस्कारों का स्तर भी उच्चतर बने- आचार्यश्री महाश्रमण

कुलपति सहित संस्थान के कार्मिक-दल ने किए भीलवाड़ा में आचार्यश्री महाश्रमण के दर्शन

तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें आचार्य एवं जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय के अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा है कि यह विश्वविद्यालय उपकार के लिए बनाया हुआ गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी की परिकल्पना की पूर्ति है। जैन शासन के विभिन्न संतों से मिलना होता है, तो वे स्वयं बताते हैं कि उन्होंने एम.ए. या पीएच.डी. जैन विश्वभारती संस्थान से किया है। इस संस्थान द्वारा हमें जैनत्व का प्रभाव भी देखने को मिलता है, जो सदैव बना रहना चाहिए। उन्होंने भीलवाड़ा में आए 10 नवम्बर को विश्वविद्यालय के कुलपति, कुलसचिव एवं स्टाफ से भेंट में कुलपति से संस्थान की पूर्ण जानकारी लेने के बाद अपने सम्बोधन में संस्थान द्वारा नैक से 'ए' ग्रेड मिलने को विशेष बात बताते हुए कहा कि शिक्षा की व्यवस्था और सुन्दर होनी चाहिए तथा शिक्षा के साथ संस्कार का स्तर भी उच्चतर रहना चाहिए। साथ ही अणुव्रतों का प्रभाव भी बना रहे। उन्होंने जैविभा विश्वविद्यालय में आध्यात्मिक, धार्मिक व शैक्षिक संदर्भों में अच्छा काम और विकास बना रहने की शुभाशंसा व्यक्त की।

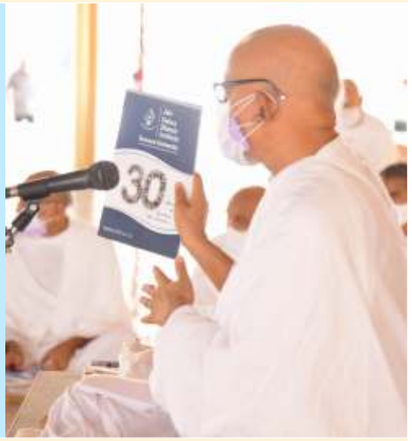

नैक की टीम ने माना आदर्श संस्थान

कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अपने सम्बोधन में कहा कि जिस स्थान पर कभी जंगल था और पशु-पक्षी, सर्पादि विचरण करते थे, उस स्थान पर यह विश्वविद्यालय विकास के स्वरूप में स्थित है, जिसने पर्यावरण एवं पशु-पक्षियों के अस्तित्व के साथ उच्च शिक्षा के कार्य को संभाल रखा है। उन्होंने आचार्यश्री को बताया कि राष्ट्रीय प्रत्यायन एवं मूल्यांकन परिषद नैक ने संस्थान को 'ए' श्रेणी प्रदान की है, जो उपलब्धि है और समाज को गौरवान्वित करने वाली है। यह संस्थान देश के उन विश्वविद्यालयों में खड़ा हो गया है, जिन्हें 'ए' ग्रेड प्राप्त है। उन्होंने इसे गुरुओं-अनुशास्ताओं की अनुकम्पा के रूप में लेते हुए कहा कि वे अपने

ऑफिस में लगे आचार्य तुलसी, महाप्रज्ञ एवं आचार्य महाश्रमण की संयुक्त तस्वीर को नमन करके प्रतिदिन प्रवेश के साथ ही उनसे संस्थान को आगे बढाने की अर्चना करते हैं। कुलपति ने नैक टीम की रिपोर्ट के कतिपय अंशों को प्रस्तुत करते हुए बताया कि उन्होंने अपने लिए भी इस संस्थान को आदर्श बताते हुए वे यहां के डॉक्युमेंटेशन की प्रतियां लेकर गए हैं, ताकि अपने संस्थान में भी उन्हें लागू किया जा सके और उनके अनुरूप परिवर्तन लाया जा सके। उन्होंने इसे प्राचीन व आधुनिक शिक्षा के अद्भुत समन्वय का संस्थान माना और नैतिक शिक्षा के प्रसार के लिए देश के अग्रणी संस्थान के रूप में स्वीकार किया। इस संस्थान को उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय मापदंडों में जैनविद्याओं के प्रसार, प्राकृत भाषा, योग व जीवन विज्ञान, अहिंसा एवं शांति के प्रसार एवं भारतीय मूल्यों के प्रसार के लिए उत्कृष्ट माना है।

महिला शिक्षा को दिया भरपूर बढावा

इस अवसर पर प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा ने आचार्य तुलसी के स्वप्न की साकार अभिव्यक्ति के रूप में जैविभा संस्थान को बताते हुए कहा कि वे बहुत सारी ऐसी बहिनों को जानती हैं, जिन्होंने मामूली पढी हुई होने और यहां तक कि दसवीं उतीर्ण भी नहीं होने के बावजूद इस संस्थान से शिक्षा ग्रहण की और एम.ए. तथा पीएच.डी. तक कर ली। यह संस्थान समाज के लिए गौरव की बात है। आचार्य तुलसी ने 1992 में यहां आने पर कहा था कि यहां के शिक्षक वेतन के लिए नहीं चेतन के लिए काम करें और आज हम देख रहे हैं कि यहां कुलपति से लेकर चतुर्थ श्रेणी तक के कर्मचारी भी समर्पित भाव से नैतिक मूल्यों के लिए काम कर रहे हैं। इस कार्यक्रम में उन्होंने आचार्यश्री महाश्रमण से छापर के पश्चात् अपना आगामी चातुर्मास लाडनूं फरमाने का निवेदन भी किया, ताकि तेरापंथ की राजधानी लाडनूं और जैन विश्वभारती संस्थान का और विकास हो सके। इस अवसर पर जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष डॉ. धर्मचंद लूंकड़, रमेश सी. बोहरा, कुलसचिव रमेश कुमार मेहता, डॉ. जुगल दाधीच, दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, उपनिदेशक पंकज भटनागर, वित्ताधिकारी राकेश कुमार जैन, प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. युवराज सिंह खांगारोत, डॉ. भाबाग्रही प्रधान, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डॉ. अशोक भास्कर, मोहन सियोल, दीपाराम खोजा, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. रविन्द्रसिंह राठौड़, डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज, डॉ. विनोद कुमार सैनी, आयुषी शर्मा, अभिषेक चारण, प्रकाश गिड़िया, अजयपाल सिंह भाटी, डॉ. वीरेन्द्र भाटी मंगल, राजेन्द्र बागड़ी, शरद जैन आदि उपस्थित रहे।

तेरापंथ समाज का मानो भाग्य है जैन विश्वभारती संस्थान- आचार्यश्री महाश्रमण

जैविभा विश्वविद्यालय के कुलपति सहित संस्थान के समस्त स्टाफ ने की आचार्यश्री महाश्रमण से विशेष भेंट

संस्थान के अनुशास्ता एवं तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा है कि लाडनूं का जैन विश्वभारती संस्थान एक अलग तरह का अनूठा विश्वविद्यालय है। यह तेरापंथ समाज के लिए तो मानो भाग्य ही बन चुका है। इस संस्थान के सभी शिक्षकों, अधिकारियों एवं विद्यार्थियों के भीतर संस्कार नजर आने चाहिए। आचरण का प्रभाव विद्यार्थी और समाज पर पड़ता है। 10 नवम्बर को विश्व-विद्यालय के अधिकारियों व कार्मिकों से विशेष भेंट में उन्होंने विश्वविद्यालय को 'ए' श्रेणी दिए जाने को शुभ बताया तथा शास्त्रों में कहा गया है- अहंसविद्या चरणं पमोखए। यानि मोक्ष के लिए विद्या और आचरण का अनुशीलन करें। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ज्ञान और आचरण दोनों का महत्त्व रहता है। ज्ञान के बिना आचरण अधूरा रहता है और आचरण के बिना ज्ञान भी अधूरा होता है। ज्ञान के साथ-साथ आचरण की साधना बहुत जरूरी है।

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अपने सम्बोधन में बताया कि जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय अब आत्मनिर्भर बन गया है। इसके स्वरूप और विकास के लिए गुरु के इंगित को पूरी तरह से ध्यान में रखा जाएगा। दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने नैक टीम के सदस्यों द्वारा की गई टिप्पणियों का उल्लेख किया तथा कहा कि टीम ने इस विश्वविद्यालय की स्वच्छता को पूरा ध्यान में रखा और इसे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के स्वच्छता अभियान का साकार स्वरूप बताया। साथ ही इसकी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की विशेषताओं, जैन विद्या, प्राकृत, जीवन विज्ञान आदि विशेष विषयों का विशिष्ट केन्द्र होने की बात कही। प्रो. त्रिपाठी ने इस अवसर पर 'जिन्दगी की असली उड़ान अभी बाकी है' कविता भी पढी, जिसमें उन्होंने ए-ग्रेड मिलने में ही संतोष करने के बजाए और आगे बढने के संकल्प को दर्शाया। प्रो. नलिन के. शास्त्री ने नैक के मूल्यांकन में मिली सफलता के लिए सभी के संगठित प्रयास को श्रेय प्रदान किया और कहा कि यहां ज्ञानयज्ञ में सबकी आहुतियां होने से ही सब अनुकूल होता जाता है। बैठक में प्रो. रेखा तिवाड़ी, वित्ताधिकारी आर.के. जैन, डॉ. जुगल किशोर दाधीच आदि ने भी अपना मंतव्य व्यक्त किया। विशेष दर्शनलाभ और विमर्श के लिए आयोजित इस बैठक में सभी अधिकारीगण एवं कार्मिकगण उपस्थित थे।

पूर्व कुलपति को राष्ट्रपति ने दिया पद्मश्री पुरस्कार

गांधीवाद के प्रखर प्रचारक सर्वोदय विचारक डॉ. रामजी सिंह को राष्ट्रपति द्वारा पद्मश्री

संस्थान के पूर्व कुलपति डॉ. रामजी सिंह को समाजसेवा के लिये राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द द्वारा पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किये जाने पर यहां हर्ष जताया गया और उनकी स्वस्थता पूर्वक दीर्घायु के लिये कामनायें व्यक्त की गईं। प्रो. रामजी सिंह को 8 नवम्बर को राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में पद्मश्री पुरस्कार प्रदान करके राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने सम्मानित किया था। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचारों को देश-विदेश में फैलाने वाले सर्वोदय विचारक 94 वर्षीय डॉ. रामजी सिंह वर्ष 1992 से 94 तक जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के कुलपति रहे थे। उन्होंने 1993 में शिकागो में आयोजित हुए विश्व धर्म संसद में जैनिज्म पर भारत का प्रतिनिधित्व किया था।

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने बताया कि प्रो. रामजी सिंह सादगी की प्रतिमूर्ति हैं। उन्होंने अथक प्रयास करके संपूर्ण भारत में गांधी विचार की पढ़ाई शुरु कराई। वे बिहार के भागलपुर संसदीय क्षेत्र से सांसद भी रहे। देश के पहले गांधी विचार विभाग की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले और विभाग के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. रामजी सिंह रहे। मूल रूप से बिहार के भागलपुर के रहने वाले प्रो. रामजी सिंह के प्रयासों से देश के पहले गांधी विचार विभाग का उद्घाटन दो अक्टूबर 1980 को भागलपुर विश्वविद्यालय में किया गया था। तब यह देश का इकलौता विभाग था, जहां गांधी विचार की पढ़ाई शुरू हुई थी। इन्होंने इसके लिये अपनी महत्त्वपूर्ण व दुर्लभ कही जाने वाली 5 हजार पुस्तकें दान कर दी थीं। आज 25 विश्वविद्यालयों में गांधी विचार विभाग की पढ़ाई हो रही है। पद्मश्री पुरस्कार के बारे में उनका कहना था कि यह पुरस्कार उन्हें नहीं, बल्कि समाज के लिए काम करने वाले लोगों को समर्पित है।

श्रीक्षेत्र श्रवणबेलगोला से भट्टारक चारूकीर्ति की शुभाशंसाएं

प्रतिनिधियों ने जैविभा विश्वविद्यालय की जानकारी ली और अवलोकन कर व्यवस्थाएं सराही

कर्नाटक के श्रीक्षेत्र श्रवणबेलगोला के पीठाधीश स्वस्तिश्री भट्टारक चारूकीर्ति की विशेष शुभाशंसाएं लेकर 6 सितम्बर को संस्थान में आए श्रीक्षेत्र के प्रबंधन मंडल से सम्बद्ध एव बैंगलुरू के उद्योगपति अशोक सेठी ने विश्वविद्यालय की समस्त कार्य-व्यवस्थाओं का गहराई से अवलोकन किया तथा श्रीक्षेत्र में विकसित हो रहे प्राकृत विश्वविद्यालय के बारे में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ से चर्चा की। उन्होंने भट्टारक चारूकीर्ति द्वारा श्रीक्षेत्र के विकास के लिए उठाए गए अभिनव कदमों की जानकारी दी।

कुलपति प्रो. दूगड़ के साथ प्रो. नलिन के. शास्त्री व प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने उन्हें जैविभा विश्वविद्यालय की विशेषताओं के बारे में जानकारी दी और व्यवस्था संचालन के बारे में बताया। उन्होंने यहां संचालित पाठ्यक्रमों प्राकृत व संस्कृत, अहिंसा एवं शांति, जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन, योग एवं जीवन विज्ञान आदि के बारे में अवगत करवाया तथा केन्द्रीय पुस्तकालय वर्द्धमान ग्रंथागार और प्राचीन दुर्लभ हस्तलिखित ग्रंथों के संरक्षण के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर उनके साथ अखिल भारतीय जैन पत्रकार संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश तिजारिया भी थे। अशोक सेठी व रमेश तिजारिया दोनों यहां सपत्नीक आए थे।

उन्होंने भी यहां कुलपति प्रो. दूगड़ से विश्वविद्यालय की अकादमिक गतिविधियों की पूर्ण जानकारी ली और कुलपति से इस सम्बंन्ध में चर्चा की। इस अवसर पर कुलपति प्रो. दूगड़ ने उनका स्वागत-सम्मान किया तथा उन्हें साहित्य भेंट किया।

कुलपति प्रो. बी.आर. दूगड़ का चैन्नई में किया गया अभिनन्दन

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा ट्रस्ट बोर्ड साहुकारपेट चैन्नई द्वारा जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ का अभिनंदन समारोह पूर्वक किया गया। कार्यक्रम में सभी उपस्थित पदाधिकारियों एवं समाज के प्रमुख व्यक्तियों ने जैन विश्वभारती संस्थान की वर्तमान गतिविधियों एवं भावी परियोजनाओं को संस्थागत एवं व्यक्तिगत स्तर पर प्रमुख रूप से प्रचारित-प्रसारित करने के संदर्भ में अपना चिंतन प्रस्तुत किया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने चैन्नई भ्रमण के दौरान आचार्यश्री महाश्रमण की आज्ञानुवर्ती साध्वीश्री अणिमाश्री एवं अन्य विराजित चारित्रात्माओं के दर्शन किए एवं संस्थान की वर्तमान गतिविधियों से उन्हें अवगत करवाया। इस अवसर पर जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा ट्रस्ट बोर्ड, साहुकारपेट, चैन्नई के पदाधिकारियों ने उनका भव्य स्वागत किया। कार्यक्रम में ट्रस्ट बोर्ड के प्रधान न्यासी सुरेश नाहर, निवर्तमान अध्यक्ष विमल चिप्पड़, कनिष्ठ उपाध्यक्ष केवलचंद मांडोत, मंत्री गजेंद्र खटेड़, उपभोक्ता विभाग प्रभारी विनोद डांगरा, अणुव्रत समिति चेन्नई से निवर्तमान अध्यक्ष मालाजी कातरेला, संतोष कातरेला, तेरापंथ ट्रस्ट एमकेबी नगर से ललित आंचलिया एवं अरिहंत बोथरा आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे।

उच्च शिक्षा का अन्तर्राष्ट्रीकरण किया जाएगा- कुलपति प्रो. दूगड़

'विश्व नागरिक' की अवधारणा पर होगा नए शैक्षिक पाठ्यक्रमों का निर्माण

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने बताया है कि संस्थान के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के विश्वविद्यालयों के साथ एमओयू होने के साथ यहां स्थापित ऑफिस ऑफ इंटरनेशन अफेयर्स के माध्यम से वैश्विक स्तर पर कार्य करते हुए भारतीय संस्कृति व मूल्यों के प्रचार-प्रसार का कार्य कर रहा है। अब यूजीसी के नए निर्देशों के अनुरूप वैश्विक नागरिक की अवधारणा पर भी काम करेगा तथा उच्च शिक्षा का अन्तर्राष्ट्रीयकरण किया जाएगा। इसके लिए संस्थान ने काम शुरु कर दिया है। आईसीटी के माध्यम से यह सारी व्यवस्थाएं संभव हो पाएंगी। हमें फैकल्टी, स्टुडेंट और प्रोग्राम के एक्सचेंज के लिए काम करना है। वे यहां कुलपति सभागार में 17 अगस्त को संस्थान के समस्त विभागों एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के शैक्षणिक स्टाफ की बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे।

विश्व नागरिक बनाने के सम्बंध में तैयारियां

बैठक में कुलपति के विशेषाधिकारी प्रो. नलिन शास्त्री ने उच्च शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीयकरण के सम्बन्ध में यूजीसी द्वारा दिए गए निर्देशों के बारे में बताते हुए कहा कि विश्व स्तर पर सभी विश्वविद्यालयों के बीच संवाद स्थापित किया जाएगा तथा ऐसे विद्यार्थी तैयार किए जाएंगे, जो 'वैश्विक नागरिक' के रूप में अपनी पहचान बनाकर प्रतिष्ठित हो सकें और वैश्विक मुद्दों पर हस्तक्षेप व विचार व्यक्त कर सकें। इसके लिए अपनी क्षमताओं को वैश्विक स्तर पर समृद्ध करना होगा। भारत की संस्कृति, चेतना और चिंतन को पाठ्यक्रमों में शामिल करना होगा। स्थानीय भाषा को इस प्रकार डिजाइन करना होगा, जिसमें विदेशी छात्रों को अंग्रेजी माध्यम से प्राकृत भाषा की तरफ लाया जा सके। शिक्षकों को भी नए ढंग से तैयार करने की आवश्यकता है, ताकि वे छात्रों में सृजनात्मक शक्ति का विकास कर सके। साथ ही अपने विद्यार्थियों में उनकी क्षमता व सोच-चिंतन में तार्किकता का समावेश करना होगा, उन्हें तकनीकी ज्ञान से समृद्ध बनाना और अपनी संस्कृति के साथ दूसरी संस्कृतियों की समझ, स्वीकार्यता और हर परिस्थिति में समायोजन होने की स्थिति को भी विकसित करने को भी पाठ्यक्रम में शामिल करना होगा।

विदेशियों की जीवन शैली के अनुरूप सुविधाएं जरूरी

प्रो. शास्त्री ने बताया कि विदेशी छात्रों के आने पर उनकी जीवन शैली के अनुरूप सुविधाएं उपलब्ध करवाना और अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि व सांस्कृतिक मूल्य अलग होते हैं, उन्हें चुनौतीपूर्वक लेने की जरूरत है। विदेशी छात्रों या विदेशी फेकल्टी के लिए मित्रवत् व्यवस्थाएं जरूरी हैं। उन्होंने बताया कि ऑनलाईन व ऑफलाईन अध्ययन को समेकित करके उनमें परस्पर ट्यूनिंग करनी होगी। पूरा विश्व एक गांव के रूप में होने की अवधारणा कोरोना काल में सामने आई और तकनीकी संचार साधनों के माध्यम से परस्पर सम्पर्क आसान हुए हैं। इनका बेहतरीन उपयोग करना होगा। साथ ही यूजीसी के नए प्रावधान व निर्देशों के अनुसार विदेशी छात्रों की क्रेडिट की पहचान, स्थानान्तरण, प्रमाणित करने और उनको समाहित करने के साथ विदेशी विश्वविद्यालयों से एमओयू स्थापित करने की आवश्यकता है। इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि हमारे राष्ट्रीय हितों के साथ कोई समझौता नहीं हो। बैठक में ऑफिस ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स की प्रभारी प्रगति चौरड़िया, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन, अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा तिवाड़ी, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री, अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल धर, योग व जीवन विज्ञान विभाग के डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, डॉ. विकास शर्मा, डॉ. विनोद कुमार सैनी, डॉ. युवराज सिंह खांगारोत, सुनील त्यागी, डॉ. बलवीर सिंह, डॉ. आभासिंह, डॉ. पुष्पा मिश्रा, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. अशोक भास्कर, डॉ. गिरीराज भोजक, अभिषेक चारण आदि उपस्थित थे।

अब पढ़ाई के लिए भी बनेगा क्रेडिट बैंक, जिसमें जमा होंगे विद्यार्थियों के पढ़ाई के आंकड़े

यूजीसी की नई व्यवस्था में अंतराल के बावजूद भी जुड़ेगी विद्यार्थी के पिछले अध्ययन की क्रेडिट

अब किसी भी शिक्षण संस्थान में अपनी पढाई अधूरी छोड़ कर गए विद्यार्थी को देश में कहीं भी और किसी भी विश्वविद्यालय में पुनः प्रवेश लेकर अपनी छोड़ी हुई पढाई को उससे आगे फिर से शुरू किया जा सकता है। जैन विश्वभारती संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने 17 अगस्त को समस्त विभागों एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के शैक्षणिक स्टाफ के साथ बैठक लेकर बताया कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के नए दिशा-निर्देशों के अनुसार अब एक एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स की स्थापना की जाएगी, जिसमें समस्त शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की पढाई की क्रेडिट के पॉइंट्स के रूप में जमा रहेंगे। इससे किसी विद्यार्थी के किन्हीं भी कारणों से अपनी पढाई में अंतराल आने के बावजूद उसके द्वारा पूर्व में की गई पढाई को बैंक क्रेडिट के आधार पर सम्मिलित करते हुए उससे आगे की पढाई करके अपनी डिग्री प्राप्त की जा सकेगी।

प्रो. दूगड़ ने बताया कि विद्यार्थी की यह क्रेडिट सात वर्षों तक बैंक में जमा रखी जाएगी और उसके पश्चात् उसे लेप्स कर दिया जाएगा। यह व्यवस्था आगामी शिक्षण सत्र से प्रारम्भ की जाएगी। नई व्यवस्था के अनुसार अंडर ग्रेजुएट कोर्स में 1 वर्ष करने पर उसे सर्टिफिकेट और 2 वर्ष पूर्ण करने पर डिप्लोमा तथा 3 वर्ष पूर्ण करने पर डिग्री दी जाएगी। साथ ही 4 वर्ष का अध्ययन पूरा कर लेने पर उसे ग्रेजुएशन ऑनर्स या रिसर्च की डिग्री मिलेगी। इसी प्रकार पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स में एक साल में डिप्लोमा और दो साल पूर्ण करने पर डिग्री प्रदान की जाएगी। 4 साल का ग्रेजुएशन ऑनर्स या रिसर्च करने वाला विद्यार्थी एक वर्ष में एम.ए. कर सकेगा। इस नई शिक्षण व्यवस्था से शिक्षा में लचीलापन आएगा तथा बीच में पढाई छोड़ने वाले विद्यार्थियों को पूरा लाभ मिल पाएगा।

बदले जाएंगे समस्त पाठ्यक्रम

कुलपति प्रो. दूगड़ ने बताया कि यूजीसी के निर्देशानुसार इस नई व्यवस्था को लागू करने के लिए समस्त कोर्सेज को मोडिफाई किया जाएगा। ऑनलाईन अध्ययन के प्लेटफार्म 'स्वयं' और 'मूक्स' के पाठ्यक्रमों को भी इस व्यवस्था में विश्वविद्यालय को स्वीकार करना होगा। इसके लिए 40 प्रतिशत तक 'स्वयं' या 'मूक्स' के पाठ्यक्रम को समाहित करते हुए और 60 प्रतिशत तक विश्वविद्यालय के अपने पाठ्यक्रम स्वीकार्य होंगे। स्वयं व मूक्स आधारित कोर्सेज अंडर ग्रेजुएट के 83 और पोस्ट ग्रेजुएट के 40 कोर्सेज हैं। विश्वविद्यालय द्वारा संशोधित किए जाने वाले पाठ्यक्रमों को एकेडमिक कौंसिल और बोर्ड ऑफ स्टडीज के द्वारा एप्रूवल किए जाने के बाद ही लागू किए जाएंगे।

कुलपति ने इस सम्बन्ध में सभी संकायों के विभागाध्यक्षों से विस्तृत चर्चा की और उन्हें समस्त नवीन प्रावधानों के बारे में पूरी जानकारी दी। उन्होंने यूजीसी निर्देशों के अनुसार विभिन्न विषयों पर 'शॉर्ट टर्म कोर्सेज' के बारे में भी जानकारी दी। बैठक में कुलपति के अलावा प्रो. नलिन शास्त्री, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन, अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. रेखा तिवाड़ी, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री, अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल धर, योग व जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, डॉ. विकास शर्मा, डॉ. विनोद कुमार सैनी, डॉ. युवराज सिंह खंगारोत, प्रगति चौरड़िया, सुनील त्यागी, डॉ. बलवीर सिंह, डॉ. आभासिंह, डॉ. पुष्पा मिश्रा, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. अशोक भास्कर, डॉ. गिरीराज भोजक, अभिषेक चारण आदि उपस्थित थे।

पाठ्यक्रमों का उपयोग स्किल बेस्ड किया जाने के कार्यक्रम निर्मित हों- कुलपति

विश्वविद्यालय में प्रशासनिक व शैक्षणिक क्षमताओं में वृद्धि के सम्बन्ध में निर्देश

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने विश्वविद्यालय की प्रशासनिक एवं शैक्षणिक क्षमताओं में वृद्धि को लेकर 11 दिसम्बर को आयोजित एक बैठक में कहा कि विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) द्वारा ए-ग्रेड प्रदान की गई है; परन्तु हमें यहीं पर नहीं ठहर जाना है, बल्कि इससे भी आगे बढना है। विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रमों, शोध-कार्यों, स्किल बेस्ड कार्यक्रमों, अन्तर्राष्ट्रीय अल्पकालीन पाठ्यक्रमों आदि में आवश्यक बदलाव लाने जरूरी हैं।

सामान्य पाठ्यक्रमों की शिक्षा के साथ स्किल आधारित अध्यापन कार्यक्रम को भी उन्होंने जरूरी बताया तथा कहा कि सभी विभागों को ऐसे कदम उठाने चाहिए, जिसमें विद्यार्थियों को रोजागारोन्मुखी अध्ययन एवं प्रेरणा मिल सके। उन्होंने बताया कि संस्थान का योग शिक्षा में विशेष महत्त्व है और यहां से योग प्रशिक्षित युवा देश-विदेश में प्रमुख्य संस्थानों या स्वतंत्र रूप से कार्य करके विशेष आर्थिक लाभ उठा रहे हैं। उन्होंने योग एवं जीवन विज्ञान विभाग को निर्देश दिए कि वे आस-पास के क्षेत्रों में लाडनूं, सुजानगढ, छापर, बीदासर आदि के अस्पतालों में एक योग चैम्बर की स्थापना करें और वहां मरीजों को योग-थैरेपी से इलाज प्रदान करें।

कुलपति ने विश्वविद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क एवं मामलात सम्बन्धी कार्यालय को भी अधिक कार्य के लिए निर्देश दिए तथा कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों के लिए भी ऐसे छोटे-छोटे विभिन्न पाठ्यक्रम बनाएं जाने चाहिए, ताकि विदेशों से भी विद्यार्थी यहां आकर अध्ययन कर सकें। विदेशी सम्पर्कों में भी बढोत्तरी को उन्होंने आवश्यक बताया। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति के अनुरूप संस्थान के समस्त पाठ्यक्रमों को पुनर्रचित करना होगा। उन्होंने विभिन्न अल्पकालीन पाठ्यक्रमों के निर्माण पर भी जोर दिया। फेकल्टी डवलेपमेंट पर जोर देते हुए कुलपति ने कहा कि शैक्षणिक के साथ समस्त गैर-शैक्षणिक कार्मिकों को कम्प्यूटर आदि समस्त आधुनिक तकनीक में पारंगत होना आवश्यक है। इसके लिए संस्थान द्वारा विभिन्न प्रोग्राम संचालित किए जाते रहते हैं, उनका लाभ अब सभी कर्मचारियों को अनिवार्य रूप से प्राप्त करना होगा, ताकि नवीन तकनीक से वे अपने स्वयं के विकास के साथ संस्थान को भी लाभान्वित कर सकें।

कुलपति ने शैक्षणिक स्टाफ से शोध कार्य पर विशेष जोर देने के निर्देश देते हुए कहा कि सभी शिक्षकों को अपने शोध आलेखों को तैयार करके उनका प्रकाशन यूजीसी मान्य व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाने चाहिए। इस बैठक में सभी शैक्षणिक व गैर शैक्षणिक कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन प्रो. नलिन के. शास्त्री ने किया।

आदर्श साहित्य भवन के शिलान्यास हेतु कुलपति ने किया भूमि पूजन

साध्वी-प्रमुखाश्री कनकप्रभा के 50वें मनोनयन दिवस को आचार्यश्री महाश्रमण के निर्देशानुसार यहां 'साध्वी प्रमुखा अमृत महोत्सव' के रूप में धूमधाम से मनाये जाने को लेकर आदर्श साहित्य विभाग के निर्माण के लिए भूमि पूजन एवं शिलान्यास का कार्यक्रम 12 अक्टूबर को आयोजित किया गया। जैन संस्कार विधि से सम्पन्न इस कार्यक्रम में भूमि पूजन कार्य में जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने सपत्नीक यजमान बनकर अपने हाथों से पूरी रस्म निभाई। इसके पश्चात् शिलान्यास कार्यक्रम में जैन विश्व भारती के मुख्य न्यासी अमरचंद लुंकड़, साहित्य विभागाध्यक्ष पुखराज बडोला, पूर्व अध्यक्ष रमेशचंद बोहरा, कुलपति डॉ. बच्छराज दूगड़, संयुक्त मंत्री जीवनमल जैन एवं भीखमचंद नखत ने शिला पूजन के बाद नींव का प्रथम पत्थर रखते हुए नींव-भराई का कार्य करवाया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव रमेश कुमार मेहता, दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी आदि उपस्थित रहे।

स्वतंत्रता दिवस मनाया, एनसीसी परेड के साथ ध्वज को सलामी

नागरिक कर्त्तव्यों को पूरा करना ही आजादी की सलामती- प्रो. दूगड़

संस्थान में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त को प्रांगण में झंडारोहण के साथ समारोह आयोजित किया गया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में एनसीसी की छात्राओं ने परेड की और तिरंगे को सलामी प्रदान की गई। इससे पूर्व कुलपति प्रो. दूगड़ ने झंडारोहण किया और डॉ. गिरीराज भोजक के साथ सभी ने राष्ट्रगान प्रस्तुत किया। कुलपति प्रो. दूगड़ ने अपने सम्बोधन में देश कीं सीमाओं की सक्षम रक्षा के लिए सरकार और सेनाओं के प्रति भावनाएं व्यक्त की और आजादी की सलामती के लिए प्रत्येक नागरिक को कृत संकल्प होकर अपने कर्त्तव्यों को पूरा करने की आवश्यकता बताई। कार्यक्रम में रजिस्ट्रार रमेश कुमार मेहता, प्रो. नलिन के. शास्त्री, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. दामोदर शास्त्री, डॉ. युवराज सिंह खंगारोत एवं अन्य स्टाफ मौजूद रहा।

क्षमा का आदान-प्रदान नहीं होने से बढ़ती है कटुता- प्रो. दूगड़
विश्व मैत्री दिवस मनाया और परस्पर खमत-खामणा की

विश्व मैत्री दिवस के अवसर पर संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता में संस्थान में एक कार्यक्रम का आयोजन 13 सितम्बर को किया गया। कार्यक्रम में प्रो. दूगड़ ने कहा कि क्षमा का आदान-प्रदान करने से मन का कलुष मिट जाता है। अगर लम्बे समय तक क्षमा का आदान-प्रदान नहीं हो पाता है, तो परस्पर कटुता बढती है। उन्होंने संवत्सरी महापर्व पर चलने वाले व्रतों, प्रतिक्रमण व अंत में प्रायश्चित के विशेष स्थान के बारे में बताया तथा कहा कि संवत्सरी प्रत्याख्यान का विषय है। उन्होंने आह्वान किया कि प्रतिदिन अपने काम के समाप्त होने पर प्रतिक्रमण करना चाहिए। प्रो. दूगड़ ने कहा कि 'खमत खामणा' का अर्थ ही है कि क्षमा का आदान-प्रदान किया जाए। यदि किसी भी व्यवहार, वचन व कर्म से किसी भी व्यक्ति को कोई ठेस पहुंची हो तो उसके लिए भावपूर्वक क्षमा मांग लेनी चाहिए और इसी तरह दूसरों के व्यवहार आदि के लिए क्षमा कर देनी भी चाहिए। खमत-खामणा दिवस के अवसर पर उन्होंने विश्वविद्यालय के समस्त शैक्षणिक, गैर शैक्षणिक स्टाफ, मातृसंस्था, अन्य समस्त व्यवहार में आने वालों के प्रति क्षमायाचना व्यक्त की। प्रो. नलिन के. शास्त्री ने कार्यक्रम में सुखद मित्रता को क्षमा का परिणाम बताते हुए कहा कि क्षमा से आत्मा के स्तर पर हिंसा के भावों का पराभव होता है और शुद्ध अहिंसा का उद्भव होता है।

मैत्री पर्व को राष्ट्रीय पर्व घोषित किया जावे

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि विश्व के सभी धर्मों में क्षमा का महत्त्व है। उन्होंने इस मैत्री पर्व पर समूची वसुधा को मित्र मानते हुए किसी से भी बैरभाव नहीं करने के लिए प्रेरित किया तथा कहा कि इस मैत्री पर्व को भारत का राष्ट्रीय पर्व घोषित किया जाना चाहिए। यह मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने का पर्व है। यह राष्ट्रीय एकता को बढावा देता है। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने इस पर्व को विश्वशांति में सहायक बताया। अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. रेखा तिवाड़ी ने क्षमायाचना को आचरण में उतारने की जरूरत पर बल दिया।

प्राकृत व संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री ने कोरोना वायरस के विभिन्न वैरियंट की तरह से आध्यात्मिक वायरस के कषायों को समाप्त करने के लिए क्षमा को बचाव का उपाय बताया। कार्यक्रम में प्रो. अनिल धर, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, वित्ताधिकारी आर.के. जैन, समाज कार्य विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ. पुष्पा मिश्रा, जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग के डॉ. आलोक कुमार जैन, डॉ. सत्यनारायण भारद्धाज, परीक्षा विभाग के डॉ. युवराजसिंह खंगारोत ने भी खमत-खामणा करते हुए प्राणी मात्र से मैत्री रखे जाने की जरूरत बताई। कार्यक्रम का संचालन डॉ. युवराजसिंह ने किया।

संविधान की रक्षा के लिए समता, एकता और अखण्डता जरूरी है- कुलपति
संविधान दिवस पर सामूहिक उद्देशिका पठन किया और संकल्प लिया

संस्थान में 26 नवम्बर को संविधान दिवस पर संविधान की उद्देशिका का सामूहिक पठन किया गया तथा कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अगुवाई में सामूहिक रूप से शपथ ग्रहण की गई, जिसमें देश के सम्पूर्ण प्रभुत्व, लोकतंत्रात्मक गणराज्य की अवधारणा की मजबूती और समस्त नागरिक अधिकारों की रक्षा के साथ कर्त्तव्य पालन करते हुए समस्त प्रकार की समता रखने और राष्ट्र की एकता और अखण्डता को बनाए रखने के लिए दृढ़संकल्प अभिव्यक्त किया गया। इस अवसर पर कुलपति ने संविधान दिवस की बधाई देते हुए कहा कि देश में विभिन्न समुदायों के जाति, धर्म, वर्ग, प्रांत, भाषा के अनुसार निवास करने वाले लोगों के बीच जरूरी भरोसा और सहयोग विकसित करने का काम संविधान करता है। देश को लोकतांत्रिक पद्धति से संचालित करने की व्यवस्था और सरकारों के अधिकारों की सीमा के साथ नागरिकों के अधिकारों और कर्त्तव्यों का निर्धारण भी संविधान करता है। संविधान ही देश को विकसित और सुदृढ बनाने तथा दिशा निर्धारण करने का काम करता है।

कार्यक्रम में प्रो. नलिन के. शास्त्री ने संविधान की भावनाओं को विस्तार से बताया तथा कहा कि देश के प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है कि संविधान का सम्मान करें। प्रो. रेखा तिवाड़ी और डॉ. युवराज सिंह खंगारोत ने भी अपनी भावनाएं व्यक्त की और संविधान के प्रति सम्मान को जरूरी बताया। कार्यक्रम में रजिस्ट्रार रमेश कुमार मेहता, वित्ताधिकारी राकेश कुमार जैन, डॉ. बलवीर सिंह चारण, पंकज भटनागर, प्रगति चौरड़िया, डॉ. जे.पी. सिंह, दीपाराम खोजा, रमेशदान चारण आदि सहित सभी स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में गरिमा, रमा व मोनिका प्रथम रहीं

संस्थान में ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन 9 सितम्बर को किया गया। "जागरुकता" विषय पर यह प्रतियोगिता स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों के लिए थी, जिसमें 162 प्रतिभागियों ने भाग लिया। सांस्कृतिक सचिव डॉ. अमिता जैन ने बताया कि इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर तीन प्रतिभागी गरिमा प्रजापत, रमा प्रजापत व मोनिका शर्मा रहीं। द्वितीय स्थान पर चौदह प्रतिभागियों का चयन किया गया, जिनमें मोनिका चौधरी, दिव्या, निशा कँवर, खुशबू चौधरी, आयशा परवीन, रुकसाना, संतोष थोलिया, पूनम स्वामी, झंकृति शर्मा, ममता कँवर, कुसुम, नेहा कँवर, निकिता मेघवाल व अरुणा शामिल हैं। तृतीय स्थान पर चयनित रहीं पंद्रह प्रतिभागियों में उषा रेगर, लक्ष्मी चौधरी, हिमानी गिटाला, संतोष जाखड़, मोनिका शर्मा, सपना टाटू, ऋतु शर्मा, निशा जाट, दीपिका, आरती खीचड़, निरमा, यशोदा स्वामी, दमयन्ती, कोमल मुंडेल, निशा स्वामी आदि सम्मिलित हैं। प्रतियोगिता का आयोजन सांस्कृतिक सचिव डॉ. अमिता जैन एवं सदस्य डॉ. विनोद कस्वां व डॉ. लिपि जैन ने किया।

प्रो. त्रिपाठी को मिला साहित्य का शिखर सम्मान

संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी को प्रयागराज के भारतीय संस्कृति एवं साहित्य संस्थान द्वारा आयोजित विमर्श सम्मान एवं कविकुम्भ के आयोजन के अवसर पर इस वर्ष का 'राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी शिखर सम्मान' से नवाजा गया है। उन्हें यह सम्मान समाजसेवी विद्याशंकर तिवाड़ी और संस्थाध्यक्ष साहित्यकार डॉ. विजयानन्द द्वारा प्रदान किया गया। प्रो. त्रिपाठी लम्बे समय से बाल साहित्य की रचना करते रहे हैं तथा इनकी 50 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित होने के साथ अनेक प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं भी छपती रहती है। प्रो. त्रिपाठी को पूर्व में प्रशासनिक एवं सांस्थानिक आदि विभिन्न क्षेत्रों से भी अनेक बार पुरस्कृत एवं सम्मानित किया जा चुका है। इस सम्मान के मिलने पर उन्हें यहां जैन धर्म एवं संस्कृति संरक्षण संस्थान की डॉ. मनीषा जैन, शरद जैन, साहित्य संगम के अध्यक्ष जगदीश यायावर, अणुव्रत समिति के मंत्री डॉ. वीरेन्द्र भाटी मंगल, आलोक खटेड़ एवं अन्य सभी साहित्यकारों एवं साहित्य प्रेमियों ने बधाईयां प्रदान की हैं।

पांच दिवसीय एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ डवलपमेण्ट प्रोग्राम कार्यशाला आयोजित

कार्यालय प्रबंधन के साथ कर्मचारी के तालमेल एवं कार्य गतिविधि को सुगम बनाने के गुर सिखाए

संस्थान में पांच दिवसीय ऑनलाईन एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ डवलपमेण्ट प्रोग्राम का शुभारम्भ कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में किया गया। कार्यशाला में देश के अनेक एक्सपर्ट्स व्याख्यान प्रस्तुत किए। कार्यशाला (27-31 जुलाई) के शुभारम्भ सत्र में इंडियन लॉ इंस्टीट्यूट के कुलसचिव एस.सी. प्रसुति ने ऑफिस मैनेजमेंट की जानकारी देते हुए संस्थान एवं कर्मचारी के बीच सम्पन्न होने वाली प्रक्रिया को समझाया तथा कार्यालय प्रबंधन के साथ कर्मचारी से आपसी तालमेल एवं कार्य गतिविधि को सुगम बनाने के लिए गुर बताये तथा कार्यालय प्रबंधन के दौरान एक कर्मचारी द्वारा प्रशासनिक कार्यों को सम्पन्न किया जाने की प्रक्रिया में कार्यालय व्यवहार, फाईल मैनेजमेण्ट, आपसी व्यवहार को सुदृढ बनाये रखने एवं संस्थान के प्रति सर्मपण के तरीकों की विस्तृत जानकारी दी। इससे पूर्व कुलपति के सचिव मोहन सियोल ने डवलपमेण्ट प्रोग्राम की जानकारी देते हुए अतिथियों का स्वागत किया।

खरीद की आवश्यकता और वस्तु की उपलब्धता के साथ गुणवत्ता पर ध्यान जरूरी

गांधीनगर गुजरात के इनफ्लिबनेट सेंटर के प्रशासनिक अधिकारी हरिश्चन्द्र ने 'परचेज एंड प्रोसिजर' विषय पर अपने सम्बोधन में वस्तुओं व सेवाओं की खरीद के नियमों और प्रक्रियाओं के बारे में विस्तार से समझाया। उन्होंने सीधे खरीद, एजेंसी के माध्यम से खरीद के सम्बन्ध में संस्थान की आवश्यकताओं के आकलन, अनावश्यक खर्च से बचने के लिए फिजूल व बिना जरूरत के फीचर्स से बचकर केवल बेसिक चीजों पर ध्यान देने की आवश्यकता बताते हुए खरीद की प्रक्रिया में आवश्यक मार्केट सर्वे, लोकल पर्चेज, आईटम की पहचान, सप्लाई या डिलेवरी के समय, वस्तु की जरूरत, मशीनरी की बेहतरीनता और उसका इंस्टॉलेशन, पर्चेज कमेटी की रिकमंडेशन, खरीद की राशि और उसके नियमों, आवश्यक पूर्व प्रमाणीकरण, राजकीय पॉलिसी, ओपन टेंडर और ओपन ऑक्सन सिस्टम आदि विविध बिन्दुओं पर विस्तार से बताया। प्रारम्भ में कार्यशाला संयोजक प्रो. बीएल जैन ने उनका परिचय प्रस्तुत करते हुए विषय पर प्रकाश डाला। अंत में लाईब्रेरियन सुनील त्यागी ने आभार ज्ञापित किया।

विशिष्ट कानून सूचना का अधिकार

एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ डवलपमेण्ट प्रोग्राम के तहत केन्द्रीय विश्वविद्यालय राजस्थान किशनगढ के संयुक्त निदेशक कुलसचिव डॉ. हरीसिंह परिहार ने सूचना का अधिकार विषय पर आवेदन प्रक्रिया, सूचना के प्रकार, शुल्क आदि की जानकारी देते हुए डॉ. परिहार ने बताया कि इस अधिनियम के अंतर्गत किसी भी लोक प्राधिकरण (सरकारी संगठन या सरकारी सहायता प्राप्त गैर सरकारी संगठनों) से सूचना प्राप्त की जा सकती है। प्रथम अपीलीय प्राधिकरण, लोक सूचना अधिकारी से वरिष्ठ अधिकारी होता है। वह आवेदन स्वीकार करने, आवेदक द्वारा मांगी गई सूचना के अनुसार लोक सूचना अधिकारी को सूचना आपूर्त्ति का आदेश देने या सूचना के अधिकार अधिनियम के किसी भाग के अंतर्गत आवेदन को अस्वीकृत करने के लिए उत्तरदायी होता है। प्रारम्भ में मोहन सियोल ने अतिथियों का परिचय देते हुए स्वागत किया। अंत में संस्थान के कुलसचिव रमेशचन्द्र मेहता ने आभार ज्ञापन किया।

नीतियों तथा प्रशासनिक क्षमताओं की अधिक गतिशीलता जरूरी

पांच दिवसीय एडमिनिस्ट्रेशन स्टाफ डवलपमेण्ट प्रोग्राम के समापन पर कुलपति के विशेषाधिकारी प्रो. नलिन के. शास्त्री ने 'यूनिवर्सिटी एडमिनिस्ट्रेशन इन इंडिया : अन ओवरव्यू' विषय पर अपने व्याख्यान में मानव संसाधन के बेहतरीन उपयोग के तरीकों, संस्थान के आधारभूत मूल्यों पर होने वाले कार्यों व नीतियों तथा प्रशासनिक क्षमताओं को अधिक गतिशील बनाने के सात आयामों के बारे में बताया तथा कहा कि संस्थान की आंतरिक संरचना में विभिन्न समितियों के जरिए निर्णय लिए जा सकते हैं और ऊपर से पावर व व्यवस्थाएं आने का सिस्टम भी हो सकता है।

सांस्थानिक क्षमता के पूरे उपयोग के लिए परिवर्तनों की आवश्यकता होती है। उन्होंने प्रपोजल मॉडल के बारे में बताते हुए स्ट्रक्चरल फ्रेम, ह्यूमेन रिसोर्स फ्रेम और सिम्बोलिक फ्रेम के बारे में जानकारी दी। विश्वविद्यालय के लिए ग्लोबल सोसायटी, नोलेज सोसायटी और यूनिवर्सल सोसायटी के बारे में बताया। साथ ही प्रशासन और प्रबंधन के आठ सूत्रों को व्याख्यायित करते हुए सृजनात्मक संवाद, मूल्यों के प्रति निष्ठा, परस्पर विश्वास और खुलेपन की आवश्यकता बताई।

जेम पोर्टल से खरीद करना

सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ राजस्थान किशनगढ के रजिस्ट्रार प्रदीप कुमार ने 'असिस्टेंट गेम पोर्टल एंड स्टोर मेन्टेन कोड' विषय पर अपने व्याख्यान में जेम पोर्टल से खरीद के बिन्दुओं पर प्रकाश डाला। इनसे पूर्व इंडियन लॉ इंस्टीट्यूट नई दिल्ली के श्रीनिवास चन्द्रा पृस्टी ने 'ऑफिस प्रोसीजर एंड जनरल एडमिनिस्ट्रेशन' विषय पर अपना व्याख्यान दिया।

सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ राजस्थान किशनगढ के जॉइंट रजिस्ट्रार डॉ. हरिसिंह ने 'राईट टू इन्फोर्मेशन' विषय पर इंद्रा गांधी नेशनल ट्राइबल यूनिवर्सिटी अमरकंटक मध्यप्रदेश के डिप्टी रजिस्ट्रार रामप्रताप सिंह परिहार ने 'कंडक्ट रूल्स' विषय पर तथा इनफ्लिबनेट सेण्टर इन्फोसिटी गांधीनगर गुजरात के एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर हरीश चन्द्रा ने 'परचेज प्रोसीजर' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। कार्यक्रम संयोजक शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने सभी विषय विशेषज्ञों का परिचय एवं स्वागत किया। अंत में सहायक कुलसचिव दीपाराम खोजा ने आभार ज्ञापित किया। तकनीकी सहायक मोहन सियोल रहे।

दवा पर आश्रय बंद करने के लिए आधुनिक खोज सम्बन्धी कार्यक्रम अपनाएं- प्रो. भट्टाचार्य

डायबिटीज रिवर्सल प्रोग्राम पर व्याख्यान का आयोजन

पं. बंगाल के शांतिनिकेतन विश्वविद्यालय के संस्कृत, पालि व प्राकृत विभाग के प्रोफेसर एवं डायबिटीज रिवर्सल प्रोग्राम विशेषज्ञ प्रो. जगतराम भट्टाचार्य ने यहां संस्थान में 27 अक्टूबर को सेमिनार हॉल में प्रस्तुत अपने व्याख्यान में बताया कि डायबिटीज बीमारी को लेकर लोगों में अनेक तरह के मिथक व्याप्त हैं और यहां तक कि चिकित्सक भी ऐसे मिथकों के शिकार हैं। उन्होंने कहा कि यह कहा जाता है कि डायबिटीज एक बार होने के बाद जिन्दगी भर साथ ही रहती है, लेकिन हकीकत यह है कि 'डायबिटीज रिवर्सल प्रोग्राम' उसे समाप्त कर देता है। डॉक्टर भी कहते हैं कि यह ठीक नहीं हो सकता, दवा से सिर्फ कंट्रोल होता है। वे घूमने व एक्सरसाईज करने की सलाह देते हैं। जैन दर्शन के सिद्धांत आस्रव, संवर व निर्जरा की तकनीक को इसमें उपयोगी बताया। प्रो. भट्टाचार्य ने बताया कि तीन तत्त्व प्रभावी होते हैं- कार्बोहाईड्रेट, प्रोटीन व फेट। घी बंद करने की बात बेमानी है। घी स्वास्थ्यवर्द्धक होता है। वह फेटी एसिड के रूप में अमिनो एसिड के रूप में जाता है। जहां तक खून में फेट की बात है तो वह कार्बोहाइड्रेट के कारण होती है। खाने में एलसीएचएफ सिद्धांत का पालन करना डायबिटीज को समाप्त कर सकता है। इसमें कार्बोहाईड्रेट की मात्रा कम करना और फेट की मात्रा बढाना होता है।

खाने का फार्मूला करता है काम

उन्होंने कहा कि खाने में सब्जियों की मात्रा बढाना चाहिए और रोटी की कम करना चाहिए। अगर कोई 75 प्रतिशत रोटी को 25 प्रतिशत सब्जी के साथ लगाकर खाते हैं, तो इसे उलट दें और 25 प्रतिशत रोटी को 75 प्रतिशत सब्जी के साथ लगाकर खाएं। इससे कार्बोहाईड्रेट की मात्रा कम हो जाएगी। उन्होंने उपवास का तरीका भी बताया और कहा कि कुल 12 घंटे का उपवास करना चाहिए, जिसमें शाम 7 बजे से लेकर सुबह 7 बजे तक पानी के अलावा कुछ भी नहीं खाना होगा। यह फलदायक सिद्ध होगा। व्यक्ति को जहां तक हो दो बार ही खाना चाहिए, इससे काम नहीं चले को तीन बार खाए, लेकिन चार बार से अधिक खाना तो सिर्फ नुकसानदायक सिद्ध होगा। उन्होंने खाने के सिद्धांत का फार्मूला भी दिया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में प्रो. नलिन के. शास्त्री ने प्रस्तावना प्रस्तुत की। संचालन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। आभार ज्ञापन प्रो. बीएल जैन ने किया।

दायित्व मिलने से बड़ा होता है, उसका बखूबी निर्वहन करना- कुलपति

संस्थान के कुलपति बच्छराज दूगड़ ने कहा है कि दायित्व हमेशा योग्यता और काम के आधार पर मिलते हैं, लेकिन दायित्व मिलने से बड़ी बात होती है, उनका बखूबी निर्वहन करना। वे यहां सेमिनार हॉल में अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल धर के सेवानिवृत्ति पर 24 दिसम्बर को आयोजित मंगलभावना समारोह को सम्बोधित कर रहे थे।

प्रो. अनिल धर ने इस अवसर पर कहा कि चाहे कैसी भी परिस्थितियां आ जाएं, लेकिन सबको अपने शैक्षणिक विकास को निरन्तर जारी रखना चाहिए, इसमें उम्र भी बाधक नहीं बन सकती है।

कार्यक्रम में कुलपति द्वारा प्रो. धर को शॉल, पुष्पगुच्छ, प्रतीक चिह्न, पुस्तकें और उपहार प्रदान करके उनका सम्मान किया गया। प्रो. समणी सत्यप्रज्ञा ने कहा कि निवृत्ति से महाप्रवृत्ति का प्रारम्भ होता है। डॉ. समणी राहिणी प्रज्ञा ने भी अपने उद्गार प्रस्तुत किए।

इसी प्रकार प्रो. नलिन के. शास्त्री, प्राकृत व संस्कृत विभाग के प्रो. दामोदर शास्त्री, शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, अंग्रेजी विभाग की प्रो. रेखा तिवाड़ी, समाज कार्य विभाग की डॉ. पुष्पा मिश्रा, कुलसचिव रमेश कुमार मेहता, सहायक कुलसचिव दीपाराम खोजा, वित्ताधिकारी आरके जैन, डॉ. विकास शर्मा, डॉ. बलवीरसिंह चारण, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, डॉ. आलोक कुमार जैन, अभिषेक चारण आदि ने अपने विचार रखे और मंगलकामनाएं व्यक्त कीं। कार्यक्रम का संचालन और अंत में आभार ज्ञापन डॉ. युवराजसिंह खंगारोत ने किया।

साईबर सिक्योरिटी पर व्याख्यान आयोजित

झूठे दिखावे से बेहतर है अपराधी की पहचान कर तिरस्कार करें- सीआई राजेंद्र सिंह

संस्थान स्थित आचार्य महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में 25 अगस्त को आयोजित व्याख्यान के अन्तर्गत पुलिस थाना अधिकारी सीआई राजेन्द्रसिंह कमांडो ने साईबर सिक्योरिटी पर अपना व्याख्यान देते हुए कहा कि किसी भी डिवाइस, मशीन या उपकरण का प्रयोग करके किया गया अपराध साईबर क्राईम है, जिसमें कम्प्यूटर, इंटरनेट का उपयोग किया जाता है। ये साईबर अपराध चार तरीकों से किया जाता है। इनमें सोशल साईट्स के माध्यम से, फाईनेंसियल एप्लीकेशन से किए अपराध, ईमेल द्वारा अपराध करने और वेबसाइटों के माध्यम से अपराध करना शामिल हैं।

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता और समाजसेवी भागचंद बरड़िया के विशिष्ट आतिथ्य में आयोजित इस व्याख्यान में सीआई राजेन्द्र सिंह ने 32 प्रकार की सोशल साईटों, पेटीएम, फोनपे आदि 15 फाईनेंसियल एप्प, टोलफ्री नम्बरों, ट्रू कॉलर आदि के माध्यम से होने वाली ठगी आदि विभिन्न वारदातों की जानकारी देते हुए उनसे बचने के उपाय भी बताए।

ये बताए सिक्योरिटी के उपाय

थानाधिकारी ने साईबर अपराध से बचने के लिए अपनी प्राईवेसी को गोपनीय रखने, निजी फोटो शेयर नहीं करने, अपनी फ्रेंडलिस्ट शो नहीं करने, अनजान लोगों को फ्रेंड रिक्वेस्ट नहीं भेजने, किसी की सही जानकारी के बिना फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार नहीं करने, कहीं सफर में जाने की फोटो व जानकारी स्टेटस में नहीं लगाने, अपनी लाईव लोकेशन को शेयर नहीं करने, किसी भी अनजान लिंक पर क्लिक नहीं करने, नेट पर आने वाले लुभावने प्रलोभनों में नहीं फंसने, किसी तरह के लालच से दूर रहने, किसी आकर्षक न्यूज लिंक को भी नहीं खोलने की सलाह देते हुए सीआई ने बताया कि आपकी व्यक्तिगत जानकारी, फोटो और डाटा चुराने से बचाने की जरूरत है। उन्होंने स्मार्टफोन में सभी निरर्थक एप्प डाउनलोड नहीं करने, मोबाइल में अधिक एप्लिकेशन नहीं रखने और उन्हें डिलीट करने, गेम हटाने, सब आवश्यक एप्प के लिए लॉक रखने, अपने नाम या मिलते-जुलते नाम से बनी फेसबुक आईडी की रिपोर्ट करके उसे बंद करवाने, पासवर्ड या कोड को सरल व मिलता-जुलता नहीं रखकर दस से अधिक अक्षरों, अंकों व सिम्बलों के सामंजस्य से बनाने और हर साल पासवर्ड बदलते रहने की सलाह दी।

भुगतने से बेहतर है बचाव करना

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि आज अधिकतर लोग साईबर अपराध के शिकार हो रहे हैं। सोशल मीडिया और इंटरनेट के कारण जो भुगते हैं, उन्हें इन सब बातों को ग्रहण करके सावधानी बरतनी चाहिए, जो भुगतने से बेहतर है। जो टिप्स व्याख्यान में बताए गए हैं, वे बचाव के लिए उपयोगी हैं।

उन्होंने पुलिस को जनता की सहायक बताते हुए कहा कि पुलिस से दूर रहने की सोच पुरानी हो गई है, अब पुलिस को मित्र बनाकर चलने की जरूरत है।

अंत में दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने आभार ज्ञापित करते हुए राजेन्द्रसिंह के व्याख्यान को उपयोगी बताया। कार्यक्रम में नगरपालिका के पूर्व उपाध्यक्ष याकूब शेख, पार्षद अनिल सिंघी, समाज सेवी नरेन्द्र सिंह भूतोड़िया, राजेश विद्रोही, उम्मेदसिंह चारण, विमल विद्या विहार की प्रिंसिपल रचना बालानी, कुलसचिव रमेश कुमार मेहता, प्रो. दामोदर शास्त्री, प्रो. बीएल जैन, प्रो. रेखा तिवाड़ी, वित्ताधिकारी आरके जैन, डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज, डॉ. प्रगति भटनागर, जगदीश यायावर, महिमा जैन आदि उपस्थित रहे।

साइबर सिक्योरिटी में बैंकिंग फ्रॉड से बचाव पर कार्यशाला आयोजित

फर्जी वेबसाइटों के चक्कर में आने से बचें- गुरुमुख सिंह

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के निर्देशानुसार संस्थान में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन व निर्देशन में साइबर सिक्योरिटी की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में बैंकिंग फ्रॉड से बचने के संदर्भ में 19 अक्टूबर को वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इस वर्कशॉप में मुख्य वक्ता पंजाब नेशनल बैंक के शाखा प्रबंधक गुरुमुख सिंह ने बताया कि बदलते तकनीकी युग में बैंकिंग सुविधाओं का ऑनलाइन प्रयोग करते हुए हम अज्ञानतावश फर्जी वेबसाइटों के चंगुल में आकर आर्थिक नुकसान के शिकार बन जाते हैं। ऐसे नुकसानों से बचने के लिए हमें फर्जी तथा असली वेबसाइट्स की पहचान करने के उपरांत ही उस वेबसाइट का प्रयोग करना चाहिए और बैंकिंग व्यवस्था सम्बन्धी किसी भी प्रकार की गोपनीय जानकारी अनजान कॉल करने वालों को प्रदान नहीं करनी चाहिए।

कार्यक्रम में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक व आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य कार्यक्रम प्रभारी प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि अज्ञानतावश एवं लापरवाही के कारण हम कई बार इस प्रकार की प्रवृत्तियों के शिकार हो जाते हैं, अतः हमें जागरूक एवं सचेत रहने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम की शुरूआत संस्थान की प्रार्थना से की गई। विभागाध्यक्ष तथा कार्यक्रम प्रभारी प्रो. बीएल जैन ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। अंत में आयोजक समिति के सदस्य डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने आभार व्यक्त किया। समिति के सदस्य डॉ. बलबीर सिंह ने कार्यक्रम का संचालन किया।

विद्यार्थियों को साईबर क्राइम के प्रति जागरूक किया

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्देशित 'साईबर जागरुकता दिवस' के अवसर पर संस्थान में 1 दिसम्बर को नवप्रवेशित विद्यार्थियों में साईबर जागरुकता पैदा करने के लिए एक सेमिनार का आयोजन किया गया। 'साईबर अपराध एवं साईबर कानून' विषय पर आयोजित इस सेमिनार में कार्यक्रम प्रभारी आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कम्प्यूटर, मोबाईल व इंटरनेट के माध्यम से साईबर क्राईम को अंजाम दिया जाता है। इसमें डेटा हैंकिंग, फिसिंग, अवैध डाउनलोडिंग, वायरस प्रसार एवं अन्य गतिविधियां शामिल हैं। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने साईबर क्राइम सम्बन्धी कानूनों की जानकारी देते हुए आईटी एक्ट 2000 तथा आईटी (संशोधन) एक्ट 2008 के बारे में विचार व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि साईबर कानूनों के प्रयोग से भौतिक दुनिया और वर्चुएल दुनिया की पारस्परिक गतिविधियों से होने वाले अपराधों की रोकथाम सम्भव है। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारीलाल शर्मा ने बताया कि इस कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में साईबर अपराधों के प्रति जागरूकता लाने की पहल की जा रही है। उन्होंने बताया कि यूजीसी ने ऐसे कार्यक्रम प्रत्येक माह के प्रथम बुधवार को किए जाने हैं, जो निरन्तर एक वर्ष तक चलाए जाएंगे। अंत में कार्यक्रम के सह-संयोजक डॉ. बलवीरसिंह ने आभार ज्ञापित किया।

सोशल मीडिया व बैंकिंग फ्रॉड से बचने के लिए सिक्योरिटी नियमों का पालन जरूरी

साईबर सिक्योरिटी जागरूकता अभियान के तहत एक दिवसीय सेमिनार आयोजित

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा चलाए जा रहे साईबर सिक्योरिटी जागरुकता अभियान के तहत 30 सितम्बर को संस्थान में 'साइबर सुरक्षा के लिए गृह मंत्रालय की पहल' विषय पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता योग एवं जीवन-विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने साईबर क्राइम के बारे में बताया कि कम्प्यूटर एवं इंटरनेट के उपयोग से होने वाले सभी क्राइम्स साइबर क्राइम में सम्मिलित हैं, इनसे सुरक्षा रखना वर्तमान में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने सोशल मीडिया और बैंकिंग फ्रॉड से बचने के उपाय बताते हुए कहा कि मोबाईल में एप्स की परमीशन सोच-समझ कर दें, किसी अनजाने व्यक्ति को सोशल मीडिया पर मित्र नहीं बनाएं, किसी अनजाने लिंक को बिना सोचे-समझे क्लिक नहीं करें, मोबाईल का हमेशा बैक कैमरा ही ऑन रखें, एटीएम का पिन अपने मोबाईल में कभी सेव नहीं करें, आदि सावधानियों से साइबर क्राइम से बचा जा सकता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि मोबाईल के उपयोग में हमें अत्यधिक सावधानी बरतनी चाहिए। साईबर क्राईम का जरिया भी हमारा मोबाईल सबसे ज्यादा है। प्रारम्भ में कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने सेमीनार के आयोजन के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि फेसबुक, इंस्टाग्राम तथा ट्विटर जैसे लिंक्स एवं साइबर सिक्योरिटी वेबसाइट की जानकारी दी तथा कहा कि संस्थान के सभी शैक्षणिक व शिक्षणेतर सदस्यों तथा विद्यार्थियों को साईबर क्राइम से सतर्क रहते हुए साइबर सिक्योरिटी सुनिश्चित रखनी चाहिए। कार्यक्रम में 100 से अधिक प्रतिभागी उपस्थित रहे। अंत में आभार ज्ञापन डॉ. गिरधारीलाल शर्मा ने किया।

पीपीटी निर्माण प्रतियोगिता में नीतू और वीडियो निर्माण में प्रियंका प्रथम रही

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्देशित 'साईबर सुरक्षा कार्यक्रम' के अन्तर्गत जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय में 22 नवम्बर को 'साईबर अपराधों के प्रति जागरुकता' विषय पर वीडियो एवं पीपीटी निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रभारी प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी व प्रो. बीएल जैन ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य वर्तमान में बढते जा रहे साईबर अपराधों के प्रति विद्यार्थियों में जागृति पैदा करना है। उन्होंने प्रतियोगिता के परिणामों के बारे में बताया कि प्रतियोगिता में संस्थान के विद्यार्थियों ने बढ-चढ कर हिस्सा लिया। प्रतियोगिता में पीपीटी निर्माण में नीतू जोशी प्रथम रही और निरंजन कंवर द्वितीय व भूमिका सोनी तृतीय रही। वीडियो निर्माण में प्रथम स्थान पर प्रियंका सोनी रही और द्वितीय आयशा परवीन च तृतीय अमीषा पूनिया रही। प्रतियोगिताओं की निर्णायक डॉ. सरोज राय और प्रमोद ओला थीं। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारीलाल शर्मा व डॉ. बलवीर सिंह चारण थे।

साईबर सुरक्षा क्विज आयोजित

संस्थान के शिक्षकों, शिक्षणेतर कार्मिकों एवं विद्यार्थियों को साईबर सुरक्षा के प्रति जागरूक बनाने के लिए संचालित 'साईबर सुरक्षा जागरुकता' कार्यक्रम के अन्तर्गत एक क्विज का आयोजन 16 अक्टूबर को किया गया। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने बताया कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के निर्देशों के अनुरूप अक्टूबर माह को साईबर सुरक्षा माह के रूप में मनाया जा रहा है। इसके अन्तर्गत आयोजित साईबर सुरक्षा क्विज में विद्यार्थियों ने बढ-चढ कर हिस्सा लिया। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि वर्तमान में साईबर अपराध नित्यप्रति बढते जा रहे हैं। इनसे बचाव के लिए और अपराधों की रोकथाम के लिए और ऐसे अपराधों के दुष्प्रभावों से बचने के लिए जागरुकता और सतर्कता जरूरी है। तभी हम स्वयं और अपने प्रियजनों को साईबर क्राईम का शिकार होने से सुरक्षित रख पाएंगे। कार्यक्रम आयोजन समिति में प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. बीएल जैन, डॉ. गिरधारीलाल शर्मा व डॉ. बलवीरसिंह चारण सम्मिलित हैं।

ऑनलाइन भाषण प्रतियोगिता में स्मिता कुमारी प्रथम व दिव्या भास्कर द्वितीय रही

'जागरूक जीवन सफल जीवन' विषय पर प्रतियोगिता आयोजित

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन में संचालित किये जा रहे सतर्कता एवं जागरुकता सप्ताह के अन्तर्गत आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में 30 अक्टूबर को 'जागरूक जीवन सफल जीवन' विषय पर ऑनलाइन भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता के संयोजक अभिषेक चारण एवं डॉ. सरोज राय ने बताया कि प्रतियोगिता की अध्यक्षता आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य एवं दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने की। प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि के शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बनवारीलाल जैन थे। इसमें प्रतिभागियों ने 'जागरूक जीवन सफल जीवन' विषय के अन्तर्गत स्वास्थ्य सम्बन्धी जागरुकता, कानूनी अधिकारों के प्रति जागरुकता, सड़क सुरक्षा सम्बन्धी नियमों के प्रति सतर्कता, स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरुकता, आत्मरक्षा के प्रति जागरुकता आदि उपविषयों पर अपने विचार रखे। निर्णायक मण्डल में डॉ. आभासिंह, डॉ. पुष्पा मिश्रा एवं डॉ. विनोदकुमार सैनी द्वारा प्रथम स्थान पर स्मिता कुमारी, द्वितीय स्थान पर दिव्या भास्कर तथा तृतीय स्थान पर तीन छात्राओं प्रीति राजपुरोहित, वंदना आचार्य एवं अभिलाषा स्वामी का चयन किया गया और चतुर्थ स्थान पर अमीषा पूनिया एवं पांचवें स्थान पर समान अंकों के आधार पर तीन छात्राओं प्रेमरानी शर्मा, ममता कंवर व राजनंदनी जैतमाल का चयन किया गया। अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि ऐसी प्रतियोगिताओं के आयोजनों से छात्राओं में क्रियाशीलता के साथ सामाजिक सरोकार विषयों के प्रति जागरुकता भी बढती है। ऐसे आयोजन देश एवं समाज की दशा एवं दिशा तय करते हैं। अंत में संयोजक अभिषेक चारण ने आभार ज्ञापित किया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह में शपथ ग्रहण कार्यक्रम

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में 26 अक्टूबर को सतर्कता जागरूकता सप्ताह के प्रथम दिन सतर्कता एवं जागरुकता को लेकर सभी विभागों के संकाय सदस्यों को आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य तथा सतर्कता जागरुकता सप्ताह के प्रभारी प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी द्वारा सबको शपथ दिलाई गयी। शपथ संयोजक श्वेता खटेड़ एवं प्रमोद ओला ने बताया कि इस दौरान सभी संकाय सदस्यों ने अपने प्रतिदिन के दैनिक जीवन में सतर्कता एवं जागरुकता के महत्त्व के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त की।

शपथ समारोह में सतर्कता जागरुकता सप्ताह के प्रभारी प्रो. बी. एल. जैन सहित डॉ. अमिता जैन, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. बलबीर सिंह, डॉ. सरोज राय, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारी शर्मा, डॉ. विष्णु कुमार, पंकज भटनागर, प्रगति चोरड़िया, अभिषेक शर्मा, अभिषेक चारण एवं अन्य संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

सतर्कता एवं जागरुकता रैली का आयोजन कर दिया जन-जन को संदेश

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन में संचालित किए जा रहे सतर्कता एवं जागरुकता सप्ताह के तहत 27 अक्टूबर को एक रैली का आयोजन कर लोगों को सतर्कता एवं जागरुकता सम्बन्धी संदेश दिया। रैली का प्रारंभ में शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य व दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने हरी झंडी दिखाकर परिसर से रवाना किया। रैली में सम्मिलित सभी कर्मचारियों ने संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकारों एवं स्वच्छता के प्रति जागरुकता तथा सड़क सुरक्षा नियमों एवं आत्मरक्षा के सम्बन्ध में विविध प्रकार के नारे लगाकर जनमानस को प्रेरित करने का काम किया। रैली के संयोजक डॉ. अमिता जैन एवं अभिषेक शर्मा ने बताया कि इस रैली में संस्थान के सभी संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

सतर्कता एवं जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन में संचालित किए जा रहे सतर्कता एवं जागरुकता सप्ताह के अंतर्गत आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भ्रष्टाचार निवारण के उपाय' विषय पर 28 अक्टूबर को ऑनलाईन राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। मुख्य वक्ता प्रो. त्रिपाठी ने बताया कि हमें संकल्प लेना होगा कि न तो खुद भ्रष्टाचारी बनेंगे और न ही भ्रष्टाचार की क्षीणधारा को विशालकाय दरिया में तब्दील होने देंगे। संगोष्ठी में प्रो. बनवारी लाल जैन ने सरकार द्वारा भ्रष्टाचार को रोकने के विभिन्न प्रयासों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। राष्ट्रीय संगोष्ठी में विद्यार्थी एवं संकाय सदस्यों की उपस्थिति रही। राष्ट्रीय संगोष्ठी का संचालन डॉ. विनोद कुमार सैनी ने किया। डॉ. मनीष भटनागर ने अंत में आभार ज्ञापित किया।

काल के कपाल पर होने जा रहा है एक नया हस्ताक्षर :

आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल ऑफ नेचुरोपैथी एंड योग

गरिमापूर्ण मानवीय जीवन जीने के समग्र चिंतन को परिपोषित करने वाले आचार्यीय उद्घोष की नव्य फलश्रुति ''आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल ऑफ नैचुरोपथी एंड योग'' जैन विश्वभारती संस्थान की प्रतिबद्धता में लक्षित होने जा रही है, जिसे शीघ्र ही लोकार्पित किया जाएगा-सम्पूर्ण मानवता को।

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं, राजस्थान, भारत सरकार द्वारा संस्थाओं के मूल्यांकन के लिए संस्थापित NAAC, बेंगुलुरु द्वारा 'A' Grade में संसूचित एक मान्य विश्वविद्यालय है, जिसे वर्ष 1991 में पूज्य गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी की संप्रेरणा से स्थापित किया गया था। इस दूरदर्शी संत ने प्राचीन ज्ञान के साथ आधुनिक विज्ञान के एकीकरण के लिए इस युगांतरकारी प्रयोग को स्फूर्त करने का आह्वान किया, जिसे उनके शिष्योत्तम शिष्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ और आचार्यश्री महाश्रमण ने क्षिप्रता प्रदान की। तीन दशकों की सुदीर्घ यात्रा के अनंतर यह संस्थान आज देश और विदेशों में प्राच्य विद्या; विशेष कर जैन विद्या एवं प्राकृत, अहिंसा तथा शान्ति अध्ययन और जीवन-विज्ञान तथा योग के क्षेत्र में उत्कृष्ट मानकों की संस्थापना करने में सफल हुआ है। इसकी सफलता की गाथा NAAC के अतिरिक्त अन्य संस्थाओं द्वारा ISO अभिप्रमाणन एवं विभिन्न पुरस्कारों द्वारा भी लक्षित हुई है।

अपने समय के सुविख्यात दार्शनिक आचार्यश्री महाप्रज्ञ, जिन्होंने हमेशा इस बात पर जोर दिया था कि प्रकृति की उपचार शक्तिमें मानव को सम्पूर्णता में नीरोग रखने की नैसर्गिक क्षमता विद्यमान होती है। उनका मानना था कि स्वास्थ्य न केवल शरीर को, बल्कि मन और आत्मा को भी समाहित करता है और केवल आज के दर्द या सुख को संबोधित नहीं करता है। व्यक्ति के सम्पूर्ण अस्तित्व और उसके दृष्टिकोण से प्रभावित होने वाले इस चिकित्सा-शास्त्र के प्रबल समर्थक थे आचार्यश्री महाप्रज्ञ, जिनकी चिंतनधारा को परिपुष्ट किया है उनके सुयोग्य शिष्य आचार्यश्री महाश्रमण ने। गुरुओं के प्रेरणा पाथेय को संग्रहीत कर संस्थान के वर्तमान कुलपति एवं सुविख्यात दर्शनविद शांतिशास्त्री प्रो. बच्छराज दूगड़ ने इस परियोजना को संकल्पना से मूर्त रूप देने में सफलता प्राप्त की है।

प्रस्तावित चिकित्सा महाविद्यालय के अंतर्गत BNYS (बैचलर ऑफ नेचुरोपैथी एंड योगिक साइंसेज) के संचालन के माध्यम से योग और प्राकृतिक चिकित्सा के अवधान में उत्कृष्टतापूर्ण शिक्षण प्रदान करने का संकल्पन किया गया है।

नेचुरोपैथी और योग में साढ़े पांच साल का मेडिकल डिग्री कोर्स, जिसमें साढ़े चार साल का मुख्य कोर्स और एक साल की अनिवार्य रोटेटरी इंटर्नशिप के समायोजन से यह पाठ्यक्रम संचालित होगा, जिसे भारत सरकार के आयुष-मंत्रालय द्वारा प्रस्वीकृति प्रदान कर दी गयी है एवं राजस्थान सरकार द्वारा अनापत्ति प्रमाण-पत्र शीघ्र ही निर्गत किय जाने की संभावना है।

इस पाठ्यक्रम के संचालन के लिए एक आधुनिक सुविधा-सम्पन्न विशाल भवन का निर्माण सम्पन्नता की ओर अग्रसर है। सौन्दर्य-बोध एवं कार्यशीलता की युति को संधारित करता यह भवन प्रकृति-सम्मत उपचार और योग की प्राचीन कला की सभी शाखाओं में ज्ञान प्रदान करेगा। विश्वविद्यालय का यह निर्णय है कि राष्ट्रीय और वैश्विक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इस संस्थान द्वारा सम्पूर्ण चिकित्सा पद्धति को समर्पित योग्य एवं कुशल चिकित्सकों को विकसित करना परम लक्ष्य रहेगा।

प्रस्तावित चिकित्सा महाविद्यालय प्राकृतिक चिकित्सा को समर्पित पेशेवर अकादमिक कार्यक्रम के संचालन के लिए एक सुनियोजित पाठ्यक्रम,

व्यापक नैदानिक प्रशिक्षण और अनुसंधान पद्धति के साथ अच्छी तरह से उन्मुख सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पहलुओं पर आधारित एक कठोर, व्यवस्थित प्रशिक्षण प्रदान करेगा। प्रस्तावित कार्यक्रम से ऐसे चिकित्सक तैयार होंगे, जो प्राकृतिक चिकित्सा में एक सम्मानित, पेशेवर के रूप में अपनी पहचान तो बनाएंगे ही, इस विश्वविद्यालय का सम्मान भी बढ़ाएंगे। यह चिकित्सा महाविद्यालय रोगियों के लिए प्रभावी और व्यक्तिगत उपचार योजना तैयार करने की उनकी क्षमता में गुणवत्तापूर्ण निरन्तरता को सुनिश्चित करेगा और साथ ही उन्हें उन मूल मूल्यों के साथ प्रतिध्वनित भी करेगा, जिनकी संस्थापना महान् आचार्यों ने की है। बुनियादी विज्ञान की समझ बेहतर नैदानिक प्रशिक्षण और अनुसंधान तथा विकास के दृष्टिकोण के साथ यह नव-संस्थान अपने चिकित्सालय के माध्यम से गरीबों और जरूरतमंदों को कम लागत में इलाज उपलब्ध कराने के आचार्यीय संप्रेरण को भी भूमि पर आविर्भूत करने हेतु प्रतिबद्ध है।

गुरु संप्रेरण : प्राकृतिक चिकित्सा और योग - एक शक्तिशाली वैकल्पिक चिकित्सा का उपक्रम

प्राकृतिक चिकित्सा शरीर की अपनी उपचार-क्षमता पर केन्द्रित जीवन-विज्ञान की एक शाखा है। साथ ही शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक स्तरों पर प्रकृति के रचनात्मक सिद्धान्तों के साथ सामंजस्य लाने की प्रणाली के आधार पर चिकित्सा की एक दवा-रहित प्रणाली के माध्यम से स्वस्थ जीवन का विज्ञान स्फूर्त करती है।

जीवन जीने के लिए महान् स्वास्थ्य प्रोत्साहक, रोग निवारक और उपचारात्मक एवं साथ ही पुनर्स्थापना की क्षमता की संवृद्धि को भी यह संबोधित है। यह शरीर को फिर से जीवन्त करने के लिए बढ़ावा देती है और शारीरिक तथा मानसिक क्षेत्र में एक अनुकूल आंतरिक तंत्र को विकसित करते हुए सक्षमता प्रदान कर अपनी स्वयं की उपचार-क्षमता को सुगम बनाकर समेकित स्वास्थ्य को पुनर्प्राप्त करने के कलानिष्ठ विज्ञान को समर्पित है। यह

व्यक्तियों को सर्वोत्तम संभव स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए आवश्यक जीवनशैली में बदलाव हेतु शिक्षित और सशक्तबनाने के विकल्प को संस्तुत करता है।

प्राकृतिक चिकित्सा के विचार को आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अभूतपूर्व विस्तार दिया, जो निःसंदेह नवोन्मेषी था। चिकित्सा का यह नया विज्ञान जन-जन को ''प्रकृति की ओर लौटने'' के लिए प्रेरित करता है, जिसका विस्तार शरीर और मन के बीच संतुलन बनाने और आत्म-ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेक्षाध्यान और योग का अभ्यास करने में आविर्भूत हुआ। इसे पूरा करने के लिए महान् आचार्य ने विभिन्न आयामों, साँस लेने के परिष्कृत उपक्रमों/व्यायाम, विश्राम के समुचित उपयोग आदि के सकारात्मक उपयोग को अन्तर्लीन किया था।

प्रेक्षाध्यान आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रणीत की एक नव्य तकनीक है, जिसका उद्देश्य किसी व्यक्तिकी मानसिक स्थिति को शुद्ध कर सकारात्मक दृष्टिकोण और व्यवहार में बदलाव लाना और व्यक्तित्व में समग्र परिवर्तन लाना है। यह अभ्यास न केवल शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण प्राप्त करने के लिए किया जाता है, बल्कि यह आध्यात्मिक खजाने की कुंजी भी है।

पूज्यवर के चिन्तन नवनीत को विश्वविद्यालय के जीवन-विज्ञान एवं योग विभाग द्वारा पिछले तीन दशकों में गति दी गयी है; अब मानव उपचार के क्षेत्र में इस नव-ज्ञान के उपयोग को केन्द्रित करने का संकल्प इस चिकित्सा महाविद्यालय के माध्यम से स्फूर्त हो रहा है।

संस्थागत प्रतिबद्धता : एक अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे का निर्माण

विश्वविद्यालय ने प्राकृतिक चिकित्सा और योग के लिए प्रस्तावित मेडिकल कॉलेज हेतु एक अत्याधुनिक बुनियादी ढांचा बनाने का फैसला किया है, जो अपने स्वयं के भवन में कार्य करेगा, जिसमें परामर्श कक्ष, अलग उपचार अनुभाग जैसी बाह्य रोगी विभाग सुविधाओं के प्रावधान होंगे। पुरुष और महिला योग हॉल, मैग्नेटोथैरेपी, मसाज-रूम, स्टीम-बाथ-रूम आदि की सुविधाएँ इस महाविद्यालय में लक्षित होंगी। इसमें पर्याप्त रिप्रोग्राफिक सुविधाओं के साथ एक समृद्ध पुस्तकालय, एनाटॉमी म्यूजियम, फिजियोलॉजी, बायोकेमिस्ट्री लैब, पैथोलॉजी और माइक्रोबायोलॉजी लैब और पर्याप्त संख्या में आधुनिक क्लास रूम होंगे।

प्रस्तावित मेडिकल कॉलेज के लिए सदस्यता कार्ड

एक विशेष प्रकार का सदस्यता कार्ड जारी किया जा रहा है। कोई भी व्यक्ति 1 लाख रुपये का अनुदान प्रदान कर यह कार्ड प्राप्त कर सकता है। इस कार्ड के धारकों को 10 वर्ष की अवधि के लिए प्रत्येक वर्ष 5 दिनों की प्राकृतिक-चिकित्सा का लाभ निःशुल्क प्रदान किया जाएगा तथा बुकिंग में भी प्राथमिकता दी जाएगी।

जैन गौरव के स्तम्भ

जैन ज्ञान की वृद्धि एवं सौंदर्य की वृद्धि के लिए संस्थान भवन में प्राच्यकाल में जैन गौरव रहे महापुरूषों के चित्र परिचय सहित लगाए गए हैं। इनमें राजा विक्रमादित्य, वीरचद राघवजी गांधी, आदिकवि पम्पा, दीवान टोडरमल, दानवीर भामाशाह, डा. विक्रम अम्बालाल साराभाई, किंग खारवेल, सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य, रानी अब्बाप्पा चौटा, चामुंडाराय, सम्राट सम्प्रति मौर्य, श्रीमद् राजचन्द्रा आदि के चित्रों को उनके जीवन-परिचय सहित उल्लेखित किया गया है। इस सबसे जहां विद्यार्थियों को बहुत कुछ सीखने को मिलेगा, वहीं प्रत्येक व्यक्ति को इनसे प्रेरणा भी प्राप्त होगी।

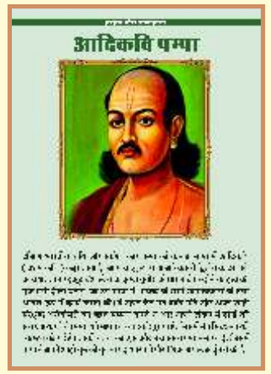

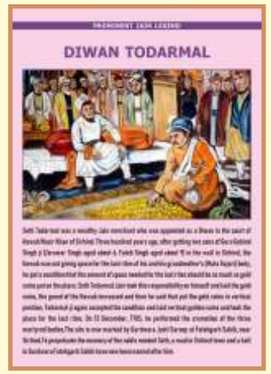

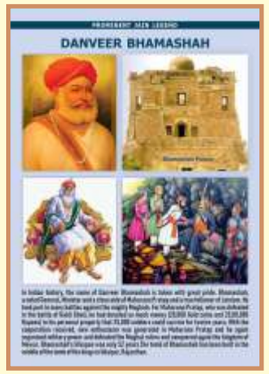

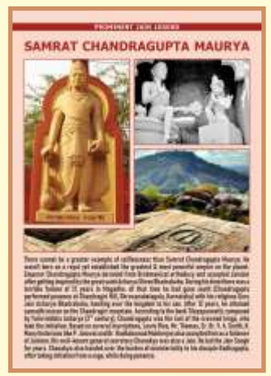

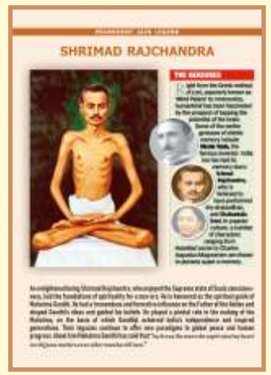

संस्थान में सौंदर्यवृद्धि व साज-सज्जा

संस्थान परिसर को सुन्दर व आकर्षक बनाने एवं विद्यार्थियों व आगन्तुकों में संस्थान के प्रति समझ को बढ़ाने के लिए कुछ अलग हट कर कदम उठाए गए हैं। इनमें परिसर में सौंदर्यकरण के तहत मार्बल चिप्स एवं पेबल्स के रंग-बिरंगे छोटे पत्थरों से 'जैन विश्वभारती संस्थान', 'जय जय श्री महाश्रमण', 'परस्परोपग्रहो जीवानाम' आदि नामों का शानदार अंकन तथा संस्थान के लोगो, प्राकृत ओम् व ह्रीं का अंकन अति सुन्दर तरीके से चित्रांकन करके परिसर के सौंदर्य में वृद्धि की गई है।

7 Days Workshop on Preksha Meditation: A Way to Inner Happiness

The Department of Jainology and Comparative Religion and Philosophy organized the seven days national workshop on Preksha Meditation: A Way to Inner Happiness with the presence of Preksha Trainer Vimal Gunecha, Delhi and Vijaya Jain, Jaipur at Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun from Nov.11, 2021 to Nov.18, 2021. The inaugural session had a pious start with the invoking the blessings of Lord Mahaveer. Mumukshu sisters enchanted Navkar Mantra in a melodious voice. Dr. Samani Amal Prajna ji welcomed all the distinguished guests and highlighted the aims and objectives of the Workshop. The trainers were warmly welcomed with bouquets, shawl, kit and memento. Head of the department of Jainology and Comparative Religion and Philosophy, Prof. Samani Riju Prajna ji was the main speaker of the workshop. She enlightened that Preksha Meditation brings manifold benefits for the ordinary practitioner, be they children, youth, adults or the aged, across professions, including students, teachers, workers, housewives, traders and businesspersons, scientists, doctors, corporate executives and others. These benefits may be distinguished into the physical, emotional, mental, behavioral and spiritual forms as in Preksha Meditation there is an emphasis on holistic healing and wellness.

For the layperson, it must be clarified first as to the origin of the term "Preksha" itself. The word Preksha is derived from the two words "Pra " and "lksa" which together mean "to observe deeply". There are eight primary techniques of Preksha Meditation and four secondary techniques. The primary techniques are Kayotsarga, Antaryatra, Leshya Dhyaan, Shvaas Preksha, Sharir Preksha, Anupreksha, Bhavna, and Chaitanya Kendra Preksha. In the secondary techniques fall Mantra chanting, mudras, yoga asanas and pranayama.

After the wonderful lecture series of Prof. Samani Riju Prajna ji, Prof. Samani Amal Prajna ji, gave thanksgiving notes to the trainers, organizers and the audience for organizing and attending the workshop .

Lecture on 'Scientific Background of Jainism'

Department of Jainology and Comparative Religion and Philosophy organized the lecture on 'Scientific Background of Jainism' with the presence of keynote speaker Naresh Chopra at Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun on 11.10.2021

The inaugural session had a pious start with the dignitaries invoking the blessings of Maa Saraswati. Mumukshu sisters enchanted Mangalacharan in a melodious voice . Head of the Jainology and Comparative Religion and Philosophy Department Prof. Samani Riju Pragya welcomed all the distinguished guests and highlighted the aims and objectives of the lecture. The guests were warmly welcomed with bouquets, shawl, kit and memento.

Naresh Chopra said that while common belief about religions is that it focuses on the art of living, one can seldom think that a religion can be so scientific in all dimensions. And Jainism is the answer to that. It is a philosophy that deals with multifaceted subjects such as microbiology, cosmology, physiology, physics, psychology, medicine and much more. As we get more and more logical and scientifically driven in our daily lives, it is important to take a step back and appreciate Jainism for its compatibility, with modern science. After his wonderful lecture , a Question-Answer session was held related to the topic . Dr. Samani Amal Prajna, Assistant Professor of our department gives thanksgiving notes to the expert, organizers and the audience for organizing and attending the lecture .

सात दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय प्राकृत भाषा कार्यशाला

प्राकृत को पुनः जनभाषा बनाने के लिए प्रशिक्षण जरूरी- प्रो. भट्टाचार्य

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के तत्त्वावधान में प्राकृत भाषा विषयक सप्तदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय कार्यशाला (23-29 अगस्त, 2021) का आयोजन किया गया, जिसके उद्घाटन सत्र में विषय विशेषज्ञ पश्चिम बंगाल के शांतिनिकेतन विश्वभारती विश्वविद्यालय के प्रो. जगतराम भट्टाचार्य ने प्राकृत भाषा के उद्भव और विकास यात्रा के बारे में बताते हुए उसकी समृद्ध साहित्य रचना और आज के संदर्भ में उसके महत्त्व के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री ने कार्यशाला के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आज प्राकृत भाषा को पुनः जनोपयोगी बनाने की आवश्यकता है। इससे पूर्व डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने अतिथियों व प्रतिभागियों का स्वागत किया। कार्यशाला का शुभारम्भ समणी प्रणव प्रज्ञा के मंगलाचरण से किया गया। कार्यशाला में देश-विदेश के 146 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। इस कार्यशाला में सात दिनों तक प्रतिदिन दो घंटे प्राकृत की विशेष कक्षाओं का आयोजन किया गया।

भारतीय संस्कृति के लिए जीवनदायिनी है- प्राकृत भाषा

कार्यशाला के समापन पर जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. धर्मचंद जैन ने कहा कि प्राकृत भाषा भारतीय भाषाओं का ताज है। यह भाषा जीवित ही नहीं जीवनदायिनी भी है। भारतीय संस्कृति को जीवित रखने के साथ-साथ इस भाषा ने उसे आगे भी बढाया है। उन्होंने प्राकृत भाषा एवं साहित्य के विषय में कहा कि वर्तमान समय में अनेक विद्वान् हैं, जो प्राकृत भाषा में अपनी साहित्य-सर्जना करते हुए इस भाषा का संरक्षण एवं संवर्द्धन कर रहे हैं।

कार्यशाला के विषय-विशेषज्ञ विश्व भारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन, पं. बंगाल के प्रो. जगतराम भट्टाचार्य ने प्राकृत के प्रशिक्षण पर जोर देते हुए कहा कि यदि इस भाषा के प्रशिक्षण के लिए प्राच्यविद्या संस्थान प्रयास करें, तो यह भाषा जनभाषा के रूप में पुनः स्थापित हो सकती है। अपने सात दिवस के प्रशिक्षण-काल में उन्होंने प्राकृत भाषा की बारीकियों से प्रशिक्षणार्थियों को अवगत करवाया। कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए जैविभा संस्थान के प्रो. दामोदर शास्त्री ने प्राकृत के साथ-साथ संस्कृत सीखने पर भी बल दिया तथा कहा कि संस्कृत के बिना प्राकृत को सीखना असंभव है। उन्होंने अनेक उदाहरणों द्वारा प्राकृत व संस्कृत की परस्पर पूरकता को स्पष्ट किया।

कार्यशाला के करीब 10 प्रतिभागियों ने अपने अनुभवों को साझा किया, जिसमें कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के प्रति आभार ज्ञापित करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन होते रहने से प्रशिक्षुओं को लाभ मिलने के साथ-साथ भाषा का उत्थान भी संभव होता है। कार्यक्रम का प्रारम्भ डॉ. अरिहन्त जैन के मंगलाचरण से किया गया। स्वागत वक्तव्य डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने प्रस्तुत किया। अंत में कार्यशाला के संयोजक डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

संस्कृत दिवस पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन

विश्व की श्रेष्ठतम वैज्ञानिक व प्रामाणिक भाषा है संस्कृत- प्रो. मिश्र

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के नीति एवं दर्शन शास्त्र केन्द्र के पूर्व निदेशक प्रो. सुरेन्द्र मोहन मिश्र ने कहा कि संस्कृत विश्व की सर्वश्रेष्ठ भाषा है। यह सर्वाधिक प्रामाणिक व वैज्ञानिक होने के साथ व्याकरणनिष्ठ भाषा है। वे प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के तत्त्वावधान में 21 अगस्त को संस्कृत दिवस के अवसर पर आयोजित विशिष्ट व्याख्यान में मुख्य वक्ता के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान-विज्ञान परम्परा अत्यन्त समृद्ध और गौरवशाली है तथा इस परम्परा को आगे बढाने व संरक्षित करने में संस्कृत के साथ ही प्राकृत भाषा का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री ने कहा कि भारत के गौरव की रक्षा और प्रतिष्ठा के दो आधार हैं, संस्कृत भाषा और संस्कृति। संस्कृत साहित्य से ही भारतीय संस्कृति को जाना जा सकता है। वेद, उपनिषद, स्मृति, पुराण, रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों में ही भारतीय संस्कृति का सार निबद्ध है। कार्यक्रम का शुभारंभ केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के सहायक आचार्य डा. मनोज श्रीमाल के मंगलाचरण द्वारा हुआ। डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा द्वारा सभी अतिथियों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। कार्यक्रम में सम्पूर्ण देश से लगभग 45 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

मासिक व्याख्यानमाला

'भारत का गौरव : प्राकृत भाषा एवं साहित्य' व्याख्यानमाला में विद्वानों की प्रस्तुतियां

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित ''भारत का गौरव : प्राकृत भाषा और साहित्य'' विषयक मासिक व्याख्यानमाला का प्रारम्भ किया गया, जिसमें देश के प्रख्यात विद्वानों ने अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए। ''प्राकृत वाङ्मय की सांस्कृतिक महत्ता व उपयोगिता'' विषयक प्रथम व्याख्यान 31 जुलाई को ऑनलाईन प्रस्तुत किया गया। इस व्याख्यान के मुख्य वक्ता केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के जैनदर्शन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. श्रीयांस कुमार सिंघई थे।

प्राकृत वाङ्मय की सांस्कृतिक महत्ता एवं उपयोगिता पर बोलते हुए प्रो. सिंघई ने प्राकृत वाङ्मय की आज के संदर्भ में उपयोगिता सिद्ध करने वाले अनेक तथ्यों पर प्रकाश डाला। व्याख्यान का प्रारम्भ डॉ. मनीषा जैन के मंगलाचरण से हुआ। विभाग की सह आचार्या डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। अन्त में प्रो. दामोदर शास्त्री ने अध्यक्षीय वक्तव्य प्रदान किया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। इस कार्यक्रम में 65 प्रतिभागियों ने सहभागिता की ।

प्राकृत के विशाल ग्रंथों में झलकती है भारतीय संस्कृति

मासिक व्याख्यानमाला में सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. प्रेमसुमन जैन ने 28 अगस्त को अपने विशेष व्याख्यान में कहा कि प्राकृत भाषा भारतीय संस्कृति का आधार है। इस भाषा में सृजित विशाल ग्रंथों की परम्परा में हम अपनी संस्कृति को प्रत्यक्ष देख सकते हैं। उन्होंने प्राकृत की तुलना अन्य भारतीय भाषाओं के साथ करते हुए प्राकृत को अति प्राचीन भाषा बताया। प्राकृत व संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री ने प्राकृत को सर्वजन सुलभ बनाने की आवश्यकता बताई तथा कहा कि इसके लिए व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार आवश्यक है। कार्यक्रम डॉ. सुमत कुमार जैन के मंगलाचरण से प्रारम्भ किया गया तथा डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। इस विशेष व्याख्यान में देश-विदेश के 90 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया।

प्राकृत एवं अपभ्रंश चरित साहित्य पर प्रकाश

मासिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत ''प्राकृत एवं अपभ्रंश चरित साहित्य'' विषयक तृतीय व्याख्यान 25 सितम्बर को प्रस्तुत किया गया। मुख्य वक्ता गुजरात विश्वविद्यालय के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग की पूर्व विभागाध्यक्षा प्रो. सलोनी जोशी ने चरित साहित्य की परिभाषा एवं उत्पत्ति बताते हुए उसकी विशेषताओं का विस्तृत विवेचन किया। उन्होंने अपभ्रंश के प्रमुख चरित काव्य स्वयंभू विरचित रिट्ठनेमिचरिउ पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए उसकी कथावस्तु एवं अन्य विशेषताओं के विषय में सभी प्रतिभागियों को विस्तार पूर्वक बताया। कार्यक्रम का शुभारंभ विभाग की छात्रा सुनीता कोटेचा के मंगलाचरण से हुआ तथा स्वागत विभाग की सह-आचार्या डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने किया।

खारवेल अभिलेख में भारतीय संस्कृति की झलक

चतुर्थ मासिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 30 अक्टूबर को प्राकृत शिलालेखों का सामाजिक अवदान (सम्राट् अशोक एवं खारवेल के शिलालेखों के विशेष सन्दर्भ में) विषयक चतुर्थ व्याख्यान के मुख्य वक्ता मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन ने कहा कि अशोक और खारवेल के शिलालेखों का सामाजिक दृष्टि से अत्यधिक महत्त्व है। सम्राट् अशोक ने अपने अभिलेखों में जो उपदेशात्मक संदेश दिये हैं, वो आज भी प्रासंगिक हैं। अशोक ने अपने अभिलेखों में जीवदया, बड़ों का सम्मान, दान, धार्मिक अनुष्ठान एवं लोककल्याण के कार्यों की चर्चा की है। खारवेल के अभिलेखों के विषय में बताते हुए प्रो. जैन ने कहा कि 18 पंक्तियों के इस अभिलेख में भारतीय संस्कृति की झलक देखी जा सकती है। भारतवर्ष का नाम भी सर्वप्रथम इसी अभिलेख में प्राप्त होता है, ऐसा माना जाता है। कार्यक्रम का शुभारम्भ विभाग के छात्र प्रासुक जैन के मंगलाचरण से हुआ तथा स्वागत विभाग की सह आचार्या डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने किया। अन्त में कार्यक्रम के संयोजक डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। इस कार्यक्रम में 55 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

जैन दर्शन का मूल आधार है प्राकृत भाषा का साहित्य- प्रो. कमलेश

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रो. कमलेश कुमार जैन ने कहा है कि जैन दर्शन का मूल आधार प्राकृत दार्शनिक साहित्य को माना जाता है। दर्शन ही हमारी भारतीय संस्कृति का मूल है। जैनागमों में दर्शन की चर्चा अनेक स्थानों पर प्राप्त होती है। दर्शन के मूल तत्त्वों में चारित्र और सम्यक् दृष्टि को माना जाता है। वे यहां जैन विश्वभारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय के प्राकृत व संस्कृत विभाग के तत्त्वावधान में 24 दिसम्बर को आयोजित मासिक व्याख्यानमाला के तहत 'प्राकृत दार्शनिक साहित्य' विषय पर अपना विशेष व्याख्यान प्रस्तुत कर रहे थे। उन्होंने प्राकृत भाषा का अर्थ जनभाषा के रूप में बताया तथा प्राकृत भाषा रचित आगमों का महत्त्व प्रतिपादित किया। दर्शन के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए प्रो. जैन ने कहा कि वस्तु के स्वभाव को प्रकट करना ही दर्शन है और दर्शन ही जीवन की कला है। दुःखों से छुटकारा दिलवाना ही दर्शन का उद्देश्य है। जैन दर्शन के अनुसार तत्त्वज्ञान के साथ-साथ चारित्र के होने पर ही मोक्ष प्राप्त हो सकता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. दामोदर शास्त्री ने प्राकृत व दार्शनिक साहित्य के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए वर्तमान संदर्भ में दर्शन की प्रासंगिकता और संस्कृत एवं प्राकृत के समन्वय पर भी बल दिया। कार्यक्रम का प्रारम्भ मंगलाचरण से किया गया। स्वागत वक्तव्य डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने प्रस्तुत किया। संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया।

'आचार्य महाप्रज्ञ का प्राकृत साहित्यः समाज को एक अनूठी देन' पर व्याख्यान

आचार्य महाप्रज्ञ ने आर्ष प्राकृत व आर्ष व्याकरण को उजागर किया- प्रो. कल्पना जैन

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के तत्त्वावधान में 27 नवम्बर को 'भारत का गौरवः प्राकृत भाषा एवं साहित्य' विषयक मासिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत आयोजित पंचम व्याख्यान के रूप में श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली के प्राकृत भाषा विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. कल्पना जैन ने 'आचार्य महाप्रज्ञ का प्राकृत साहित्यः समाज को एक अनूठी देन' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। मुख्य वक्ता प्रो. कल्पना जैन ने आचार्य महाप्रज्ञ को शब्दों का जादूगर बताया तथा कहा कि उन्होंने आगम साहित्य भाषा और शब्दावली पर बहुत काम किया हुआ है। उन्होंने आगमों के सम्पादन का चुनौतीपूर्ण कार्य करके दिखाया। सम्पादन कार्य में आई विभिन्न समस्याओं, अक्षरों व शब्दों का समाधान भी उन्होंने प्रस्तुत किया। प्राकृत भाषा को लोकभाषा माना जाता है, क्योंकि लोकभाषा के बहुत से शब्द प्राकृत में समाहित हो गए, जिन्हें सूक्ष्म और पारखी सम्पादकीय दृष्टि से सामने लाया गया। उन्होंने वेदों की छंदस् भाषा का उल्लेख करते हुए प्राकृत को वैदिक भाषा के समकक्ष बताया तथा कहा कि जब श्रुति को लिखित वेदों का रूप दिया गया तो उनमें बोलचाल की भाषा के शब्दों का समावेश भी हो गया। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अनुपलब्ध प्राकृत व्याकरण के नियमों की जानकारी दी। आगमों का व्याकरण प्राचीन नियमों में सम्बद्ध है। प्रो. जैन ने बताया कि आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ व सहयोगियों ने आगम के सम्पादन के महत्ती कार्य को पूर्ण किया। इसमें उन्होंने आर्ष व्याकरण और आर्ष प्राकृत के बारे में बताया।

प्राकृत व संस्कृत : परस्पर सहयोगी भाषाएं

डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने इस अवसर पर बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ ने पहली बार प्राकृत भाषा में धाराप्रवाह व्याख्यान देकर सबको अचम्भित कर दिया था। व्याख्यान कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री ने कहा कि प्राकृत एक सहज भाषा है, प्रकृतिदत्त है और संस्कृत को बनाया गया है। संस्कृत में व्याकरण नियमों की बहुतायत कर दी गई है। आधुनिक संस्कृत पाणिनी के व्याकरण पर आधारित है, जिसे व्याकरण का पूरा ज्ञान है, वहीं संस्कृत बोल व लिख सकता है, जबकि प्राकृत को सहज ही बोला जा सकता है। यह सीधी व सरल भाषा है। उन्होंने कहा कि प्राकृत वाले के लिए संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है। दोनों भाषाओं का साथ जरूरी है। संस्कृत वालों को प्राकृत पढनी चाहिए और प्राकृत वालों का संस्कृत का अध्ययन अवश्य करना चाहिए।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। कार्यक्रम में अरिहंत कुमार जैन, प्रो. जयपाल भिवानी, मनोज रॉय, प्रियंका गुप्ता, पी.के. शीशधरण, जयकुमार उपाध्याय, शिल्पा घोष, राजू दूगड़, सुमत कुमार जैन, मीनू स्वामी, सुलेख जैन, नीरज कुमार, जयंत शाह, ममता शर्मा, आयुषी शर्मा, पवित्र जैन, प्रेमकुमार सुमन, रजनीश गोस्वामी आदि उपस्थित रहे। मंगलाचरण डॉ. आलोक कुमार जैन ने किया।

लोकतंत्र के आदर्शों व मूल्यों को आधार बनाकर समाज सेवा एवं समाज कल्याण के लिए समर्पित हों सामाजिक संस्थाएं- प्रो. द्विवेदी

राष्ट्रीय समाज कार्य सप्ताह का आयोजन

संस्थान में (15-21 अगस्त) कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के संरक्षण तथा मार्गदर्शन में समाज कार्य विभाग के तत्त्वावधान में आयोजित किए जा रहे दूसरे राष्ट्रीय समाज कार्य सप्ताह का शुभारम्भ ऑनलाइन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता एनएपीएसडब्लूआई के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. आरपी द्विवेदी ने उच्च शिक्षा में समाज कार्य विभाग की शुरुआत पर चर्चा करते हुए बताया कि समाज कार्य विभाग तथा सामाजिक कल्याण की संस्थाएं लोकतंत्र के आदर्शों एवं मूल्यों को आधार बनाकर समाज सेवा एवं समाज कल्याण के लिए अपनी भूमिका का निर्वाह कर सकती हैं। यदि विभाग समाज कार्य करना अपना मुख्य दायित्व मानें, तो इस क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं। इस क्षेत्र में वैज्ञानिक सोच विकसित कर सहज रूप से समाज कार्य को दिशा एवं गति दी जा सकती है। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य में सामाजिक उत्थान एवं कल्याण को सर्वोपरि मानने को स्वयंसेवी संस्थाओं और समाज कार्य विभाग का दायित्व बताया। कार्यक्रम के शुरुआत में विभाग की सहायक आचार्या एवं कार्यक्रम संयोजिका डॉ. पुष्पा मिश्रा ने इस सप्ताह के कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की। अंत में एनएसएस इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने आभार व्यक्त किया।

मानसिक स्वास्थ्य सुधार के प्रति शोध एवं समाज सेवा मुख्य

द्वितीय राष्ट्रीय समाज कार्य सप्ताह के चौथे दिन ई-वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इस ई-वर्कशॉप में मुख्य बिंदु मानसिक स्वास्थ्य एवं उसमें सुधार पर बोलते हुए मुख्य वक्ता केन्द्रीय विश्वविद्यालय राजस्थान के समाज कार्य विभाग के सह-आचार्य डॉ. शुभाशीष भाद्रे ने बताया कि वर्तमान परिदृश्य में मानसिक स्वास्थ्य की परिस्थितियों को समझना एवं इस क्षेत्र में कार्य करना समाजसेवी संस्थाओं तथा उच्च शिक्षा अध्ययन की संस्थाओं के मुख्य आधार होना चाहिए। बदलती परिस्थितियों के अनुरूप अपने आप को अनुकूलन करके मानसिक स्वास्थ्य को सही रखने शोध एवं समाज सेवा का आधार होना चाहिए। अंत में डॉ. विकास शर्मा ने आभार ज्ञापित किया।

सामुदायिक स्वास्थ्य में प्रमुख आधार बने आयुर्वेद चिकित्सा

संस्थान कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में आयोजित ऑनलाईन द्वितीय राष्ट्रीय समाज कार्य सप्ताह में नामिका चर्चा में मुख्य विषय 'सामुदायिक स्वास्थ्य' में मुख्य वक्ता राजकीय चिकित्सालय के आयुर्वेद चिकित्सक डॉ. विनय शर्मा ने बताया कि सामुदायिक स्वास्थ्य समाज उत्थान का मुख्य आधार है और इसके लिए आयुर्वेद चिकित्सा के प्रति समाज में जागरूकता पैदा करने का दायित्व सामाजिक संस्थाओं एवं निकायों को निभाना चाहिए। उन्होंने सामुदायिक स्वास्थ्य की दिशा में आयुर्वेद की हजारों सालों की शोध का हवाला देते हुए इसे सबसे बेहतरीन पद्धति बताया।

कोविड चुनौतियों से सामना के लिए संस्थाएं दायित्व निभाएं

'कोरोना से उत्पन्न सामाजिक चुनौतियां' विषय पर हुए व्याख्यान में मुख्य वक्ता स्कूल ऑफ सोशल वर्क उदयपुर के सह-आचार्य डॉ. लालाराम जाट ने बताया कि वर्तमान में उभरी कोरोना की वैश्विक समस्या ने कई नई चुनौतियों को जन्म दिया है और उनसे सामाजिक जीवन प्रभावित हुआ है। अतः समाज कार्य से सम्बन्धित संस्थाओं का दायित्व है कि वे इस दिशा में अपनी सकारात्मक भूमिका का निर्वाह कर समाज को इन चुनौतियों से लड़ने के लिए सक्षम बनाने का प्रयास करें।

दूसरे राष्ट्रीय समाज कार्य सप्ताह का समापन

संस्थान कुलपति प्रोफेसर बच्छराज दूगड़ के निर्देशन तथा संरक्षण में समाज कार्य विभाग द्वारा 15 से 21 अगस्त 2021 को आयोजित हो रहे दूसरे राष्ट्रीय समाज कार्य सप्ताह के समापन सत्र के मुख्य वक्ता श्योजीराव विश्वविद्यालय बड़ोदरा के समाज कार्य विभाग के प्रोफेसर अंकुर सक्सैना ने बतलाया कि समाज सेवा मानव जीवन का सर्वोपरि उद्देश्य होना चाहिए और इस लक्ष्य को प्रभावी बनाने में समाज कार्य संस्थाएं महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करें तो समाज कल्याण एवं समाज सेवा को बढ़ावा मिल सकता है। सत्र का संचालन विभाग की सहायक आचार्य डॉ. पुष्पा मिश्रा ने किया। कार्यक्रम में प्रो. वीणा द्विवेदी, डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़, डॉ प्रगति भटनागर, डॉ विकास शर्मा, बलबीर सिंह आदि के साथ अनेक शोधार्थी एवं विद्यार्थी भी शामिल हुए ।

विश्व एड्स दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

विश्व एड्स दिवस के अवसर पर संस्थान के समाज कार्य विभाग में 1 दिसम्बर को जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में सहायक आचार्य डॉ. विकास शर्मा ने एच.आई.वी. एवं एड्स से जुड़ी हुई भ्रांतियों को दूर करने के लिए समाज में जागरुकता पर प्रकाश डाला। एड्स नियंत्रण कार्यक्रम एनएसीपी-4 (नेशनल एड्स कंट्रोल प्रोग्राम-4) के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी। उन्होंने एच.आई.वी. या एड्स से पीड़ित तथा प्रभावित लोगों के साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव न किए जाने पर बल दिया तथा इस बीमारी के कलंक होने और भेदभाव किए जाने की भावना को समाज से मिटाने पर जोर दिया। कार्यक्रम में समाज कार्य विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ. पुष्पा मिश्रा ने कहा कि एड्स नियंत्रण के लिए भारत के प्रत्येक राज्य में संस्थाएं स्थापित हैं। ये संस्थाएं एड्स नियंत्रण और जागरुकता के लिए बहुत प्रयास कर रही है। इस क्षेत्र में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका भी अहम है। कार्यक्रम में कुंजन शर्मा, मीतू शाहा ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विकास शर्मा ने किया।

बहुपक्षीय शिक्षा प्रक्रिया में शांति की शिक्षा महत्त्वपूर्ण आयाम- प्रो. श्रीवास्तव

'शांति शिक्षा की गुणवत्ता व राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' विषय पर एक दिवसीय वेबिनार

प्रो. आशीष श्रीवास्तव
डीन एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग
महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
मोतिहारी, बिहार

संस्थान में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के संरक्षण एवं निर्देशन में अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के विशेष उपलक्ष्य में 'शांति शिक्षा की गुणवत्ता व राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' विषय पर एक दिवसीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार में मुख्य अतिथि महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी बिहार के शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष व डीन प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय संस्कृति एवं मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने के साथ-साथ विद्यार्थी को एक संकाय से जुड़े रहने के स्थान पर अनेक विकल्पों के चयन की पद्धति लागू करने का प्रयास किया जा रहा है, जो कि काफी उपयोगी होगा। उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि शिक्षा एक बहुपक्षीय प्रक्रिया है, जिसमें शांति की शिक्षा भी एक महत्त्वपूर्ण आयाम है।

वेबिनार के विशिष्ट अतिथि महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी, बिहार के गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग के डॉ. जुगल किशोर दाधीच ने कहा कि शांति की शिक्षा हर प्रकार की समस्या का हल खोजने का प्रभावी माध्यम होती है। अतः अहिंसा एवं शांति की शिक्षा सार्वभौमिक शिक्षा है, जिसका अध्ययन एवं अध्यापन काफी महत्त्वपूर्ण आयाम सिद्ध हो सकता है। इससे व्यक्तिगत स्तर से लेकर अंतरर्राष्ट्रीय स्तर की समस्याओं का समाधान सहज रूप में संभव हो सकता है। प्रारंभ में अहिंसा व शांति विभाग की सह आचार्य डॉ. लिपि जैन ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा कार्यक्रम का संयोजन किया। वेबिनार का विषय परिचय डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ ने प्रस्तुत किया। वेबिनार में विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल धर, प्रो. बीएल जैन, डॉ. अमिता जैन, डॉ. पुष्पा मिश्रा, डॉ. आभा सिंह, डॉ. बलबीर सिंह, डॉ. विनोद सिहाग आदि संकाय सदस्यों के अलावा संस्थान के विभिन्न शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के साथ-साथ केंद्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी के अनेक विद्यार्थी तथा शोधार्थी भी जुड़े रहे।

डॉ. जुगल किशोर दाधीच
सह-आचार्य
गांधीवादी और शांति विभाग
महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी, बिहार

गांधी दर्शन की वैश्विक प्रासंगिकता पर व्याख्यान आयोजित

अन्याय के विरोध में विश्व ने अपनाया गांधी का सत्याग्रह- प्रो. दाधीच

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा के पूर्व कुलपति प्रो. नरेश दाधीच ने कहा है कि जिन आधुनिक विचारकों के बारे में पूरे विश्व में सबसे अधिक लिखा गया, उनमें महात्मा गांधी सर्वोपरि हैं। गांधी की विचारधारा पर सबसे अधिक शोध कार्य भी किया गया है। उनका समय 'गांधी युग' के तौर पर देखा जाता है। वे यहां संस्थान के सेमिनार हॉल में 24 दिसम्बर को आयोजित व्याख्यान के तहत 'गांधी दर्शन की वैश्विक प्रासंगिकता' विषय पर बोल रहे थे। उन्होंने विश्व को गांधी के अवदान के बारे में बताया कि 'सत्याग्रह' का तरीका महात्मा गांधी ने खोजा था। इससे पूर्व 'निष्क्रिय प्रतिरोध' के रूप में विरोध प्रदर्शन किया जाता था, लेकिन उसमें सत्य एवं अहिंसा का समावेश नहीं था। सत्याग्रह में केवल सत्य के लिए अहिंसक आग्रह सम्मिलित होता है। इसमें साध्य के रूप में सत्य होता है और साधन के रूप में अहिंसा का प्रयोग किया जाता है। साथ ही इसमें साध्य और साधन अपरिवर्तनीय रहते हैं। महात्मा गांधी ने सत्याग्रह की 14 शर्तें तय की थीं और उसके लिए एक दर्जन से अधिक तरीके भी बताए थे। व्यक्तिगत लाभ के लिए कभी सत्याग्रह नहीं किया जा सकता है। सत्याग्रह केवल अन्याय का विरोध करने और सत्य के लिए अहिंसा के रूप में अपनाया जाता है। महात्मा गांधी के लिए अफ्रीका में कहा गया था कि जब तक

ऐसे आदमी रहेंगे, तब तक मानवता की रक्षा होती रहेगी। गांधी के बाद उनका सत्याग्रह पूरी दुनिया में प्रचलित हो गया है। सत्याग्रह भारत की तरफ से दुनिया को देन है। इसके अलावा भारत की देन केवल धर्म को माना जाता रहा है, जो कि रिलीजन की तरह से बंधन नहीं है, बल्कि वह आध्यात्मिक है, वह व्यक्ति को स्वतंत्रता प्रदान करता है। 'धर्म' शब्द की खोज विश्व को अद्वितीय है। गांधी के सत्याग्रह का विश्व में अन्याय के विरोध में प्रयोग राजनीति में शुरु हुआ है। व्याख्यान के प्रारम्भ में प्रो. नलिन के. शास्त्री ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया और अंत में प्रो. अनिल धर ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, डॉ. विनोद कस्वां, डॉ. पुष्पा मिश्रा, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. विकास शर्मा, आर.के. जैन आदि उपस्थित थे।

अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस पर गांधी की प्रांसगिकता बताई

संस्थान के अहिंसा एवं शान्ति विभाग में 01 अक्टूबर को अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल धर ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि वर्तमान समय में गांधी-विचारों की प्रासंगिकता उतनी ही उपादेय है जितनी कि पूर्व में थी। आज प्रत्येक व्यक्ति समस्याओं से ग्रस्त है। समस्याएं उसके आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक आयामों से जुड़ी हैं। ये समस्याएँ व्यक्ति की विकास यात्रा में बाधाओं के रूप में आती है, इसलिए हमें किसी भी क्षेत्र में विकास करना है तो गांधी के सिद्धान्तों पर चलना ही पड़ेगा। महात्मा गांधी ने कहा था कि व्यक्ति अपने जीवन को संयम पूर्वक जिये और हमेशा सत्य और ईमानदारी के मार्ग पर चले तो कभी भी दुविधाएं उसके सामने नहीं आयेगीं। विभाग के सहायक आचार्य डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने गांधी के जीवन पर अपने विचार रखते हुए कहा कि सादगी, अनुशासन, संयम, सहिष्णुता, अपरिग्रह, सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, सत्याग्रह, ट्रस्टीशिप, ब्रह्मचर्य, स्वराज आदि के सिद्धान्त इस काल में हीं नही वरन् भविष्य में भी मानव कल्याण के लिए उपयोगी होंगे। वर्तमान में भारत की सरकारें ही नहीं विश्व के अनेक देश सौ वर्ष बाद भी गांधी के सिद्धान्तों पर चलने के लिए अनेक कार्यक्रम चला रहे हैं। विभाग की छात्रा मनीषा कंवर ने गांधी का भजन 'रघुपति राघव राजा राम' गाया, छात्रा रूखसाना बानो ने गांधी और दूसरे धर्मों के प्रति उनकी आस्था पर विचार रखे।

कार्यक्रम का संचालन विभाग की सहायक आचार्य डॉ. लिपि जैन ने किया। उन्होंने कहा कि गांधी को जानने व समझने के लिए गांधी के विचारों को अपने जीवन में उतारना पड़ेगा, तभी समाज व देश में अराजकता व हिंसा कम हो सकती है। गांधी साहित्य और जीवन पर अनेक शोध कार्य हो रहे हैं। ये शोध कार्य ही गांधी के सिद्धान्तों को आगे बढ़ाने में सहयोग करेंगे। कार्यक्रम में विभाग की छात्राएं रूखसाना, मुस्कान बानो, रूबिना, रेणु कंवर, लक्ष्मी भी उपस्थित रहीं। अन्त में विभाग की छात्रा जयश्री जांगीड़ ने आभार ज्ञापन किया।

छात्रा कल्पिता ने जीता राज्यस्तरीय योगासन में कांस्य पदक

संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग की स्नातकोत्तर छात्रा कल्पिता सोलंकी ने नेशनल योगासन स्पोर्ट्स फैडरेशन के तत्त्वावधान में आयोजित राज्यस्तरीय योगासन स्पोर्ट्स चैम्पियनशिप-2021 प्रतियोगिता में कांस्य पदक जीता। उसे यह कांस्य पदक सीनियर गर्ल्स ग्रुप में भाग लेते हुए आर्टिस्टिक योग के प्रदर्शन में प्राप्त हुआ।

राजस्थान योगासन स्पोर्ट्स एसोसियेशन के जिलाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने बताया कि इस प्रतियोगिता में प्रदेश के सभी जिलों से जिलास्तर पर चयनित 3-3 योगा-खिलाड़ियों ने भाग लिया था। प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि एनवाईएसएफ की टेक्नीकल कमेटी के निदेशक डॉ. उमंग डॉन व एनवाईएसएफ के पश्चिमी हेड ऑब्जर्वर डॉ. संजय मालपानी थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता एसोसियेशन के प्रदेशाध्यक्ष सीपी पुरोहित ने की।

विद्यार्थियों ने लिया उड़ीसा में योगासन चौम्पियनशिप में हिस्सा

भारतीय विश्वविद्यालय संघ (एआईयू) के तत्त्वावधान में कलिंगा इंन्स्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी भुवनेश्वर, ओड़ीसा द्वारा आयोजित चार दिवसीय (25-25 दिसम्बर) 'ऑल इण्डिया इंटर यूनिवर्सिटी योगासन चैम्पियनशिप 2021-2022' में जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय लाडनूं के 11 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। चैम्पियनशिप में संस्थान के विद्यार्थियों ने सूर्य नमस्कार, आसन आदि का योग-प्रदर्शन किया। यह प्रतियोगिता कलिंगा इंन्स्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी भुवनेश्वर में स्थित बीजू पटनायक इंडोर स्टेडियम में आयोजित की गई। संस्थान के स्पोर्ट्स कोच अजयपाल सिंह भाटी ने बताया कि इस प्रतियोगिता में देशभर के 210 विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। जैविभा संस्थान की ओर से टीम कोच अजयपाल सिंह भाटी, नितेन्द्र सिंह, जयदीप सिंह, आशीष, अरका ज्योति, रामनिवास, कल्पिता सोलंकी, निधि पारीक, चित्रा बागड़ा, लक्की बागड़ा, रिंकू सैनी, निशा ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया।

सात दिवसीय नेशनल एफडीपी कार्यक्रम

उच्च शिक्षा का विषय-चिन्तन सार्वभौमिक होना चाहिए- प्रो. बैरवाल

संस्थान के शिक्षा विभाग में 2 से 9 जुलाई 'उच्च शिक्षा के विविध आयाम' विषय पर 2 जुलाई को चल रहे सात दिवसीय नेशनल एफडीपी कार्यक्रम के तहत चौधरी रणवीरसिंह विश्वविद्यालय जींद हरियाणा के प्रो. संदीप बैरवाल ने 'उच्च शिक्षा के विविध आयाम' पर कहा कि यह विषय सार्वभौमिक होना चाहिए। यह कोई नया विषय नहीं है। अनेक कमेटियों, विभिन्न नीतियों एवं नई शिक्षा नीति-2020 में इस पर पूरा जोर दिया गया है। हमारी शोध का विषय भी अन्तर्विषयी, बहुविषयी, क्रॉसविषयी होना चाहिए, तभी इसका शिक्षा में सार्थक प्रयोग किया जा सकता है। साथ ही विशेष प्रकार के विद्यार्थियों के लिए अन्तर्विषयी शिक्षा का प्रयोग किया जा सकता है।

ऑनलाइन शिक्षण की आयोजना

वनस्थली विद्यापीठ टोंक के शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अजय सुराणा ने 'लर्निंग मैनेजमेंट फॉर ऑनलाइन टीचिंग' विषय पर बोलते हुए शिक्षा व्यवस्था के कई प्रश्नों एवं नवीन बातों पर विचार रखे तथा नवाचार अपनाने के बारे में चर्चा की। उन्होंने लर्निंग मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर के मेंटर द्वारा विभिन्न समस्याओं के समाधान के बारे में बताया और ऑनलाइन शिक्षण की आयोजना को उदाहरणों के साथ स्पष्ट किया। उन्होंने तकनीकी ज्ञान के सफलता पूर्वक उपयोग करने की सलाह दी और बताया कि लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम द्वारा पूरे महाविद्यालय को मैनेज किया जा सकता है। प्रारंभ में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया तथा अंत में डॉ. मनीष भटनागर ने आभार ज्ञापित किया।

सफलता का दारोमदार शिक्षकों पर

कार्यक्रम में केशव विद्यापीठ जामड़ोली के श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. रीटा शर्मा ने शिक्षकों के योगदान के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि नई शिक्षा नीति की सफलता का दारोमदार शिक्षकों पर ही है। विश्व नागरिकता के साथ भारतीय होने पर गर्व अपने कार्य, विचार व सोच में होने चाहिए। नये मूल्यों एवं गतिविधियों का निर्धारण करना शिक्षकों के ही हाथ में है। शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति शिक्षक के आचरण से होनी चाहिए, इसमें केवल खानापूर्ति के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए। एनसीईआरटी इस सम्बन्ध में नये पाठ्यक्रम तैयार करेगी, जिसे लागू करने का कार्य शिक्षकों के हाथ में होगा। शिक्षक ही नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन की पहल करके भारत को विश्वगुरु का दर्जा दिला सकते हैं।

विश्वविद्यालयी शिक्षा में सुधार की जरूरत

प्रो. नलिन के. शास्त्री ने 'उच्च शिक्षा में नवीन प्रवृत्तियां' विषय पर कहा कि विश्वविद्यालय की उच्च शिक्षा में असमानता की भावना, गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालयों एवं ग्रामीण विश्वविद्यालय की कमी, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं पाठ्यक्रम में सृजनात्मकता का अभाव, नवोन्मेष विधियों तथा मानवीय व भौतिक संसाधनों का कमी, शिक्षकों व विशेषकर योग्य शिक्षकों का अभाव, छात्र-शिक्षकों का उचित अनुपात नहीं होना, प्रामाणिकता की कमी व प्रति उदासीनता, शोध की गुणवता में गिरावट, अन्तःसम्बन्ध शोध की कमी आदि चुनौतियां हैं, जिनका समाधान नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन से किया जा सकता है। नई शिक्षा नीति समग्र विकास परक, रोजगार परक शिक्षा, सार्थक शिक्षा, लचीलेपन की शिक्षा, वैश्विक शिक्षा से ओतप्रोत तथा मानव सृजन का विकास करने में सक्षम है।

प्रो. शास्त्री ने कहा कि शिक्षण, शोध और प्रसार के क्षेत्र में विश्वविद्यालयों को विशेष व अनूठी भूमिका निभाने की जरूरत है। इसके लिए शिक्षकों को ऊर्जावान बनाना, अच्छा कार्य करने वाले संस्थानों को आगे बढाना, व्यक्तित्व का निर्माण करना, वंचित वर्ग को आगे बढाना, प्रबंधन को पारदर्शी बनाना, भारतीय शिक्षा को बढाना, नए प्रवर्तन को बढाना, तकनीकी प्रयोग को श्रेष्ठ बनाना, मोबाईल व डिजीटल से शिक्षा व परीक्षा, मानवीय समस्याओं के समाधान तथा प्रोजेक्ट बेस लर्निंग का प्रचलन बढाना होगा।

'वर्चुअल दुनिया के आधार हैं ईमेल और पीडीएफ' पर व्याख्यान

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत 22 जुलाई को संचालित व्याख्यानमाला के अन्तर्गत तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद के तीर्थंकर कुंथनाथ कॉलेज ऑफ एजूकेशन के प्राचार्य डॉ. विनोद कुमार जैन ने विभाग की छात्राध्यापिकाओं को इंटरनेट पर काम करने के लिए जरूरी ईमेल की आईडी और दस्तावेजों के पीडीएफ फॉर्मेट बनाने के बारे में जानकारी दी। डॉ. जैन ने अपने व्याख्यान में आज की वर्चुअल दुनिया का ईमेल और पीडीएफ को आधार बताते हुए गूगल क्रोम से मेल आईडी बनाने की प्रक्रिया एवं कागज स्केनर एप की जानकारी देते हुए कागज स्केनर एप से स्क्रीन शॉट लेना, पीडीएफ बनाना, फाइल को नाम देना, कागज शेयर करना आदि विविध जानकारी प्रदान की। इस व्याख्यान कार्यक्रम में बीएससी-बीएड व बीए-बीएड की 65 छात्राएं व स्टाफ उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने आभार ज्ञापित किया।

एक्सचेंज प्रोग्राम से सीखने-सिखाने, विचार-विनिमय, अंत:क्रिया करने का अवसर मिलता है- डॉ. सीमा

पांच दिवसीय एक्सचेंज प्रोग्राम का आयोजन

संस्थान शिक्षा विभाग में पांच दिवसीय एक्सचेंज प्रोग्राम (18-22 अक्टूबर) कुलपति प्रो. बी. आर. दूगड के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में सबल महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय जोधपुर की संकाय सदस्य डॉ. सीमा और डॉ. आशा शर्मा ने प्रथम एवं द्वितीय दिवस प्रोजेक्ट एवं लेक्चर विधि पर शिक्षा विभाग की छात्राओं की क्लास ली। कार्यक्रम का परिचय एवं अतिथि परिचय शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने दिया और कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम से विधार्थियों को सीखने के नये प्रतिमान, नई सोच और नूतन आयामों का अर्जन होता है। डॉ. सीमा ने कहा कि एक्सचेंज प्रोग्राम से सीखने-सिखाने, विचार विनिमय, अंत:क्रिया करने का अवसर प्राप्त होता है। यह संस्थान लॉकडाउन में भी सेमिनार, कार्यशाला, साहित्यिक, सांस्कृतिक आदि अनेक प्रोग्राम आयोजित करता रहता है, इससे अन्य

संस्थानों को भी प्रेरणा मिलती है। संस्थान नवाचारों के क्षेत्र में अनूठा कार्य कर रही है। इस गौरवशाली संस्थान में शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी अपनी अलग पहचान रखते हैं। डॉ. आशा शर्मा ने कहा कि संस्थान निरंतर गतिविधियों को आयोजित करता रहता है और आध्यात्मिक, नैतिक, चारित्रिक मूल्यों के क्षेत्र में इस संस्थान का अपना विपुल योगदान रहा है। इससे विश्व में इसकी अलग पहचान है। कार्यक्रम के अंत में डॉ. अमिता जैन ने धन्यवाद ज्ञापन किया और कहा कि गुणवत्ता और ज्ञानवर्धन में इस कार्यक्रम ने अपनी छाप छोड़ी है। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग की बी.एड. व बी.ए.-बीएड तथा बी.एस.सी.-बी.एड. की 98 छात्राओं ने भाग लिया।

दिलों को जोड़ता है भारत का संविधान

संस्थान के शिक्षा विभाग में संविधान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि 26 नवम्बर को संविधान सभा द्वारा संविधान को स्वीकार करने से महत्त्वपूर्ण दिन बन गया है। भारतीय संविधान के कारण शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक आदि विकास संभव हो पाए हैं। संविधान ने सबको एकता के सूत्र में बांधा तथा जाति, रंग, क्षेत्र के भेद को मिटाया है। हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन आदि सभी धर्मावलम्बियों को दिल से जोड़ने एवं अखंडता को मजबूत बनाने का सुअवसर प्रदान किया है। डॉ. भाबाग्राही प्रधान ने संविधान संरक्षण की शपथ भी दिलायी। कार्यक्रम में शिक्षा संकाय के डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. सरोज राय, डॉ. आभासिंह, डॉ. गिरिराज भोजक, प्रमोद ओला आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग की एम.एड, बी.एड एवं बी.ए.-बी.एड, बी. एससी-बी.एड की लगभग 94 छात्राओं ने भाग लिया।

कोरोना से विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर का पिछड़ना चिंताजनक, नीतिगत पुनर्विचार की जरूरत

संकाय संवर्धन कार्यक्रम में व्याख्यान का आयोजन

विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में 24 जुलाई को संकाय संवर्धन कार्यक्रम के अन्तर्गत डॉ. गिरीराज भोजक ने 'कोविड-19 में अधिगम ह्रास' विषय पर अजीम प्रेमजी फाउंडेशन द्वारा जनवरी माह में प्रस्तुत सर्वे रिपोर्ट पर बोलते हुए कहा कि कोविड-19 के कारण सर्वाधिक प्रभावित उच्च प्राथमिक स्तरीय विद्यार्थियों के पिछड़ते उपलब्धि स्तर पर चिंता व्यक्त की। यह सर्वेक्षण पांच राज्यों छत्तीसगढ़, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, राजस्थान व उत्तराखंड राज्यों के 16 हजार विद्यार्थियों के घटते उपलब्धि स्तर से सम्बन्धित था। इसमें पाया गया कि कक्षा द्वितीय से षष्टम तक के विद्यार्थी भाषा एवं गणित से सम्बन्धित आधारभूत कौशलों, अवबोधात्मक पठन, लेखन, मौखिक अभिव्यक्ति, अंकगणितीय सरल समस्या समाधान, आकृतियों की रेखाणणितीय व्याख्या आदि में लगातार पिछड़ते जा रहे हैं। लगभग 92 प्रतिशत विद्यार्थी भाषायी कौशलों तथा 82 प्रतिशत विद्यार्थी आधारभूत गणितीय कौशलों में न्यून उपलब्धि स्तर पर हैं, जो अध्यापक, अभिभावक व स्वयं विद्यार्थी के लिए चिंताजनक है। साथ ही विद्यार्थी विद्यालयी शिक्षा से विमुख होते जा रहे हैं तथा आवश्यक आधारभूत योग्यता सम्बन्धी आंकड़ों से परिलक्षित होता है कि कोविड की विपरीत परिस्थितियों में हमें शिक्षण विधियों, तकनीकी संसाधनों, शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं तथा भविष्य के नीतिगत परिवर्तनों पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है।

आचार्य महाश्रमण रचित पुस्तक 'आओ हम जीना सीखें' की समीक्षा

सभी क्रियाओं को सम्यक् बनाना ही जीवन जीने की कला है

संस्थान के शिक्षा विभाग में 19 अगस्त को आयोजित आंतरिक व्याख्यानमाला के अंतर्गत डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने युवाचार्य महाश्रमण रचित पुस्तक 'आओ हम जीना सीखें' की समीक्षा प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस पुस्तक में बताए गए सूत्रों से जीवन सुखद, सरल व संकट मुक्त बन सकता है। पुस्तक में आचार्य महाश्रमण ने आत्मा और शरीर दोनों की युति का नाम जीवन बताया है तथा जीवन जीने से अधिक महत्त्वपूर्ण 'कलात्मक जीवन जीने' को कहा है। समीक्ष्य पुस्तक में जीने की कला को सीखने का अर्थ 'जीवन की सभी क्रियाओं को सम्यक् बनाने' को बताते हुए चलने, उठने, खाने, सोने, बोलने, देखने, सहने और चिंतन में सम्यक दृष्टिकोण अपनाकर जीवन को सफल एवं सुखी बनाया जाने की प्रेरणा दी गई है। महाश्रमण के अनुसार व्यक्ति को वाणी तथा आहार संयम पर विशेष ध्यान देना चाहिए। आहार तथा चिंतन के सम्बन्ध में मित, हित तथा ऋत की त्रिपदी को आचरण में लाना चाहिए तथा भाषा विवेक हेतु मितभाषिता, मधुर भाषिता, सत्य भाषिता एवं समीक्ष्य भाषिता के सूत्रों को जीवन में धारण करना चाहिए। वृद्धावस्था जीवन का वह काल होता है, जिसे काफी मुश्किल माना जाता है, किन्तु आचार्य महाश्रमण ने इस पुस्तक में कुछ ऐसे सूत्र दिए हैं, जिनको अपनाकर बुढ़ापे को वरदान बनाया जा सकता है। ये सूत्र हैं- खाद्य संयम, आवेश शमन, भाषा विवेक, प्रेक्षाध्यान, सक्रियता एवं बच्चों में सुसंस्कार वपन। डॉ. शर्मा ने बताया कि यह पुस्तक कलात्मक जीवन जीना सिखाने की महत्त्वपूर्ण कृति है, जिसका अध्ययन सभी को करना चाहिए। व्याख्यान के अंत में विभाग अध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने पुस्तक को अनमोल बताते हुए आभार ज्ञापित किया।

संकाय संवर्द्धन व्याख्यानमाला का आयोजन

योग विशुद्ध विज्ञान है, जिसमें प्रयोगों का रुख आंतरिक होता है

संस्थान के शिक्षा विभाग में संकाय संवर्धन व्याख्यानमाला के अन्तर्गत योग विज्ञान के वास्तविक स्वरूप पर व्याख्यान का आयोजन 18 सितम्बर को किया गया। व्याख्यानमाला में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि योग को किसी भी तरह से धर्म के रूप में माना जाना गलत है। गणित, फिजिक्स व कैमिस्ट्री की तरह योग भी एक विशुद्ध विज्ञान है, योग नियमों का विज्ञान हैं और जैसे विज्ञान में प्रयोग से परिणाम प्राप्त किये जाते हैं, वैसे ही योग में अभ्यास से अनुभव प्राप्त किये जाते है। विज्ञान में प्रयोगों का रुख बाहर की ओर होता है, जबकि योग में आंतरिक प्रयोग किये जाते हैं। योग अस्तित्वगत, अनुभवजन्य, और प्रायोगिक है। पतंजलि ने गणित के फार्मूले की तरह सटीक सूत्र प्रदान किये हैं, जो दो और दो चार की भांति लागू होते हैं। योग के सूत्र 'करो और जानो' की तरह हैं, जैसे- पानी को सौ डिग्री तक गर्म करो, वाष्प बन जायेगा।

प्रो. जैन ने बताया कि योग चिकित्सा विज्ञान नहीं है, लेकिन योग रोगोपचार में भी उपयोगी है। पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक भी इसे मानते हैं, इसलिए योग को वे बीमार, रोगग्रस्त लोगों के लिए चिकित्सा विज्ञान मान लेते हैं। चिकित्सा विज्ञान तो रोगियों के लिए ही काम करता हैं, लेकिन योग स्वस्थ्य व रोगी व्यक्ति के लिए दोनों ही स्थितियों में काम करता है। आत्मशुद्धि, निर्मल अंत:करण, शुद्ध हृदय और शांत मन ही वास्तविक योग है। कार्यक्रम में सभी संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

जन्माष्टमी पर कार्यक्रम का आयोजन

कृष्ण ने पुरुषार्थ से मानव-कल्याण का मार्ग दिखाया

संस्थान के शिक्षा विभाग में जन्माष्टमी पर्व पर 28 अगस्त को आयोजित कार्यक्रम में प्रभारी डॉ. सरोज राय ने भगवान् कृष्ण के जीवन और जन्माष्टमी के व्यावहारिक पक्षों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि कृष्ण ने स्थितप्रज्ञ होकर जीवन के समस्त आयामों को पूर्णता के साथ स्वीकार किया।

कृष्ण ने प्राणीमात्र को कर्म करने के अधिकार के बारे में संदेश देते हुए स्पष्ट किया कि उसका फल उसके अधीन नहीं होता है। उन्होंने व्यक्ति की महानता उसके कर्मों के आधार पर व्यक्त करते हुए जन्म से श्रेष्ठता को नकारा। डॉ. राय ने कहा कि महाभारत ग्रंथ में आए श्रीकृष्ण के उपदेश युग-युगान्तर तक प्रासंगिक बने रहेंगे। उनके पुरुषार्थ भरे उपदेशों में जीवन की प्रत्येक समस्या के निदान संभव है और वे जीवन के कर्मक्षेत्र में आगे बढने की सतत प्रेरणा देते हैं।

विभाग की छात्राध्यापिकाएं अमीषा पूनिया, नीतू जोशी, सोनिया राठौर, आमना, मनीषा मेहरा, किरण सान्दू, कोमल शर्मा, अमृता शर्मा व निधि गुर्जर ने कृष्ण सम्बन्धी भजन एवं विचार प्रकट किए। विभागाध्यक्ष प्रो. बनवारीलाल जैन ने कृष्ण के जीवन को बहुआयामी बताते हुए कहा कि उनकी सम्पूर्ण लीलाएं रीति-नीति, कला, ज्ञान, व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करती हैं। अंत में डॉ. आभा सिंह ने आभार ज्ञापित किया।

संकाय संवर्धन कार्यक्रम में 'शिक्षा और भक्ति का समन्वय' विषय पर व्याख्यान आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में ''संकाय संवर्धन कार्यक्रम'' के अंतर्गत 10 जुलाई को ''शिक्षा और भक्ति का समन्वय'' विषय पर डॉ. अमिता जैन ने अपने व्याख्यान में कहा कि शिक्षा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करती है; लेकिन आज की शिक्षा विकास के बजाय मात्र आजीविका का सृजन करती है। परिवारों में और समाज में उत्तरदायित्व का बोध समाप्त सा होने लगा है। उन्होंने बताया कि शिक्षक और शिक्षार्थी का सम्बन्धी आत्मीय और तादात्म्यपूर्ण होना चाहिए। अनेक लोग जो एक गांव से दूसरे गांव जाते हैं या परीक्षा देने के लिए जाते हैं या कोई विशेष कार्य आरंभ किया जाता है, तो गृहस्थ लोग साधुओं से मंगल पाठ सुनते हैं। यद्यपि मंगलपाठ तो गृहस्थ लोग भी जानते हैं, फिर भी साधुओं के मुख से, गुरुओं के मुख से सुनना चाहते हैं, क्योंकि जैसे दवा के साथ अनुपान का महत्त्व होता है, वैसे ही साधुओं या गुरुओं के मुख से मंगलपाठ श्रवण का अलग ही महत्त्व होता है। साधु तो स्वयं मंगल होते हैं। शिक्षा और भक्ति में अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। भविष्य की भक्ति या भविष्य की शिक्षा ज्ञान का हिस्सा होगी। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि शिक्षा के बिना भक्ति और भक्ति के बिना शिक्षा अधूरी है। दोनों के समन्वय से बालक का विकास करना चाहिए।

भारतीय संस्कृति, सहिष्णुता और शिक्षा पर व्याख्यान

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम में 'भारतीय संस्कृति, सहिष्णुता और शिक्षा' विषय पर 17 जुलाई को आयोजित व्याख्यान में डॉ. सरोज राय ने कहा कि सहिष्णुता व मूल्य चेतना संस्कृति में आवश्यक होते हैं। भारतीय संस्कृति में उदारता व सहिष्णुता, समन्वयवादी गुण तथा अन्य संस्कृतियों को आत्मसात् करने के गुण इसकी विशेषताएं हैं। भावी पीढी के साथ तादात्म्य स्थापित कर राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक चेतना, आध्यात्मिक व साहित्यिक मूल्य व आचार संहिता का समावेश, दूसरों की दृष्टि को सम्यक् समझना शिक्षा में नियमित अध्यापन का विषय होना चाहिए। इससे विद्यार्थी संस्कृति और सहिष्णुता के संचालक की भूमिका के रूप में निर्मित किए जा सकते हैं। अंत में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने आभार ज्ञापित किया।

हिन्दी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने हिन्दी भाषा को समृद्ध बनाने तथा अध्ययन व अध्यापन में हिन्दी का प्रयोग बढाने पर जोर देने की जरूरत बताई। कार्यक्रम प्रभारी डॉ. सरोज राय ने कहा कि हिन्दी वर्तमान में वैश्विक मंच पर सम्मानजनक स्थान पर आसीन हो रही है। हिन्दी भाषा व्यक्तित्व को उभारती है, संवारती है तथा यह युवाओं को अपनी संस्कृति, सभ्यता और मूल्यों से जोड़ती है। डॉ. अमिता जैन ने बताया कि हिन्दी सम्बोधन करने में अपनापन के भाव का अहसास होता है। कार्यक्रम में अमीषा पूनिया, अंकिता व प्रीति राजपुरोहित ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन छात्राध्यापिका किरण सान्दू ने किया।

शिक्षक दिवस कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि शिक्षक का पद बहुत ही गरिमामय होता है। शिक्षक को हमेशा सकारात्मक सोच के साथ विद्यार्थियों तथा समाज को सही दिशा देनी चाहिए। इस महामारी के दौर में भी शिक्षकों ने अपने शैक्षिक व सामाजिक दायित्वों का पूर्ण रूप से पालन किया है। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर ने कहा कि शिक्षण वास्तव में एक सेवा होते हुए भी यह पूर्णतः व्यवसाय का रूप लेता जा रहा है, जिस पर चिंतन की आवश्यकता है। डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने कहा कि प्रलय तथा निर्माण शिक्षक की गोद में पलता है। हमें निर्माण को प्रोत्साहन देना है तथा अपने कर्तव्य को पूर्ण निष्ठा से पालन करते हुए शिक्षक धर्म निभाना है। कार्यक्रम का संचालन तथा आभार ज्ञापन डॉ. अमिता जैन द्वारा किया गया।

गुरु पूर्णिमा मनाई

संस्थान के शिक्षा विभाग में 24 जुलाई को गुरु पूर्णिमा पर्व कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने इस अवसर पर गुरुजनों के सम्मान की आवश्यकता बताते हुए उनके सद्चरित्र से विद्यार्थियों के लिए गुणग्राही बनने की जरूरत बताई। उन्होंने गुरु को छात्रों का सम्बल बताया।

गांधी जयंती व विश्व शांति दिवस पर अनेक कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में महात्मा गांधी जयंती एवं अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस पर 1 अक्टूबर को कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। शिक्षा विभाग में हुए कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर ने कहा कि हमें गांधी के द्वारा बताये गये सत्य एवं अहिंसा के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। गांधीजी ने राजनीतिक एवं सामाजिक सन्तुलन बनाये रखने पर जोर दिया था। डॉ. विष्णु कुमार ने कहा कि प्रेम पर आधारित शांति सजा के डर से उत्पन्न शांति से हजार गुना अधिक और स्थायी होती है। गांधी की ताकत सत्य और अहिंसा थी। उनके सिद्धान्तों को अपनाकर समाज में महत्त्वपूर्ण बदलाव लाए जा सकते हैं। कार्यक्रम में मनीषा स्वामी, आरती, सगीता, पूनम, संजू, दीपिका स्वामी, किरण सारण, तनू एवं सूरमा चौधरी छात्राध्यापिकाओं ने भी भाषण, कविता एवं गाने के माध्यम से अपने विचार रखे। इस अवसर पर गांधी के विचारों पर एक लेखन प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया, जिसमें छात्राध्यापिकाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में डॉ. भाबाग्राही प्रधान, डॉ. सरोज राय, डॉ. गिरीराज भोजक, डॉ. आभा सिंह, और डॉ. गिरधारी लाल शर्मा आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन शिवानी पूनिया ने किया। अन्त में डॉ. विष्णु कुमार द्वारा आभार ज्ञापित किया गया।

छात्राओं में अभय रहने के आत्मबल का विकास जरूरी- प्रो. त्रिपाठी

आत्मरक्षार्थ मार्शल आर्ट के गुर सिखाने के लिए सात दिवसीय कार्यक्रम

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में छात्राओं को आत्मरक्षा के गुर सिखाने के लिए सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का शुभारम्भ 29 दिसम्बर को किया गया। प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने इस अवसर पर बताया कि छात्राएं अपनी सुरक्षा के प्रति जागरूक बनें और उनमें अभय रहने के आत्मबल का विकास इस प्रशिक्षण के माध्यम से हो पाएगा। उन्होंने कहा कि अकेली छात्रा कहीं भी किसी भी विपरीत परिस्थिति में बदमाशों का मुकाबला करने और उन्हें सफलता पूर्वक पछाड़ने में सक्षम बन पाएगी। छात्राओं का मनोबल बढने और उनमें आत्मरक्षा की मनोस्थिति का निर्माण होने से वे कहीं भी पीछे नहीं हटेंगी और वे प्रत्येक प्रतिस्पर्धा के लिए बेखौफ होकर आगे बढ सकेंगीं। छात्राएं यहां एनसीसी प्रभारी लेफ्टिनेंट आयुषी शर्मा की देखरेख में यह प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं। मार्शल आर्ट प्रशिक्षक सलोनी शर्मा ने बुधवार को छात्राओं को किक, पंच व ब्लॉक के विविध प्रकारों का अभ्यास करवाया। उन्होंने माहगेरी, मवासीगेटी, स्लेब किक, मिडिल पंच, अपर पंच व लॉअर पंच की विधियां बताईं और उनकी प्रेक्टिस करवाई।

हिन्दी दिवस पर राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित

हिन्दी जनमानस की संवेदनाओं की सशक्त हस्ताक्षर है- प्रो. कल्याण सिंह

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन में 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के अवसर पर 'हिन्दी तब, अब और आगे' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। राष्ट्रीय संगोष्ठी में सम्मानित वक्ता के रूप में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी, राजकीय महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. कल्याण सिंह चारण तथा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सुजानगढ़ के हिन्दी विभाग के सह आचार्य डॉ. गजादान चारण ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किए।

प्रो. त्रिपाठी ने हिन्दी को देश की एकता व अखण्डता के सूत्र में पिरोकर रखने वाला सेतु बताया। हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा के यशस्वी रचनाकार डॉ. गजादान चारण ने हिन्दी को दैनिक कार्य व्यवहार में गर्व के साथ प्रयोग लिए जाने हेतु प्रतिबद्धता जाहिर की। वहीं देश के युवाओं को हिन्दी की समृद्धि हेतु चार सूत्रीय सिद्धांतों की भी चर्चा की। हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान एवं राजकीय महाविद्यालय रतनगढ़ से प्राचार्य प्रो. कल्याण सिंह ने हिन्दी को जनमानस की संवेदनाओं का सशक्त हस्ताक्षर बताया। राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन में देश के विभिन्न राज्यों से प्रतिभागियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

शुरुआत में महाविद्यालय के हिन्दी व्याख्याता एवं इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक अभिषेक चारण ने वक्ताओं का परिचय करवाया व अंत में डॉ. प्रगति भटनागर ने वेबिनार में भाग लेने हेतु सभी का आभार ज्ञापित किया।

रोजगार परामर्श केंद्र में व्याख्यान आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के अंतर्गत संचालित रोजगार परामर्श केंद्र में आईबीपीएस बैंक क्लर्क एवं बैंक पीओ प्रारंभिक परीक्षाओं को ध्यान में रखते हुए छात्राओं की आवश्यकता एवं रुचि के तहत एक व्याख्यान का आयोजन 16 अक्टूबर को किया गया। प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी के निर्देशन में हुए इस व्याख्यान में वाणिज्य संकाय के सहायक आचार्य अभिषेक शर्मा ने छात्राओं को बैंक परीक्षाओं में क्लर्क एवं पीओ पदों की तैयारी करने के लिए आसान गुर बताए तथा उनके लिए सहायक उपयोगी, आवश्यक प्रतियोगी पुस्तकों के बारे में जानकारी दी।

शर्मा ने बताया कि अपने समय का दैनिक पाठ्यक्रम एवं गतिविधियों के साथ समायोजन कर छात्राएं अपनी तैयारी बेहतर कर सकती हैं। उन्होंने विषय क्षेत्र पर विस्तृत चर्चा करते हुए बैंकिंग क्षेत्र में छात्राओं की शंकाओं एवं जिज्ञासाओं का समाधान किया। रोजगार परामर्श केंद्र के प्रभारी अभिषेक चारण ने अंत में धन्यवाद ज्ञापित किया।

शिक्षा के साथ बाहरी दुनिया की जानकारी होती है विकास में सहायक

छात्राओं ने विभिन्न प्रोजेक्ट तैयार कर किया प्रस्तुतीकरण

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा है कि विद्यार्थियों में रचनात्मक कार्यों की तरफ रुझान पैदा करने के लिए विविध कार्यक्रमों का आयोजन इस महाविद्यालय और विश्वविद्यालय की विशेषता रहा है। बी.कॉम. की प्रथम वर्ष की छात्राओं ने विभिन्न विषयों का चित्रांकन और उनके बारे में किया गया प्रस्तुतीकरण सराहनीय है। सभी छात्राओं को इससे प्रेरणा लेनी चाहिए। शिक्षा के साथ बाहरी दुनिया के बारे में जानकारी लेना और उनके बारे में अपने विचारों को निर्मित करना महत्त्वपूर्ण है और विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के मार्ग को प्रशस्त करती हैं। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि जगदीश यायावर ने छात्राओं की उत्साहजनक प्रस्तुति और आकर्षक चित्रांकन की सराहना की और इसे शिक्षणेतर गतिविधियों में श्रेष्ठ कदम बताया। कार्यक्रम की संयोजिका सहायक आचार्य प्रगति चौरड़िया ने कहा कि छात्राएं देश की अर्थव्यवस्था के साथ विश्व भर की स्थिति और उसके प्रभाव पर भी नजर रखती हैं और यह जानकारी उनके

विकास में सहायक सिद्ध होती है।

17 दिसम्बर को हुए इस कार्यक्रम में छह प्रकार के प्रोजेक्ट प्रस्तुत किए गए, जिनमें योगिता जांगिड़ ने कोविड की स्थिति के प्रभाव का चित्रांकन किया और उसके बारे में अपना प्रस्तुतिकरण दिया। आकांक्षा ने आर्थिक क्षेत्र की शब्दावलियों के बारे में बताया और उसे चित्रांकित किया। मोहिनी प्रजापत ने आत्मनिर्भर भारत को रेखांकित करते हुए कृषि, आयात, निर्यात आदि के आर्थिक कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से बताया। डिम्पल जांगिड़ ने अपने प्रस्तुतीकरण में ऑटोमोबाईल क्षेत्र में मार्केटिंग के विविध आयामों पर रोशनी डाली। करिश्मा सोनी ने पर्यावरण क्षेत्र में कोविड के प्रभाव को रेखांकित किया और उसकी हर दिशा के बारे में जानकारी दी। विशाखा जांगिड़ ने उत्पादन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला और भूमि, श्रम, पूंजी, साहस के महत्त्व को रेखांकित किया। प्रारम्भ में आकांक्षा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया और अंत में योगिता ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रगति चौरड़िया ने किया।

आचार्य महाप्रज्ञ की 102वीं जयंती मनाई

आचार्य महाप्रज्ञ के सामाजिक योगदान और जीवन पर कार्यक्रम आयोजित

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के कॉन्फ्रेंस हॉल में 7 जुलाई को संस्थान के द्वितीय अनुशास्ता रहे आचार्यश्री महाप्रज्ञ की 102वीं जयन्ती पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में हुए इस कार्यक्रम में 'आचार्य महाप्रज्ञ के अनुकरणीय जीवन एवं उनके सामाजिक योगदान' विषय पर वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। मुख्य वक्ता प्रो. त्रिपाठी ने 'व्यक्ति एक- रूप अनेक' की उक्ति को परिभाषित करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा दी गयी प्रेक्षाध्यान की पद्धति का महत्त्व बताया तथा साथ ही आधुनिक शिक्षा पद्धति पर महाप्रज्ञ के विचारों पर प्रकाश डालते हुए उनके कार्यों और रचनाओं का विवरण प्रस्तुत किया। प्रो. त्रिपाठी ने बताया कि 1949 में अणुव्रत आन्दोलन से लेकर अर्थशास्त्र तक को नैतिकता की कसौटी पर ले जाने की सोच रखने वाले कर्मनिष्ठ मुनिवर आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा कवित्व धर्म की पालना करते हुए समाज को साहित्य रूपी दर्पण का वास्तविक साक्षात्कार सहज रूप से करवाया था। इस अवसर पर अभिषेक चारण ने 'युगान्तर कर्मयोगी' की समीक्षा प्रस्तुत करते हुए बताया कि उसमें आचार्य महाप्रज्ञ के सम्पूर्ण जीवनवृत्त को अभिव्यक्त किया गया है। उन्होंने प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी की कृति की प्रशंसा की। डॉ. बलवीरसिंह ने भी आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में डॉ. विनोदकुमार सैनी, अभिषेक शर्मा, घासीलाल शर्मा आदि उपस्थित रहे।

मासिक व्याख्यानमाला

शिक्षा को प्रभावी बनाती है ब्लैण्डेड लर्निंग

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी अध्यक्षता में मासिक व्याख्यानमाला का आयोजन रखा गया। कम्प्यूटर विज्ञान की सहायक आचार्या डॉ. प्रगति भटनागर ने ब्लैण्डेड लर्निंग विषय पर अपने व्याख्यान में बताया कि यह एक मिश्रित शिक्षण विधि है, जिसमें ऑनलाइन और पारम्परिक शिक्षा प्रणालियों का मिश्रण कर शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। यह वर्तमान से लेकर भविष्य तक की सम्पूर्ण आधुनिक शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक सिद्ध होगी। डॉ. भटनागर ने व्याख्यान के दौरान ब्लैण्डेड लर्निंग की अवधारणा, घटक, प्रकार एवं मॉडल्स की विस्तृत जानकारी दी व बताया कि कोरोना काल में यह शैक्षणिक प्रणाली अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रही है। अंत में अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. त्रिपाठी ने वर्तमान हालातों में ब्लैंडेड लर्निंग की सार्थकता पर विशेष विश्लेषण प्रस्तुत किया तथा संवादों की स्वस्थ श्रृंखला को संकाय सदस्यों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए अपरिहार्य बताया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विनोदकुमार सैनी ने किया। अंत में अभिषेक चारण ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

एक दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर आयोजित

डिग्री के साथ भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों की शिक्षा भी जरूरी- प्रो. त्रिपाठी

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में एक दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर 28 सितम्बर को आयोजित किया जाकर नवआगन्तुक छात्राओं का स्वागत किया गया। शिविर में प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने छात्राओं से कहा कि विद्यार्थी जीवन में प्रेक्षाध्यान का बहुत महत्त्व है। प्रेक्षाध्यान से एकाग्रता का विकास होता है। ध्यान प्रकिया के साथ अपने प्रत्येक दिन की शुरुआत करने वाले विद्यार्थियों की एकाग्रता अन्य विद्यार्थियों की तुलना में बेहतर होती है। प्रो. त्रिपाठी ने जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के महिला शिक्षा के प्रति दृढ संकल्प को साझा करते हुए विश्वविद्यालय के विभिन्न कदमों की जानकारी दी। उन्होंने विश्वविद्यालय की स्थापना के प्रेरणास्रोत व विश्वविद्यालय के प्रथम अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी के सपनों के साकार होने पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय एक ऐसी संस्कार स्थली है, जहां डिग्री के साथ भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों की शिक्षा दी जाती है।

संकल्प ग्रहण करवाया

उन्होंने कहा कि अहिंसा की प्रवृत्ति मानव मन को मजबूत बनाती है। उन्होंने अहिंसा के चारों प्रकार क्रमशः संकल्पित हिंसा, आरंभी हिंसा, उद्योगी हिंसा एवं विरोधी हिंसा के बारे में बताते हुए संकल्पित हिंसा मनोवृत्ति को त्याज्य बताया एवं काम, क्रोध, माया, लोभ आदि कषायों से दूर रहने के लिए गुरु द्रोण-युधिष्ठिर व महात्मा गांधी से जुड़े रोचक व प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से प्रेरणा दी। उन्होंने छात्राओं को सद् आचरणों को जीवन में उतारकर मूल्यपरक शिक्षा ग्रहण करने पर जोर देते हुए छात्राओं को उच्च जीवन मूल्यों को अपने जीवन में सदैव समाहित रखने के लिए संकल्प ग्रहण करवाया।

प्रेक्षाध्यान का स्वरूप एवं उपयोगिता पर व्याख्यान

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में आयोजित 6 अगस्त को मासिक व्याख्यानमाला में प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने 'प्रेक्षाध्यान का स्वरूप एवं उपयोगिता' विषय पर दिए व्याख्यान में प्रेक्षाध्यान के 1962 से शुरू हुए शोध एवं 1975 में साकार रूप लेने के वृत्तान्त को बताते हुए प्रेक्षाध्यान के मुख्य अंगों कायोत्सर्ग, अन्तर्यात्रा, श्वास प्रेक्षा, शरीर प्रेक्षा, चैतन्य प्रेक्षा, लेश्याध्यान, भावना प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा की विस्तृत जानकारी दी और प्रेक्षाध्यान के सहायक एवं विशिष्ट अंगों आसन, प्राणायाम, मुद्रा, ध्वनि, वर्तमान प्रेक्षा, विचार प्रेक्षा, अनिमेष प्रेक्षा आदि के बारे में भी जानकारी दी। प्रो. त्रिपाठी ने प्रेक्षाध्यान के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए अन्तर्दर्शन, शान्ति, आध्यात्मिक विकास एवं जीवन की अंतिम चाहना मोक्ष की प्राप्ति के लिए भी प्रेक्षाध्यान को अनिवार्य बताया। व्याख्यान के अंत में उन्होंने उपस्थित संकाय सदस्यों की प्रेक्षाध्यान के प्रति जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. विनोद कुमार सैनी ने किया। अंत में डॉ. बलवीर सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया।

गूगल क्लासरूम की उपयोगिता और तकनीक पर व्याख्यान

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में आंतरिक व्याख्यान श्रृंखला के अन्तर्गत प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान श्रृंखला के प्रथम व्याख्यान के रूप में डॉ. प्रगति भटनागर ने गूगल क्लासरूम द्वारा ऑनलाईन पढाई के बारे में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने गूगल क्लासरूम एप्प के जरिये अध्ययन-अध्यापन के विविध आयामों एवं तकनीक के बारे में जानकारी दी। डॉ. भटनागर ने बताया कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है। आज सभी पाठ्यक्रमों एवं सेमिनारों तक के ऑनलाईन किये जाने की जरूरत है। गूगल क्लासरूम एक ऐसा प्लेटफार्म है, जिस पर अलग-अलग कक्षाओं का संचालन किया जा सकता है। क्लासरूम के ऑनलाईन मैनेजमेंट के लिये इस प्लेटफार्म की अपनी खूबियां हैं। उन्होंने गूगल क्लासरूम में कक्षा क्रियेट करने, उसे नाम देकर जेनरेट करने, विद्यार्थियों द्वारा जॉइन करने, कोड एंटर करने, टॉपिक जोड़ने, शिक्षक को आमंत्रित करने, पाठ्यसामग्री जोड़ने, उसे पोस्ट करने, असाइनमेंट बनाने, डोक्यूमेंट्स क्रियेट करने आदि विविध पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला और उसे स्मार्ट बोर्ड पर प्रेक्टिकली बताया। उन्होंने बाद में इस सम्बन्ध में उपस्थित लोगों की जिज्ञासाओं एवं सवालों के जवाब भी दिये। प्रारम्भ में प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने विषय के सम्बन्ध में जानकारी देते हुए बताया कि यह समय की आवश्यकता है कि कुछ नया सीखा जावे। सोशल डिस्टेंसिंग के चलते ऑनलाईन कक्षाओं का महत्त्व बढ गया है। इस सम्बन्ध में विभिन्न तकनीकियों के बारे में सबके लिये जानकारी आवश्यक है। उन्होंने बताया कि इस व्याख्यानमाला में प्रत्येक 15 दिन पश्चात् किसी नये निर्धारित विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया जायेगा। कार्यक्रम का संचालन समन्वयक सोमवीर सांगवान ने किया।

सामूहिक राष्ट्रगान के साथ दौड़ व योग का आयोजन

संस्थान में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में संचालित 'आजादी का अमृत महोत्सव' के अन्तर्गत 14 अगस्त को संस्थान के शिक्षा विभाग, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं राष्ट्रीय कैडेट कोर के संयुक्त तत्त्वावधान में यहां सामूहिक राष्ट्रगान एवं स्वच्छ भारत अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कार्यक्रम के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा कहा कि हमारा कर्तव्य है कि प्रत्येक राष्ट्रीय कार्यक्रम में सक्रिय भूमिका निभाएं। सभी संकाय सदस्यों, कैडेट्स एवं छात्राओं द्वारा सामूहिक राष्ट्रगान के अलावा इस अवसर पर विभिन्न शारीरिक गतिविधियों दौड़, आसन, प्रेक्षाध्यान का अभ्यास भी किया गया।

शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन के निर्देशन में डॉ. आभासिंह व अजयपाल सिंह भाटी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

एकल प्लास्टिक निषेध जागरुकता कार्यक्रम आयोजित

भारत सरकार तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के द्वारा प्राप्त निर्देशानुसार संस्थान में आयोजित हो रहे 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तहत 16 अक्टूबर को राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाईयों के संयुक्त तत्त्वावधान में 'एकल प्रयोग प्लास्टिक निषेध जागरुकता कार्यक्रम' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में बताया कि यदि हम एकल प्रयोग प्लास्टिक के संसाधनों का उपयोग नहीं करने की दृढ़ इच्छा करें तो सहज रूप से इसके उपयोग करने पर होने वाले दुष्परिणामों से बचा जा सकता है। कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रीय सेवा योजना गीत के माध्यम से की गई। कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के प्रभारियों के साथ अनेक छात्राएं भी उपस्थित रहीं।

ऑनलाइन निबंध प्रतियोगिता में स्मृति प्रथम रही

संस्थान की सांस्कृतिक समिति के तत्त्वावधान में 28 अगस्त को ''आजादी के अमृत महोत्सव का वैशिष्ट्य'' विषय पर आयोजित ऑनलाइन निबंध प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा करते हुए सांस्कृतिक सचिव डॉ. अमिता जैन ने बताया कि प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर स्मृति कुमारी, द्वितीय स्थान पर निकिता बोथरा, कोमल मुंडेल, आमना, नीतू जोशी, कल्पना, ममता एवं तृतीय स्थान पर प्रियंका, भगौति मंडा, सरिता मंडा, रवीना बाजिया, शिवानी पूनिया रहीं। उन्होंने बताया कि प्रतियोगिता में 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों के लिए आयोजित की गयी। प्रतियोगिता के आयोजन का दायित्व सांस्कृतिक सचिव डॉ. अमिता जैन के साथ सदस्य डॉ. विनोद कस्वां और डॉ. लिपि जैन पर था।

एनएसएस ने शिक्षक दिवस मनाया

राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाईयों के संयुक्त तत्त्वाधान में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन तथा निर्देशन में 6 सितम्बर को आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम के तहत ऑनलाइन शिक्षक दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने शिक्षक शब्द की विस्तार से व्याख्या की। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने गुरु-शिष्य की परंपरा की महत्ता को उजागर किया और समाज में शिक्षक की भूमिका पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में बीएड तृतीय सेमेस्टर की छात्रा किरण सान्दू, समाज कार्य विभाग के तृतीय सेमेस्टर की छात्र कुंजन शर्मा तथा बीएससी-बीएड छात्रा स्मृति कुमारी ने व्याख्यान के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किए, तो बीएससी पांचवें सेमेस्टर की छात्रा पूजा शर्मा, बीए तृतीय सेमेस्टर की छात्रा शहनाज बानो तथा बीए-बीएड तृतीय सेमेस्टर की छात्रा वृंदा दाधीच ने विभिन्न कविताओं के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के प्रारम्भ में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। अंत में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वितीय के प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने सभी का आभार ज्ञापित किया।

कार्यक्रम का संयोजन बीकॉम पांचवें सेमेस्टर की छात्रा नवनिधि दौलावत ने किया। कार्यक्रम में डॉ. अमिता जैन, डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़, डॉ. सरोज राय, डॉ. आभा सिंह, डॉ. लिपि जैन, डॉ. विकास शर्मा, डॉ. विनोद कस्वां, अभिषेक चारण, श्वेता खटेड़, अभिषेक शर्मा, प्रमोद ओला, अजयपाल सिंह भाटी, देशना चारण आदि के साथ विद्यार्थी भी ऑनलाइन जुड़े रहे।

सफलता के लिए जरूरी है समयबद्धता– प्रो. त्रिपाठी
बालदिवस पर श्रेष्ठ प्रस्तुति के लिए हेमपुष्पा व पूनम पुरस्कृत

संस्थान में भारत सरकार तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन में 13 नवम्बर को आयोजित किए जा रहे 'आजादी के अमृत महोत्सव' के कार्यक्रमों की श्रृंखला के तहत राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की दोनों इकाईयों के संयुक्त तत्त्वावधान में 'बाल दिवस कार्यक्रम' आयोजित किया गया। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक तथा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पं. जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व एवं योगदान पर विचार प्रस्तुत किए और कहा कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में बाल्यकाल में तनावमुक्त जीवन जीता है, यह उसके विकास की अवस्था होती है। हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है कि बाल्यावस्था में ही बच्चों को उसके अनुरूप अवसर मिले। इसके साथ ही उन्होंने छात्राओं को प्रेरित करते हुए कहा कि किसी भी काम को निर्धारित समय पर पूरा करने की प्रतिबद्धता रखने से ही सफलता के मार्ग पर आसानी से अग्रसर हो सकते हैं।

प्रारम्भ में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने संविधान निर्माण, राष्ट्रीय आंदोलन तथा राष्ट्र विकास में पंडित जवाहरलाल नेहरू के योगदान तथा बाल दिवस के आयोजन के

महत्व पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में संस्थान की छात्राओं में हेमपुष्पा चौधरी, पूनम राय, इशिता राजपुरोहित, पूजा इनाणिया, विशाखा, योगिता, नंदिनी जांगिड़ तथा अभिलाषा ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में अच्छी प्रस्तुति देने पर प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने हेमपुष्पा चौधरी तथा पूनम राय को संस्थान का प्रतीक चिह्न भेंट कर पुरस्कृत भी किया। कार्यक्रम में सहायक आचार्य अभिषेक चारण ने भी कविता के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। अंत में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने सभी का आभार ज्ञापित किया।

एन.एस.एस. डे मनाया

भारत सरकार तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार 24 सितम्बर को आयोजित हो रहे आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम के तहत संस्थान में राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में एनएसएसडे (राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस) मनाया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक तथा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि युवा शक्ति राष्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण आधार होती है और समाज सेवा के माध्यम से वह अपनी भूमिका का निर्वाह कर सकती है। इस अवसर पर स्वयंसेविका इरम छींपा, निकिता बोथरा, राधिका गहलोत, कल्पना सोनी तथा लिछमा ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम की शुरुआत राष्ट्रीय सेवा योजना गीत के माध्यम से की गई। राष्ट्रीय सेवा योजना की इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने अंत में आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संयोजन स्वयंसेविका नवनिधि दौलावत ने किया।

विश्व युवा कौशल दिवस पर आयोजित भाषण प्रतियोगिता में स्नेहा प्रथम रही

संस्थान में आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाईयों के संयुक्त तत्त्वाधान में 15 जुलाई को विश्व युवा कौशल दिवस पर ऑनलाइन भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में हुई इस प्रतियोगिता में अनेक छात्राओं ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में बीकॉम सेमेस्टर की छात्रा स्नेहा पारीक प्रथम रही। सोनम कंवर द्वितीय तथा नफीसा बानो ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम में प्रो. त्रिपाठी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि हमें नया कौशल विकसित करने के लिए हमेशा प्रयासरत रहना चाहिए। प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में सहायक आचार्य अभिषेक चारण तथा डॉ. विनोद कुमार सैनी रहे। प्रतियोगिता राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर तथा इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह के निर्देशन में आयोजित की गई।

राष्ट्रगान महोत्सव मनाया

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार संस्थान में मनाए जा रहे 'आजादी के अमृत महोत्सव' कार्यक्रम के तहत 9 अगस्त को संस्थान परिसर में राष्ट्रगान कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें सभी संकाय सदस्यों तथा छात्राओं ने सामूहिक संगान किया। कार्यक्रम में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी, शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. भाबाग्रही प्रधान, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, डॉ. आभा सिंह, डॉ. बलबीर सिंह, अभिषेक चारण, अभिषेक शर्मा, श्वेता खटेड़, डॉ. ललित कुमार गौड़, डॉ. विनोद कुमार सैनी, दीपक माथुर, घासी लाल शर्मा, देशना चारण, अजयपाल सिंह भाटी तथा संस्थान के विद्यार्थियों ने मिलकर राष्ट्रगान का सस्वर संगान किया।

बाल गंगाधर तिलक जयंती पर राष्ट्रीय कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान में आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत 23 जुलाई को बाल गंगाधर तिलक जयंती का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. बीआर दूगड़ के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम में राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर के मनोविज्ञान विभाग के निवर्तमान विभागाध्यक्ष प्रो. एवी सिंह मदनावत ने कहा कि बाल गंगाधर तिलक ने अपने 'स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है' नारे को सार्थक किया। बाल गंगाधर तिलक युवाओं के प्रणेता, लोकप्रिय नेता के साथ वे भारतीय संस्कृति के प्रबल समर्थक रहे।

सिकारपुर बुलंदशहर के श्यामलाल पीजी कॉलेज के प्राचार्य प्रो. अशोक शर्मा ने कहा कि बाल गंगाधर तिलक की प्रेरणा राष्ट्र की, शिक्षा की, संस्कृति की व देश की समस्या के समाधान करने में सहायक है। अंग्रेजों की शोषण पद्धति का उन्होंने घोर विरोध किया तथा स्वराज्य को छोटे-छोटे गांवों तक पहुंचाने का प्रयास किया। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बाल गंगाधर तिलक के जीवन परिचय एवं उल्लेखनीय कार्यों से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि बाल ने राष्ट्र सेवा, समाज सेवा व देश सेवा को विशेष महत्त्व देने के साथ शिक्षा को बढ़ावा देने पर बल दिया।

कार्यक्रम के संयोजक शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने प्रारम्भ में अतिथि परिचय दिया और अंत में आभार ज्ञापित किया।

फिट इंडिया कार्यक्रम

फिट इण्डिया कार्यक्रम के तहत निकाली जागरूकता रैली

संस्थान में भारत सरकार तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार आयोजित हो रहे 'फिट इण्डिया' कार्यक्रम के तहत 10 सितम्बर को एक जागरुकता रैली का आयोजन किया गया। रैली को शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। कार्यक्रम में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक तथा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी, कार्यक्रम के आयोजक डॉ. रविंद्रसिंह राठौड़, डॉ. अमिता जैन, डॉ. आभा सिंह, डॉ. विष्णु सिंह, डॉ. सरोज राय, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. बलबीर सिंह, अभिषेक चारण, श्वेता खटेड़, घासीलाल शर्मा, देशना चारण, हीरालाल, शिवा परिहार के अलावा संस्थान के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

फिट इण्डिया कार्यक्रम में गतिविधियों को बढ़ावा देने खेल समिति की बैठक

युवा एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार के निर्देशानुसार संस्थान में चल रहे 'फिट इण्डिया कार्यक्रम' की गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए खेल समिति के समन्वयक प्रो. बी.एल. जैन की अध्यक्षता में 24 अगस्त को एक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में फिट इंडिया कार्यक्रम के तहत संचालित किए जा रहे कार्यक्रमों पर चर्चा की गई तथा यह निर्णय लिया गया कि फिट इण्डिया कार्यक्रम की गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए ऑनलाइन अथवा ऑफलाइन कार्यक्रमों को व्यापक किया जाए। इस अभियान के अंतर्गत प्राप्त निर्देशों के अनुरूप गतिविधियों का आयोजन किया जाए और आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों का एक वार्षिक कैलेंडर बनाने की आवश्यकता बताई गई। बैठक में समिति के सदस्यों के रूप में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी, खेल सचिव डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़, राजनीति विज्ञान के सहायक आचार्य डॉ. बलबीर सिंह तथा संस्थान के खेल प्रशिक्षक अजयपाल सिंह भाटी उपस्थित रहे।

फिट इण्डिया फ्रीडम-रन कार्यक्रम में दौड़ आयोजित

भारत सरकार तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के द्वारा प्राप्त निर्देशानुसार संस्थान में आयोजित हो रहे आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम के तहत राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाईयों के तत्त्वावधान में 'फिट इण्डिया फ्रीडम-रन कार्यक्रम' का आयोजन 11 सितम्बर को किया गया।

इस दौड़ को दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक तथा इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु गठित समिति के सदस्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष तथा समिति के सदस्य प्रो. बी.एल. जैन, राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाईयों के प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर तथा डॉ. बलबीर सिंह के अलावा डॉ. अमिता जैन, डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़, डॉ. आभा सिंह, डॉ. विष्णु सिंह, डॉ. सरोज राय, श्री अभिषेक चारण, श्वेता खटेड़, घासीलाल शर्मा, देशना चारण, हीरालाल, शिवा परिहार के साथ संस्थान के विद्यार्थी भी उपस्थित रहे ।

एनसीसी छात्राओं को राईफल, फायरिंग पोजिशन, रेडियो सेट का प्रशिक्षण

संस्थान में चल रहे एनसीसी के 10 दिवसीय सीएटीसी कैंप के अंतिम दिन एनसीसी कैडेट्स को पॉइंट टू टू राइफल के बारे में बताया गया। एनसीसी के अधिकारी नायक सूबेदार विनोद कुमार ने कैडेट्स को पॉइंट टू टू राइफल्स के बारे में जानकारी देते हुए इस राइफल को लोड करने तथा मार करने की शक्ति और इसके बॉडी पार्ट्स के प्रकार के बारे में बताया तथा इस राइफल का वेट, शूटिंग रेंज फायरिंग पोजीशन और और दुश्मन पर एंड फायर करने के प्रकार के बारे में बताया। उन्होंने पायलटिंग करते हुए दुश्मन की जानकारी प्राप्त करने के तरीके तथा रेडियो सेट के बारे में सामान्य जानकारी दी। इस दौरान खेल प्रशिक्षक अजय पाल सिंह भाटी और केयर टेकर डॉ आभा सिंह मौजूद थे।

एनसीसी कैडेट्स ने प्रातःकाल परेड तथा पायललोटिंग की

तथा इसके बाद कैंडेट को सीनियर कैंडिडेट कृष्णा थोरी, कौशल्या और पुष्पा द्वारा ड्रिल की बेसिक जानकारी दी गई। कृष्णा द्वारा वेपन ट्रेनिंग के

बारे में भी सामान्य जानकारी वेपन की लंबाई, उसका वजन, रेंज कैलीबर और कारगर रेंज तथा कौशल्या द्वारा फील्ड क्राफ्ट की जानकारी दी गई, जिसमें चाल ओढ़ के प्रकार, दूरी-मापन और दिशाओं के संदर्भ में जानकारी दी गई।

कैंप के प्रारम्भ में प्रो. बीएल जैन ने अनुशासन की आवश्यकता व महत्त्व बताया। प्रो. एपी त्रिपाठी ने कैडेट्स को एनसीसी की जीवन में उपयोगिता के बारे में बताया। इस दौरान डॉ. आभा सिंह, खेल प्रशिक्षक अजय पाल सिंह भाटी, डॉ. प्रगति भटनागर और एनसीसी के बीओसी के कैंडिडेट उपस्थित थे।

तीन माह की कठिन ट्रेनिंग के बाद आयुषी बनी एनसीसी की लेफ्टिनेंट

एनसीसी ऑफिसर एकेडमी ग्वालियर में एनसीसी की 3राज गर्ल्स बटालियन जोधपुर की ओर से जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय की एनसीसी प्रभारी आयुषी शर्मा ने 3 माह की ट्रेनिंग प्राप्त करके एनसीसी में लेफ्टिनेंट की पदवी प्राप्त की है।

प्रशिक्षण से वापस लौटने पर 27 अक्टूबर को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने उनका सम्मान किया व उन्हें बधाई व शुभकामना देते हुए कहा कि संस्थान के कार्मिकों को निरन्तर विकास के लिए अग्रसर रहना चाहिए। इससे जहां उनकी उन्नति होती है, वहीं संस्थान का विकास भी संभव होता है। उन्होंने कहा संस्थान हमेशा अपने ऐसे सदस्यों को अपना भरपूर सहयोग प्रदान करता रहा है।

लेफ्टिनेंट आयुषी ने बताया कि उनकी तीन माह के कठिन प्रशिक्षण के दौरान उन्हें वेपन ट्रेनिंग, मेप रीडिंग, ऑब्स्ट्रेक्ट ट्रेनिंग, ड्रिल कम्पटिशन, कल्चरल कम्पटिशन आदि के बारे में दक्ष बनाया गया। उन्होंने बताया कि इस ट्रेनिंग में देशभर से कुल 101 प्रशिक्षणार्थी

सम्मिलित हुए, जिनमें राजस्थान से सिर्फ 3 जने थे और उनके लाडनूं व नागौर जिले से वे एकमात्र ही थीं।

स्वयंसेविकाओं ने श्रमदान करके की साफ-सफाई

संस्थान में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की दोनों इकाईयों के संयुक्त तत्त्वाधान में 11 अक्टूबर को स्वयंसेवी छात्राओं द्वारा भारत सरकार द्वारा चलाए गए स्वच्छ भारत मासिक अभियान के तहत स्वयंसेविकाओं ने परिसर में सफाई की। सर्वप्रथम राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने भारत सरकार द्वारा चलाए गए इस अभियान से स्वयंसेविकाओं को अवगत कराया और संस्थान में सफाई रखने हेतु प्रेरित किया। इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर के नेतृत्व में संस्थान परिसर में साफ सफाई

की गई। इसके साथ-साथ इन्होंने यह भी बताया कि हमें समाज में इस अभियान की जानकारी आमजन तक पहुंचाने के दायित्व का निर्वहन करना है और राष्ट्र सेवा में अपना योगदान देना है।

इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयंसेविकाओं ने रुचि पूर्वक भाग लेते हुए श्रमदान किया और सफाई का कार्य किया। इसमें हिस्सा लेने वाली स्वयंसेविकाओं सोनम, उषा, साक्षी, उर्मिला, अंजना, निशा, तरन्नुम, सुमन आदि अग्रणी थीं।

साम्प्रदायिक सद्भाव दिवस पर भाषण प्रतियोगिता में नवनिधि दौलावत रही प्रथम

संस्थान में सांप्रदायिक सद्भाव दिवस के उपलक्ष्य में 22 अगस्त को राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाईयों के संयुक्त तत्त्वाधान में ऑनलाइन भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक तथा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि सामाजिक सद्भाव एक व्यापक शब्द है और सामाजिक सद्भाव की भावना बनाए रखने के लिए स्वार्थ के स्थान पर त्याग तथा समर्पण की भावना होना आवश्यक है। उन्होंने व्यक्ति को जाति, धर्म, संप्रदाय और क्षेत्रीयता की भावना से ऊपर उठकर राष्ट्रीयता की भावना रखने की आवश्यकता बताई। भाषण प्रतियोगिता में बीकॉम पांचवे सेमेस्टर की छात्रा नवनिधि दोलावत ने प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा बीएससी बीएड पांचवें सेमेस्टर की छात्रा स्मृति कुमारी द्वितीय स्थान पर रही। निकिता एवं ईशा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।इस प्रतियोगिता में निर्णायक अभिषेक चारण तथा श्वेता खटेड़ रहे। कार्यक्रम के प्रारम्भ में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने स्वागत वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का संचालन इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ बलबीर सिंह ने किया ।

एनएसएस की छात्राओं ने किया पौधारोपण

संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्त्वावधान में छात्राओं एवं कार्मिकों ने मिलकर विश्वविद्यालय परिसर में पौधारोपण किया। इस अवसर पर कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने एनएसएस स्वयंसेविकाओं को धरती व पर्यावरण के लिये वृक्षों की उपयोगिता के बारे में बताया और कहा कि वृक्ष हमारे प्राणदायी भी होते हैं। वे जहां इस सृष्टि का सौंदर्य होते हैं, वहीं वे हमें प्राणवायु, फल आदि सामग्रियां देकर हमारा पोषण भी करते हैं। उन्होंने पेड़ लगाने की आवश्यकता भी बताई। इस अवसर पर आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, एनएसएस प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर, शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन, वित्ताधिकारी राकेश कुमार जैन, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डॉ. बलवीर सिंह चारण आदि के साथ स्वयंसेविकायें उपस्थित रहीं और परिसर में 21 छायादार व पुष्पवान पौधों का रोपण किया।